गुलेती दास

गुलेती दास

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

GULETEE DAS

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-936422-8-3
दाम: 251/- (भा.रु.)

तेसर संस्करण: 2020 (पहिल संस्करण: 2016)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

कनहा भँट्टा

समय रौदियाह भेने जिनगियो आ जिनगीक किरियो-कलाप रौदियाइते अछि, आ से खाली रौदिए-टा मे नइ बाढ़ियो-दाहीमे होइए। ओना, दुनूक बीच विपरीत सम्बन्ध अछि, अकास-पतालक अन्तर अछि। मुदा जिनगीक बीच आबि दुनू एक भऽ जाइए। माने ई जे जहिना गाछो-बिरीछ आ मालो-जाल, हाल बेहाल भेने दम खींचैयो लगैए आ तोड़बो करैए तहिना बाढ़ियो-दाहीमे होइए। ओना, कहैले तँ कहले जाएत जे एकटा 'पानिक अभावमे मरल' आ 'दोसर पानि पीबैत मरल।' मुदा से जे हौउ, जिनगी तँ निच्चाँ मुहेँ खसबे करैए।

जखन समैये रौदियाह भेल तखन जिनगीक किरिया-कलापसँ लऽ कऽ जीवन-यापन धरि रौदिएबे करत, मकमकेबे करत। अनो-पानि आ तीमनो-तरकारीमे मकमकी एबे करत। रौदी भेल खेतक उपज गेल! उपज गेल, वस्तुक अभाव भेल! आ वस्तुक अभाव भेने जीवन आ जिनगी गेल..!

ओना, जइ हिसाबे तीमन-तरकारीमे मकमकी आएल तइ हिसाबे अन्नमे नइ आएल। मुदा नहियेँ आएल सेहो केना कहल जाएत। हँ, ई जरूर भेल जे जैठाम तीमन-तरकारीक भावमे चारि बर, पाँच बरकेँ के कहए जे अठ-अठ-दस-दस बर बढ़ल, तैठाम अन्नक भावमे डेढ़िया-दोबर बढ़बे कएल अछि। जे भाँटा पाँच रुपैये किलो पनरह दिन पहिने छल, ओ रसे-रसे बढ़ैत तीस रुपैये किलो भऽ गेल आ जे टमाटर दस रुपैये किलो

छल ओ साठि रुपैये भऽ गेल। अन-पानिमे से नइ भेल, जे बीस रुपैये किलो छल ओ पचीस रुपैये भेल आ जे साठि रुपैये छल ओ सत्तैर रुपैये भेल। ओना, खाली खाइ-पीबैक नइ आनो-आनो वौसमे चढ़ा-ऊतरी भेबे कएल। रौदी भेने किछु चीज सस्तो भेल आ किछु कूदि कऽ अकासो छूलक।

तीमनो-तरकारी एके रंग नइ कुदल, जेना हरियर तरकारी कुदल तेना अल्लू नइ कुदल। मुदा ऐठाम तँ ईहो बात ऐछे जे अल्लूकेँ कोबी-भाँटा, टमाटर-साग जकाँ हरियर मानल जाए की नइ? ओ तँ ने फूल छी, ने पात आ ने ऊपरका फड़े छी। ओ तँ छी कन्द-मूल चाहे गाँठ। कन्द-मूल आकि गाँठ रहितो अल्लूमे एकटा बात तँ ऐछे जे आनसँ नमहर जिनगियो छै आ आन जकाँ गलनमो-सड़नमो नहियेँ अछि। ओना, सड़नमा ओहो अछि मुदा हरियरसँ कम अछि। आनक अपेक्षा बेसी खगतो पुरबैए। माने ई जे आन तरकारीक अपेक्षा अल्लू बेसी बकतियारो होइए। खएर जे होइए.., मुदा जखन हरियर गाछक हरियर फड़, पाँतेसँ बिछ-बिछ उखाड़ि तरकारी बनैए तखन तँ ओहो कनी-मनी गलिते अछि आ हरियर गाछक हरियर फड़ो भेबे कएल, तँए अल्लूक सौंसे जिनगीकेँ भलेँ हरियर तरकारी नइ मानल जाए, मुदा थोड़बो दिन तँ मानले जा सकैए।

ओना, अल्लूकेँ कन्द-मूल कहल जाए आकि गाँठ, ईहो तँ झमेल ऐछे। अल्हुआकेँ शकरकन्द कहल जाइए, जे एकटा गाछमे अल्लुए जकाँ घोंदा फड़ैए, भलेँ एकटा गोल आ एकटा नाम किए ने हुअए। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे जहिना अल्लूमे पातर खोंइचा होइए तहिना अल्हुओमे अछि। ओना, नामोक दृष्टिसँ दुनू भैयारीए बुझि पड़ैए। तेतबे किए, दुनूमे सँ केकरो टमाटर जकाँ आकि भाँटा जकाँ बीआ सेहो ने होइ छइ। जखन एकटा गुण आकि एकटा काज मिलने दोस्तियारे सम्भव अछि, तखन तँ अल्लू अल्हुआक भैयारीमे सेहो ऐछे। मुदा केशौरो तँ मिश्रीए-कन्द छी, जेकरा अल्लू जकाँ ने कन्दे रोपल जाइए आ ने उला-पका खाएले जाइए।

ओकर फूलमे छीमीदार फड़ होइ छइ, तइमे बीआ होइ छइ, ओही बीआसँ कन्द भेल..।

मुदा ऐठाम कन्दो-कन्दमे फन्दे-फन्द अछि। रहल जे अल्लूकेँ 'गाँठ' मानल जाए की नइ?

मुदा गाँठोक तँ लीला अपार ऐछे, किछु माटि तरक गाँठ भेल तँ किछु माटिक ऊपरको। जेना, गाँठ-कोबी माटिक ऊपर होइए, किछु गाँठ एहनो तँ ऐछे जे माटिक तरोमे एकेटा होइए जे जड़ि धने रहैए। मुदा गीरह-गाँठ कहैबला हरदी-आदीक तँ से नइ अछि। भलेँ अल्हुआ-अल्लू जकाँ फुट-फुट घोंदानुमा नहि, हत्थे जकाँ किए ने हौउ। मुदा जे हौउ, अल्लूक तँ मिठाइयो, तरकारियो, अँचारो बनैए आ अल्हुआ जकाँ उसैन सेहो खाएल जाइए। जे अन्नक काजक पुरती सेहो करिते अछि। खएर जे से...।

पिताजी दू भाँइ। दुनू भैयारीक बीच अरवन एगारह गोरेक परिवार अछि। नीक समय हौउ कि अधला, नमहर परिवारक खगता बेसी होइते अछि। गामक ओहन परिवारमे छी, जइमे नीक जकाँ माने सुपोषित भोजने ने भेटैए मुदा जैठाम भोजनोमे कोताही हएत तैठाम घर-दुआर आकि पढ़ाइ-लिखाइ वा ऐसँ ऊपरक जे खगता अछि ओ तँ कल्पनाश्रित छोड़ि पूर्तिये केते कऽ सकै छी। ओना, एगारह गोरेक परिवारमे खाइयो-पीबैक एक विचार नहियेँ अछि, मुदा समैयक धक्का तँ विचारकेँ तोड़ि-मरोरि एकबट करिते अछि। ओना, समय बदलने फेर विचार-भिन्नता जनमैक परिस्थिति बनियेँ जाइए। बनियेँ ने जाइए बनितो अछि आ नहियोँ बनैए।

भोजनकेँ जीवनक मुख्य खगता बुझि परिवारक सभ कियो एकठाम बैस विचार केलौं जे जिनगी-ले सुपोषण जरूरी अछि, तँए चारि साए ग्राम हरियर तरकारी जरूरी अछि। माने, जहिना अन्नक उचित मात्रा

जरूरी अछि तहिना हरियर साग-सब्जी सेहो जरूरी अछि। दस बर्खसँ कम उम्रक परिवारमे कियो ऐछे ने जइसँ घटी-बढ़ी हएत। ओना, एक विचार भेलो पछाइत करिया काका अपना जिद्दपर ठाढ़े रहि गेला। हुनकर जिद्द छैन जे भात हुअ कि रोटी अढ़ाइ साए ग्राम अल्लूक चोखा हेबे करए...।

करिया काकाकेँ अल्लूसँ कोन प्रेमक प्रगाढ़ता छैन से तँ ओ जानैथ, मुदा अन्नक पछाइत अल्लू छोड़ि दोसरकेँ ओते मोजर नइ दइ छथिन जेते अल्लूकेँ। फलो सोझहेमे छैन जे मोटैनी बेमारी पकैड़ नेने छैन, मुदा तैयो सूर्यवंशी जकाँ प्राण जाए मुदा विचार नइ जाए..।

ओना, परिवारमे करिया काकाकेँ छोड़ि दसो गोरे ऐ विचारकेँ राजी-खुशीसँ मानि अमल करै छी जे चारि साए ग्राम हरियर साग-सब्जी प्रतिदिन प्रति बेकती परिवारमे हेबक्के चाही, से ऐछो। जहिना कहल गेल अछि जे 'कनही गाइक भीने बथान' सेहो ऐछे। खाइक मामलामे करिया काका दसो गोरेसँ भिन्न छैथ। आ से घरेटा मे नहि, गामोमे निमाहिते छैथ। समाजमे भोज-काज भेने भोजनक खुशी लोककेँ होइते छइ, मुदा से करिया काकाकेँ नइ होइ छैन। किएक तँ भोज-काजमे अल्लूक चोखा नइ भेने केतौ खाइयो-ले नहियेँ जाइ छैथ। आ जँ कहियो केतौ जाइतो छैथ तँ अल्लूक चोखा दुआरे अजश दाइए दइ छथिन। ओना, समाजक भोज-काजमे जश-अजशक आनो-आन कारण अछि, मुदा करिया कक्काक अजशक कारण अल्लूए-चोखा रहैत अछि।

ओना, सामाजिको भोजमे आ परिवारोमे आन सब्जीक अपेक्षा अल्लूक महत बेसी ऐछे। तेकर कारणो अछि जे चोखा, तरूआ, भुजुआ, भुजिया, अचार सहित आनो विन्यास अल्लूक जेते बनैए तेते दोसरकेँ नहियेँ बनैए। भोज तँ ओहन भोजन छी जइमे बेसी-सँ-बेसी विन्यास बनैए। बनबो केना ने करत, भोज तँ आवश्यक भोजनसँ आगू बढ़ि विशेष भोजन छीहे, तैठाम जँ विशेष विन्यास नइ बनइ, तखन ओ विशेषे

केना भेल? आ जखन आनसँ बेसी विशेषता नइ रहत तखन ओ विशेषाधिकार प्राप्ते केना कऽ सकैए?

रौदियाह समय भेने अपन कोन चर्च जे गामेसँ हरियर तरकारी अलोपित भऽ गेल अछि। सबहक बाड़ी-झाड़ी ओहिना बिनु उपजाक मर्र-मर्र करैए। मुदा भोजन-ले तँ तरकारीक जरूरत ऐछे। जखन अपन चास-बासमे हरियर तरकारी नइ अछि तखन तँ हाटे-बजार दिस ने जाए पड़त।

ओना, गामक चौबगली आन सभ गाममे हाट अछि जे सपताहमे दू-दू दिन लगैए। बजार जकाँ भरि-दिना नहि, खाली बेरुका उखड़ाहा भरि मात्र लगैए। जे करीब-करीब चारि घन्टा रहैए। गमैया हाट छी तँए गामे-घरक हटवारो रहल। ओहीमे किछ किनवारो आ किछु बेचवारो रहल। तैसंग किछु एहनो कीनवार-बेचवार होइए जे बेचबो करैए आ कीनबो करैए, मुदा से कम रहैए। अधिक बेचवार ओहन रहैए जे अपन खेत-पथारसँ उपजल वौस हाटपर आबि बेचैए।

गामसँ बेसी दूर तँ नइ मुदा चौवगली गमैया-हाटसँ कनीए आगू झंझारपुर हाट अछि। बगलेमे बजारो छइ। ओना, गामक चौबगली-गमैया हाटसँ झंझारपुर-हाट नव अछि। माने आन हाटक अपेक्षा झंझारपुर हाट पछाइत लागब शुरू भेल, मुदा अनुकूलता पौने सभ हाटसँ बेसी जगजियार तँ ऐछे। अनुकूलतोक अनेक कारण अछि। जइमे प्रमुख अछि- प्रतिक्रिया स्वरूप हाट लागब। माने, झंझारपुर-हाट महरैल हाटक प्रतिक्रियामे लागब शुरू भेल। जे एक जातिक अधिकारक हाट छल। समाजमे दबंगता छेलैहे। हाटक वेपारियो आ खरीदवालोक संग ज्यादती भरपुर करै छल। संजोग भेल किछु वेपारियो आ खरीदवालोमे आक्रोश बढ़ल, सरकारी कार्यालयसँ हटल रहबे करए। माने, थाना-ब्लौक सँ दूर छेलै महरैलक-हाट, तँए जेहेन निगरानी सरकारक हेबा चाही से नहियेँ रहइ।

झंझारपुर बजारक लाट सेहो रहबे करइ, जइसँ बजरूआ वेपारी सेहो आक्रोशितक संग भेल। झंझारपुर-हाट लागब शुरू भेल। महरैल-हाट रसे-रसे घटए लगल आ अखन ओ गमैया हाट बनि ठाढ़ अछि, जइमे गामेक बेचवालो आ लेवालोमे समटा गेल अछि। ओना, महरैलक बरदहट्टा सेहो टुटल, मुदा अनुकूलता नइ रहने झंझारपुरोमे नइ लगि सकल। तेकर कारण भेल अछि जे इलाकामे गाए-बरदक उपटान जकाँ सेहो भइये गेल अछि।

झंझारपुर हाटकेँ तेजीसँ उठैक कारण सरकारीकरण सेहो भेल, आ लगमे बजारो आ सरकारियो कार्यालय रहने सभ रंगक लेवालो आ बेचवालोक समावेश भइये गेल अछि। तैसंग चौबगली दूर-दूर तक सड़क आ सवारीक सुविधा भेने अन्तर्राज्यीय वेपारी सेहो पहुँचए लगल, जइसँ हाटक चुहचुही दिनानुदिन बढ़िते गेल अछि।

दियादीमे तँ नइ मुदा भैयाक संगी भेने लाल भाइक परिवारसँ विशेष सम्बन्ध ऐछे। लाल भाय नोकरी करै छैथ। ओना, गामेसँ जाइ-अबै छैथ, मुदा कर्तव्यनिष्ट लोक रहने आठ घन्टा ड्यूटी पुरबैमे अपने भरि दिन लगि जाइ छैन। जइसँ हाट-बजारक काज पत्नीए, माने लाले भौजी करै छथिन।

अपने साइकिल रखने छी, जइसँ झंझारपुर जाइ छी, पाँचे किलोमीटरपर झंझारपुर-हाट अछि, टेम्पूक सुविधा गामसँ सेहो छइहे तँए स्त्रीगणो सभ हाट-बजार करिते छैथ।

मुख्य सड़कसँ उतैर जखने हाटक बाट धेलौं कि लाल भौजीकेँ टेम्पूपर सँ उतरैत देखलयैन। मनमे भेल जे टोकयैन, पारिवारिक सम्बन्ध ऐछे। मुदा फेर भेल जखन भौजियोक नजैर पड़बे केलैन आ किछ ने बजली तखन जँ अपन-अपन काज अपने सम्हारि चली, यएह ने भेल अपना भरोसे चलब। ओना अनभुआर जगहपर आकि गामसँ बाहर जँ

गौंआँ-घरूआ भेट जाए तँ मनसूबा बढ़बै करै छइ, हमरो बढ़ल। लाल भौजीकेँ बढ़लैन कि नइ बढ़लैन से तँ ओ जनती, मुदा अपना बुझि पड़ल जे मन चुहचुहा जरूर गेलैन।

थोड़ेक आगू बढ़ि परतीपर साइकिल लगबए बढ़लौं। हाटक मुहेँपर लाल भौजी जेना ठमैक गेली। जनु हमर बाट ताकए लगली कि की से तँ ओ जानैथ मुदा जेते कालमे साइकिल लगेलौं तेते काल तक ओ ठाढ़ रहली। ओना, पुराने साइकिल अछि, ताला बिनु लगेनौं काज चलैबला अछि, मुदा से नइ तलो ऐछे। ताला जखन लगबए लगलौं तखन एक नजैर तालापर देलिऐ आ दोसर लाल भौजीपर। तालापर नजैर पड़िते एकटा गौंआँ मोन पड़ल। केते लक्कर-झक्करसँ वेचाराकेँ महिना दिन पहिने बिआहमे साइकिल देने रहइ। आठम दिनका हाटमे एतै केदैन चोरा लेलकै! वेचारा घुमि कऽ गाम गेल, तखन आबि कऽ दरबज्जापर बैस गेल। कनी कालमे जखन एलौं तँ पुछलिऐ»

“किए बैसल छह?”

असथिरेसँ पुछने रहिऐ। ले-बलैया! ओ तँ कानए लगल! मने-मन सोची जे की भेलैए! परिवारक तँ ने कियो किछु कहलकैए? हुचकैत बाजल»

“झंझारपुर-हाट गेल छेलौं से साइकिले चोरा लेलक!”

मन असथिर भेल जे अपन परिवारक नइ अन्तुका बात छी। कहलिऐ»

“केना चोरेलकह। ताला नै लगेने छेलह?”

डाँड़मे बान्हल कुन्जी खोलि कऽ देखबैत बाजल» “देखै छिऐ, कुन्जी संगेमे अछि। खूब कटकटा कऽ लगा देने छेलिऐ।”

कहलिऐ» “बुझल नइ छेलह जे सभ हाटमे दस-बीसटा साइकिल झंझारपुरमे चोरि भइये जाइ छइ, तखन सचेत भऽ कऽ ने कोनो

चिन्हारक दोकान लग साइकिल लगैबतह। ऐठाम किए छह। गामपर जा।"

ओ बाजल» "अहाँ कनी संगे चलू, घरवालीकेँ बुझा-सुझा देबै, नइ तँ ओ घरेसँ भगा देत।"

बड़ आश्चर्य भेल जे महिने दिन पहिने बिआह भेलै, तखन एहेन शिकाइत पत्नीक किए करैए! जिज्ञासा बढ़ल। पुछलिऐ»

"अखन तँ महिनो दिन बिआह केना नइ भेलह हेन तखन एहेन बात किए बजै छह?"

जेना मनक हूबा जगलै। बाजल» "रुपैआकेँ लोक उनटा-पुनटा चिन्हैए मुदा लोककेँ लोक तँ लोलेक बोलसँ ने चिन्हैए।"

की करितौं, कोनो कोट-कचहरीक लफड़ा थोड़े छी जे बेसी समय लगैत। भेल तँ घरपर जा सभकेँ कहि देबै जे 'चोर-ले ताला की आ बेइमान-ले केबाला की।' सएह केलौं।

साइकिल लगा जखने घुमलौं की लाल भौजी सेहो डेग बढ़ेली। आगूए-आगू तरकारी दोकानपर पहुँचली। अपनो तँ वएह काज रहए। जा हम पहुँची ता भौजी दोकानक आगूमे बैस तरकारी सभपर नजैर दौड़बैत रहैथ। पहुँचते दोकानदारकेँ पुछलिऐ» "भँट्टा की दर?"

निच्चाँ-सँ-ऊपर लाल भौजी नजैर केलैन। दोकानदार बाजल»

"तीस रुपैये किलो।"

दामक हिसाबे दोकानक वस्तुक चुहचुही नइ बुझि पड़ल। ओना हाटेक चुहचुही रौदियाएल बुझाइत रहइ। एकटा नमरी जेबीमे रहए। घरपर तँ बुझि पड़ल रहए जे परिवारक हिसाबे दू दिनक तरकारी हएत, मुदा से भेल नइ। मने-मन हिसाब बैसेलौं तँ नब्बे रुपैआमे तीन किलो भँट्टा हएत, दस रुपैआमे चाहो-पान भइये जाएत। दू-चारि जँ संगमे नइ राखब तँ पुरान साइकिल अछि जँ केतौ पनचर हएत कि भाल्टुए फटि

जाएत, तखन तँ पएरे ने जाए पड़त..!

तीन किलो भँट्टा कीनि झोरामे लऽ लेलौं। नमरी देलिऐ, दस रुपैआ घुमा देलक।

जहिना स्टेशनमे ऐगला यात्रीकेँ टिकट होइते दोसर यात्री अपन टिकटक आदेश दइए तहिना दोकानपर पाइ सम्हारिते रही कि लाल भौजी कनहा भँट्टाक ढेरी देखबैत पुछलखिन»

“ओइ ढेरीक की दर रखने छी?”

असथिर चिते तरकारी दोकानदार बाजल»

“कोनो कि भाव छीपल अछि। नीकक अदहा कनहा होइए।”

लाल भौजी मने-मन हिसाब जोड़ली। हुनको नमरीए रहैन। पनरह रुपैयेक हिसाबसँ छह किलो, दोकानदाकेँ कहलखिन जोखू।

ओना लाल भौजीक नजैर जेतए रहल हौनु मुदा हमरा हँसी लगि गेल। हँसी ई लगल जे जखन भँट्टा सड़ले छै तखन अनेरे किए कीनि रहली अछि? मुदा लाल भौजीक मुँहमे मलिनता नइ रहैन। ओ भँट्टाकेँ देखि हिया कऽ हियाइस नेने छेली जे दस प्रतिशतसँ पच्चीस प्रतिशत नोकसान अछि, बाँकी पचहत्तैर प्रतिशतसँ ऊपरे नीक अछि। कहुना-कहुना तँ चारि किलोसँ ऊपरे हएत। पाँचो किलो भऽ सकैए। जखन रौदियाह समय अछि, महगी पकड़ने अछि। तैठाम जँ जान बँचा नइ चलब तँ दोख केकर हेतइ।

नब्बे रुपैआमे छह किलो भँट्टा लाल भौजी लेली। दस रुपैआ हुनको दोकानदार घुमा देलकैन। ओहो मने-मन टेम्पू-भाड़ा बैसा लेली। दुनू गोरे दोकानपर सँ विदा भेलौं। भाय, हाट-बजार छिऐ, सभसँ सभ पुछ-आछ करिते अछि। मनमे ‘कनहा भँट्टा’ घुरियाइते रहए। कहलयैन»

“भौजी, जुआनीक सनकी हाटो-बजारमे चढ़ले रहैए?”

ओना हम 'कनहा भँट्टा-दे' ठिकिया कऽ बाजल रही मुदा से लाल भौजीक नजैरपर नइ चढ़लैन। हुनका मनमे दोसरे-तेसरे बात नचलैन। बजली»

"से की?"

कहलयैन»

"पाइ कुट-कुट कटै छेलए जे सभटा सड़लाहा भँट्टा कीनि लेलौं?"

ओना हम भौजीए-क पक्षक बात बाजल रही मुदा भौजीक मनमे से नइ भेलैन। विपक्षेक बात बुझि पड़लैन। जखन कि प्रश्न तँ कनहा भँट्टा सम्बन्धित अछि। नीक-अधलाक बीच पक्ष-विपक्ष हएत। जे बात भौजीक मनमे नचलैन। नचिते मुस्कियेली, मुदा मुँह बन्ने रहलैन। मुस्की देखि अपन मन खसए लगल। खसए ई लगल जे हमर विचारकेँ भौजी कोन रूपेँ बुझली?

लाल भाय पंचायत सेवकक नोकरी करै छैथ। मैट्रिक पास छैथ। लाल भौजी पढ़ल-लिखल नइ छैथ, मुदा गृहिणीक सभ लूरिक बोध रहने परिवारमे कहियो कोनो काजक आकि विचारक टकराहट दुनू परानीक बीच नइ होइ छैन। लालो भाय गाममे रहितो, परिवारसँ मुक्ते छैथ। सोझ-मतिया चाइलिक लोक रहने जहिना मासक दरमाहा उठबै छैथ तहिना सभ रुपैआ नेने आबि दुनू परानी परिवारक महिनो दिनक हिसाब बैसा खले-खल रुपैआकेँ बाँटि काज करै छैथ।

खसैत मने बजलौं»

"भौजी, हमर बात अहाँ कोन रूपेँ लेलिऐ?"

ओना भौजीक मन खुशीमे दहलाइत रहैन। होइतो अहिना छै जे एके प्रश्नक उत्तर मन-मनक विचारक अनुकूल शब्दमे होइते छइ। शब्दो तँ शब्द छी, एके शब्द केतौ मारक होइए आ केतौ तारक सेहो होइए। ओना बजैक क्रममे भौजी बजली» "कोनो अहाँ अधला बात कहलौं जे अधला

लगैत?”

अपनो गर भेटल। कहलयैन»

“तरवन चुपे-चाप किए रहि गेलौं, हँ-हूँ किछ किए ने कहलौं?”

हमर बात भौजीकेँ अधला नइ लगलैन। मुस्कियाइत बजली»

“अहाँ कौलेजमे पढ़ै छी की खेल करै छी?”

मनमे भेल जे एना किए भौजी बजली! ऐमे कोन पढ़ै आ खेलैक बात अछि? पुछलयैन»

“ऐमे की खेल अछि?”

मुस्की भरैत भौजी बजली»

“यएह दुनियाँक खेल छी। दुनियाँमे ने किछ अधला अछि आ ने नीक। देखै-करैक नजैर आ लूरि चाही।”

लाल भौजीक बात नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं। मुदा छी तँ झंझारपुर-हाटक रस्तापर ठाढ़। तहूमे रौदियाह समैयक रौद सेहो अछि। मुँह फोरि बजलौं»

“भौजी अहाँक चिक्कारी हम नइ बुझै छी। मुँह खोलि बाजू।”

बजली»

“कौलेजमे पढ़ै छी आ एतबो ने बुझै छिऐ जे सभ किछुमे परिस्थिति-बस पील फड़ैए। चीजक कोन बात जे लोकक देहोमे फड़ै छइ। मुदा जेकरो देहमे फड़ै छै ओहो पीलुआ छाँटि जीबए चाहैए की नइ?”

बिच्चेमे बजा गेल»

“हँ से तँ चाहिते अछि आ जीबो करैए!”

भौजी बजली» “जेना वौसमे महगी आबि गेल अछि तेना नोकरीबलाकेँ दरमाहा थोड़े बढ़ि जाएत। मुदा परिवारक खर्च तँ हेबे

करत।”

कहलयैन»

“हँ से तँ हेबे करत।”

बजली»

“तखन तँ हमरा सन लोककेँ दुइए-टा उपाय ने अछि जे चाहे दू-कौर कम खाउ चाहे दब समानक उपयोग करू।”

कहलयैन»

“हँ से तँ करै पड़त।”

भौजी बजली»

“नबे रुपैआमे अहाँकेँ तीन किलो भँट्टा भेल आ हमरा कहुना चारि किलोसँ ऊपरे, सड़लाहा छाँटि कऽ, हएत। अहीं कहू जे की नीक भेल?”

भौजीक बात सुनि अवाक भऽ गेलौं।



शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016

जिगेसा

गोटे साल जहिना धनक धनमण्डल होइए, माने धानो-गहुमक उपज नीक भेल, तीमनो-तरकारीक नीक आ आमो-जामुन खूब फड़ल जइसँ सालो भरि अगहने-अगहनक लरती-चरती बुझि पड़ैए, तहिना ऐ बेर बिआह-दानक सेहो भेल। माघेमे जे सरस्वती पूजाक परातसँ लगनक दिन शुरू भेल ओ फागुन पकड़ैत चैत छोड़ैत बैशाख पकड़ैत जेठ होइत अखाढ़ोमे धुमसाही दिन-राति चलिते रहल, जेना बरहमसिया लगनक दिन भऽ गेल। माने ई जे मौसमक हिसाबसँ जाड़ो-गरमियो आ बरसातो पकैड़ लेलक। बरहमसिया लगन भेने बिआहो-दान तेना जोर पकड़लक जे सबहक मनकेँ बेटे-बेटीक बिआह घेर लेलक। जेहने मन रहत तेहने ने काजो पकैड़ करब..? सएह भेल।

लगनक जोर एहेन भेल जे गामे-गाम बिआहे-बिआह पसैर गेल। पसरल ई जे जँ कोनो समाजमे दसटा बिआह होइए तँ ओइमे परिवारक समांगसँ लऽ कऽ दियाद-वाद, टोल-पड़ोस, हित-अपेछित आ कुटुम-परिवारक लेनी-देनीसँ लऽ कऽ करनी-धरनी धरि लगिए जाइए। ओना, किछु गोरेक मनमे ईहो शंका उठैत जे भरिसक आब बिआह-दान हेबे ने करत तँए जे जेतए अछि ओकरा अही लगनमे सम्हारि लिअ चाहैए। केकरो-केकरो मनमे ईहो शंका होइत जे भरिसक कनीए ओरा जाएत..! तहिना, कनियाँ पक्षकेँ होइत जे भरिसक बरे सठि जाएत, से नइ तँ अही साल सम्हारि ली जइसँ आगू बिआहक झमेले समाप्त भऽ जाएत।

माघक शुरूएसँ जे बजारक आ बाजा-गाजाक संग बरियाती-पुरनिहारक चलती आएल से सालो भरि लधले रहि गेल। जहिना बजार खूब चढ़ल तहिना बजो-गाजाबला आ बरियातियो पुरनिहारक चढ़बे कएल। चढबो केना ने करैत, नव जुग एने देश-दुनियाँक लोक गामे-गाम पसरल ऐछे। सभ रंगक- बोली, सभ रंगक भोजन आ सभ रंगक वस्त्रो पकैड़िए लेलक।

परसू जीतू काका बेटी बिआहक बरियाती विदा कऽ निचेन भेला। ओना हमहूँ ओही बिआहक प्रक्रियामे पनरह दिनसँ व्यस्त रहलौं। चारिम दिनक भरि रौतुका आ परसू-दिनका दौड़-बरहा तेते देहकेँ थका कऽ दुखा देलक जे परसू साँझमे जे ओछाइन धेलौं से खाइए-पीबैटा-ले उठलौं, बाँकी ओछाइने धेने रहलौं...।

मुदा एकाएक अखने मनमे भेल, जखन हम जीतू कक्काक सहयोगी छेलिऐन तखन जब एते थकान भेल तँ जीतू काका आ फुलटुसी काकीकेँ केते भेल हेतैन! तँए भेल जिगेसा करब उचित अछि। एहेन तँ नइ जे परिवारमे केकरो डाँड़ टुटल रहै आ केकरो फोंसरियो घाउए होइ, आ ओ डाँड़ टुटलाहाक आगू ई बहाना बनाएत जे हमरो तँ रोगे धेने अछि, तखन तँ जेहने डाँड़टुटु भेल तेहने फोंसरिहा? तब तँ अपन-अपन ताक-हेर अपने-अपने करू..! मुदा, एकरा कहाँ धरि उचित ठहरौल जा सकैए? उठि कऽ विदा भेलौं जीतू कक्काक जिगेसा करए...।

जहिना नहेला पछाइत शिव-भक्त 'जय शिव जय शिव' करैत पोखरिक घाटसँ शिव मन्दिर तक पहुँच अपन नचारी-विचारी करैए तहिना दरबज्जासँ निकैलते मनमे उठल»

"हाय रे दुनियाँ आ हाय रे समाज! सात कट्ठा जमीन छअ लाखमे बेच जीतू काका कन्यादान केलैन अछि!"

लगले मन घुसैक कऽ आगू बढ़ि गेल। आगू ई बढ़ल जे एक तँ

शरीरक व्याधिसँ बेथित हेता जीतू काका, तैपर धनक बेथा सेहो हेबे करतैन!

दरबज्जेपर जीतूओ काका आ फुलटुसियो काकी चाह पीबैत गप-सप्प करैत रहैथ। लगमे पहुँचलौं। देखिते फुलटुसी काकी बजली»

“केटलीमे अहाँ-जोकर चाह ऐछे, छानि कऽ नेने अबै छी।”

कहि हाँइ-हाँइ फुलटुसी काकी अपन गिलासक चाह पीलैन। चाह पीब उठि चाह आनए आँगन गेली। जीतू कक्काक लगमे बैस हियासए लगलौं जे कक्काक मन केहेन छैन? मुदा चेहराक चुहचुहीसँ मिसियो भरि रोगक रेख नइ बुझि पड़ि रहल अछि! बजलौं»

“काका, कन्या-दानसँ ते निचेन भऽ गेलौं?”

ओना, कन्या-दानसँ निचेन लोक साल भरिक पछाइत होइए, किएक तँ सालो भरि पाबैनियेँ-पाबैन सेहो आ बिआहक प्रक्रियाक संग समैया भाड़ो-दौड़ दौड़ैबते रहैए, मुदा एहनो तँ ऐछे जे बर-कन्याक बीच सिनूरदान भेला पछाइत जँ कोनो विशेष घटना घटि गेल, तखन सालो भरिक भाड़क दौड़ सेहो अँटैक कऽ मरि जाइए। मुदा वैवाहिक बन्धन बरकरार रहैए। ओना, जीतू काकाकेँ काल्हि भतखइ-भाड़ सेहो पठबैक छैन, जइमे चाउर-दालिक संग आरो-आरो भोजन-विन्यासक वस्तु पठबैक तँ छैन्हे।

चुल्हि लग पहुँचैसँ पहिनहि फुलटुसी काकीक मनमे उठि गेलैन जे चाहक कोन धड़फड़ी अछि, फेर कनी चुल्हिपर चढ़ा गरमा लेब। एतबे ने जे चाह-पत्तीक संग रहने चाहमे टेनीन पनपए लगैए, ओकरा छानि कऽ कात कऽ देबै आ केटली अखाइर कऽ ठण्ढे चाह रखि देब, पछाइत आगिपर चढ़ा धीपा लेब। चोट्टे अदहे रस्तासँ घुमि फुलटुसी काकी आबि बजली»

“बौआ, बहुतरबा मिठाइ सभ उगैड़ गेल अछि। चाह पछाइत

पीब, पहिने चारिटा मिठाइ खा लेब?”

जइ मने घरपर सँ विदा भेल रही जे जे काज पछुआएल हेतैन, ओइ पुरबैमे दुनू परानी काका चिन्तित हेता, से ऐठाम तँ खुशीसँ मिठाइ खुअबैक विचार काकी कऽ रहली अछि! केना शुभ समय अशुभ बात बजितौं, तँए मनकेँ सुभाषित करैत बजलौं»

“काकी, चाहे कि मिठाइये केतौ पड़ाएल जाइए जे एना अहाँ अपसियाँत छी!”

मुदा काकियोक मन जेना फरहरे रहैन तहिना बजली»

“बौआ, काजक बढ़ोतरी भेने जे काजक उमकी चढ़ल से चढ़ले अछि। तँए अपसियाँत कहाँ छी, अपसियाँत नै छी।”

हमरा दुनू गोरेक कठ विवाद जीतू काकाकेँ नीक नइ लगलैन। जनु मनमे कोनो एहेन नव जिज्ञासा, नव विचार रूपमे अंकुर रहल छेलैन। खिसिया कऽ तँ नहि, मुदा जोरसँ काकीकेँ कहलखिन»

“जे मन फुरैए से करू। एना घूर-बहूर किए करै छी!”

ओना, तामस उठला पछाइत सेहो लोक जोर-जोरसँ बजैए आ बिनु तामसक तमस उठने सेहो जोरसँ बजाइते छइ। जेकरा खिसिया कऽ तमसाएब बुझै छी, ओहो अधला नइ भेल, खिस्सा पिहानी बना मनक कलिमाकेँ सेहो घुअल जाइए मुदा बोलीक उग्रता ओकर रूपकेँ प्रभावित करै छइ। फुलटुसी काकीक मनमे जे खुशीक हिलकोर उठैत रहैन तेकर कारण रहैन जे बिआहक पछाइत खेबा-पीबाक वस्तु-जात तेते उगैड़ गेल छैन जे मास दिन सिलौटो-लोढ़ी नइ पकड़ए पड़तैन, तैपर काजक रमकी सेहो चढ़ले छैन।

जीतू कक्काक बात सुनि काकी ने चाह आनए आगू बढ़ली आ ने मिठाइ आनए, जेना मने शान्त भऽ गेलैन। ओहो तीन-कोनियाँ जकाँ जगह पकैड़ बैस गेली।

चाह पीब पान खा जीतू काका बजला» “बौआ, तोरा ते ने शरीरमे कोनो गड़बड़ भेलह, खटनीसँ?”

बिनु मुँह खोलने मुड़ी डोलबैत इशारा केलिऐन» “नइ।”

शान्त वातावरणमे इशारोसँ बहुत बात होइ छइ, जइसँ बोल प्रदूषनक सम्भावना सेहो नहियेँ रहै छइ। बोल प्रदूषन भेल- ‘रक्का-टोकी।’ मनमे उठैत रहए जे काका अपने पारखी लोक छैथिये, की नीक आ की अधला काजक बीच भेल, ओ तँ अपनेमे ने विचारि लेब।

ओना तीनियेँ गोरे- माने जीतू काका, फुलटुसी काकी आ हम रही मुदा तीन गोरे रही कि तेरह गोरे, गप-सप्प करै काल धारक प्रवाह जकाँ विचारोक प्रवाह तँ होइते अछि, तैठाम जँ विचारक प्रवाह बाम-बूच हएत तखन तँ बात-चीतमे रक्का-टोकी बढ़त! तँए तीनू गोरेक विचारक प्रवाह एक सिरा वा एक भट्ठा हएब जरूरी अछि। तहूमे काकीकेँ काका तेना चोहैट लेलखिन जे मन चोटाइए गेल हेतैन। तँए एक रस बना गप-सप्प करब जरूरी बुझि दुनू गोरेक बीच-बँचावक सीमा दैत बजलौं»

“काकी, चाह-ताह अखन छोड़ू, खाली एक गिलास पानि पीआ दिअ आ पान खुआ दिअ।”

मुहसँ निकैलते जेना काकोक मनमे आ काकियोक मनमे हरिअरी उठलैन। मुदा काकीक मनमे अखनो काजक रमकी रमिते रहैन। बजली»

“बौआ, चारि-पाँचटा बोतल ठंढाक उगरल अछि। वएह नेने अबै छी।”

जहिना ओंघीक आगमन होइते आँखियो झल-फलाए लगैए आ हाफियो हुअ लगैए तहिना कक्काक मनमे सेहो विचारक उठैत रहैन। तैयो मुहकेँ तँ दबने रहला मुदा नजैर चढ़ने आँखिक रूप बदलए लगलैन। गुण रहल जे किछु बजैसँ पहिनहि काकी लोटामे पानियोँ, गिलासो आ ठंढाक एकटा बोतलो नेने आबि बजली» “जे मन हुअए से करू।”

एक गिलास पानि पीब बजलौं» "काका, पान अपने लगा लेब।"

अपन बनौल भोजनो-चाहो आ पानो नीक लगैक कारण होइए जे जइ वस्तुसँ जेते सिनेह रहल ओइ वस्तुकेँ ओइ रूपमे प्रयोग करब। भाय, मिरचाइ नइ खाइ छी तँ तीमनमे नइ देबइ। कड़क-चाह पीबै छी तँ चाहपत्ती बेसी देबइ। जँ तीतगर पान नीक लगैए तँ खएर बेसी देबइ आ जँ मिठगर खाइक इच्छा रहल तँ खएर-चुनक मिलानीमे चुन कनी बेसिया देबइ।

ओना जीतू काका सेहो गप-सप्प करैक क्रममे रहैथ आ अपनो तँ ओही जिज्ञासामे आएले छी, कहलयैन»

"काका, अपना सभ सन परिवारमे बेटीक बिआह भारी पड़ि रहल अछि!"

ओना, काका मुड़ी डोला स्वीकारि लेलैन मुदा मुहसँ किछु ने बजला। नइ बजैक अनेको कारण मनमे नचैत हेतैन। मुदा, जहिना छालही आकि गाव-मक्खनकेँ माटिक वरतनमे रेहीसँ रहि वा मोहला पछाइत जखन ओ पानिपर अलगए लगैए, जइसँ साफ देखैमे आबए लगै छै जे घी बनै-जोकर भऽ गेल, तहिना जीतू कक्काक मन जखन फरिछाइत साफ भेलैन, तखन मुस्कियाए लगला। मुस्कियाइत नजैर-मे-नजैर मिला बजला»

"बौआ, बजलह तँ बड़बेस बात, मुदा ऐ पाछू बहुत रास नीक-

बेजाए कारणो अछि, तँए धाँइ-दे हँ-नै बाजि देब औगताएल विचार भऽ जाएत।"

ओना, सभ दिनसँ जीतू काकाकेँ सभ तरहेँ श्रेष्ठ बुझैत आबि रहल छी मुदा अखन तँ सद्य: कन्यादान सन यज्ञ निर्विघ्न निवारण केलैन अछि। तँए किछु विशेष अनुभव तँ हेबे करतैन। होइते अहिना छै जे जखन कोनो रोगी डॉक्टर ऐठाम पहुँचल आ क्षणे-क्षण पानि मांगए लगल तखने

डॉक्टर परेख लइ छैथ जे तृषित पानिक रोग अछि नइ कि तिरपित पानिक रोग।

जीतू काकाकेँ सभ तरहेँ श्रेष्ठ बुझैक सेहो कारण अछि। ओना, एको काज आकि विचारमे लोक श्रेष्ठ होइ छैथ, जे भेल कोनो काजमे श्रेष्ठता प्राप्त करब। मुदा ऐसँ आगू अछि एक-सँ-अधिक काजमे श्रेष्ठता प्राप्त करब, आ ओहूसँ आगू अछि जिनगीक श्रेष्ठता प्राप्त करब। तइमे जीतू काका श्रेष्ठ जिनगी बना जीब रहला अछि।

बजलौं»

“काका, ओना जेते ऐ बिआहमे बरदेलौं तेते अपन काज पछुआइए गेल, मुदा अपनासँ आगू समाजक काज बुझै छी, तँए ओइले कोनो मलिनता नइ अछि। पनरह दिनक कएल काज अछि तँए ओ तँ आब समापने दिस ने उतरत।”

जेना हमर बात जीतू काकाकेँ नीक लगलैन। बजला»

“तत्काल कौल्हुका भाड़ पठाएब अछि। ओना बिआहेक भाँजक काजमे एकरो भाँजपर चढ़ा नेने छी, तँए कोनो चिन्ता मनमे नहियेँ अछि। ओना, ऐ भाड़क आब कोनो महत थोड़े रहल।”

कहि मुँह बिजका लेलैन। जँ कक्काक विचार अपनो बुझैत रहितौं तरवन तँ कोनो प्रश्ने ने मनमे जगैत, मुदा से तँ भेल नइ। कक्काक मुँह किए बिजकलैन से मनकेँ खोलि देलक। बजलौं»

“से की, काका?”

जीतू कक्काक मनमे रहैन जे कन्यादानक शुरूसँ अन्त धरिक विचार करी, मुदा बिच्चेमे दोसर प्रश्न उठि गेल। कक्काक मनमे ईहो उठलैन जे जखन कन्यादानक बीच कोनो विघ्न-बाधा उपस्थित नइ भेल, तखन तँ स्पष्ट अछि जे समीक्षा-जोकर कोनो जगहे ने रहि गेल, मुदा तैयो एते तँ ऐछे जे एक-कड़ीमे ओकरा जोड़ि माला-रूपमे एक झलक देखि ली...।

विचारकेँ असथिर करैत जीतू काका बजला»

“बौआ, ओना पहिने बिआह-दुरागमन दू बेर होइ छल, माने दू लगनमे होइ छल। आ ई भाड़ छी दुरागमनक पछातिक, मुदा आब तँ दुनू एके बेर हुअ लगल अछि, तँए..?”

बिच्चेमे बजा गेल»

“से की?”

काका बजला» “ई भाड़ जे छी, दुरागमनक पछातिक पहिल भाड़, ओ छी कन्याक भोज्य-विन्यासक लूरिक परीक्षा। मुदा से आब थोड़े होइए। अनेको एहेन-एहेन कारण सभ बीचमे उपस्थित भऽ गेल अछि जे परीक्षाक परिस्थिये बिगाड़ि देलक अछि।”

पुछलयैन»

“से की?”

काका बजला»

“ई परीक्षा परिवारक बीचक छी। माने ई जे सासुरमे पहिल दिन कनियाँ भोजन बनौती से परीक्षा परिवार-जन खा कऽ बुझता। मुदा आब तँ जहिना बिआहक बरियातीक ठेकान नइ अछि, तहिना ईहो बेठेकान भऽ गेल अछि। मानि लाए जे पचास गोरेकेँ भोज खाइक न्योँत दऽ देलिऐ, ओतेक भोजन बनाएब कनियासँ सम्भव नइ अछि। मुदा वएह कनियाँ जइ परिवार भरिक भोजन बनौती, ओही काजे ने एबो केली अछि। कहब जे सामाजिक भोजमे सभ तरहक लोकक समावेश भेने बेसी नीक हएत, मुदा काजोक तँ सीमा अछि। एक आदमी केते कए सकैए...।”

धुर-झार काकाकेँ बजैत देखि अपनो मन बजैले लुसफुसाइत रहए मुदा जँ दुनू गोरे बजबे करब तँ सुनिनिहार के हएत। तँए मुँह दाबि कऽ रखने रही। ओना जहिना कोनो धारमे बाढ़िक पानिक बेसी आगमन

होइते धार फुलाइयो लगैए आ प्रवाहो तेज भऽ जाइ छइ, तहिना कक्काक रूप देखि बुझि पड़ैत रहए। मुदा जहिना कोनो टटका घटना बिनु टाट लगने छिड़िया कऽ नाचि जाइए जइसँ सभ बात सबहक बीच आबि गेने बेसी शुद्ध रहैए, मुदा बसिएला पछाइत ओहूमे केते टाट-फड़क लगि जाइए, तहिना अखन कन्यादान सन यज्ञ सम्पन्न भेल अछि, जेकरा बुझब-जानब जरूरी अछि जँ आने-आन गप-सप्पमे समय ससैर जाए आ मुख्य बात छुटि जाए, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। तँए विचारकेँ मोड़ैत, बिच्चेमे बजलौं»

"काका, बड़ीटा दुनियाँ अछि आ बहुत लोको अछि, ओकरे दिस जँ देखि-देखि मुँह तकैत रहब तखन अपना सिरक जे काज अछि से केना हएत?"

हमर बात सुनि काका गम्भीर भेला। गम्भीर होइत मुड़ी डोलबैत स्वीकारि लेलैन मुदा मुँह बने रहलैन। तैबीच काकी टपैक गेली»

"बिआहक पछाइत पहिल सालक सौनमे भरि अन्हरिया परब फूल लोढ़ै छेलौं, से वीध आब थोड़े हएत। नैहरक वीध छी से सासुरमे केना हएत?"

ओना, जीतू काकाकेँ काकीक विचार सोहनगर लगलैन मुदा मुस्की भरैत मुँह बने रखला। बजलौं»

"काका, तेहेन दुरकाल समय आबि गेल अछि जे अपना सभ सन लोककेँ जीब कठिन भऽ गेल अछि!"

हमर बात सुनि जीतू कक्काक नजैरक पानि जेना जगलैन। जगिते नजैर चढ़ए लगलैन। आँखि उठा हमरा दिस तकलैन तँ बुझि पड़ल जे जे नचारीक बात कक्काक सोझ रखलौं ओ जेना हुनका धड़ि लेलकैन! किएक तँ जहिना साँप धेला पछाइत बिखक असैरसँ नजैरक रूप बदलए लगै छै तहिना जीतू कक्काक नजैर बदलए लगलैन। बजला» "बौआ, जे दुनियाँ

अछि आ ओकर जेहेन परिवेश छै ओहीमे ने अपनो सबहक परवरिस हएत, तेकरा जँ दुतकारि दुरकाल कहि हारि मानि लेब तँ यएह ने भेल कायरता?”

कक्काक बात सुनि अपनो मनमे विचार-मल्ल जगल। जगिते भेल जे औझुका मनुक्ख ने हम भेलौं। जँ अपनाकेँ हजार बर्ख पैछला आकि हजार बर्ख ऐगला बुझब तँ वएह ने भेल बचपना।

..जनम-सँ-मरण धरिक जे जिनगीक यात्रा अछि ओ तँ आइयेक समयमे ने चलैत बितबैक अछि। मुदा जीतू कक्काक संग रहने एते तँ भइये ने गेल अछि जे ओहो हमर जीवन-मरण देखि रहला अछि। मुदा, प्रश्न तँ ईहो ने अछि जे जीतू काका अपना संग रहितो कायर जकाँ बुझि रहला अछि..!

अपनाकेँ सम्हारैत बजलौं»

“जीता-जिनगीकेँ जँ चीता-जिनगी बना जीबे करब तँ ओ थोड़े जिनगी भेल?”

हमर बात सुनिते जीतू कक्काक मन जेना खनखनेलैन! बजला»

“बौआ, ने परिवार छोड़ि पड़ाइक अछि आ ने दुनियाँ छोड़ि आ ने जिनगी छोड़ि केतौ पड़ाइक अछि। असल अछि जिनगीकेँ पकैड़ चलब।”

जीतू कक्काक बात नीक नहाँति नइ बुझि पेलौं। मनमे बुझि पड़ल जे जेना अधखिज्जूए बुझलौं। मुदा अधखिज्जू धानक चाउरकेँ दोहरा कऽ ढेकीमे कुटि-छाँटि जहिना छाँटल चाउर बनौल जाइ छै तहिना बिनु बुझल बातकेँ छँटियबैत बजलौं»

“काका, हमरा अहाँक परिवारमे अन्तरे की अछि। जेहने मझोलका परिवारमे गिनती अहाँ-परिवारक होइए तेहने हमरो-परिवारक अछि। तँए एहेन-एहेन यज्ञ काजक भार तँ पड़बे करत किने।”

जीतू काकाकेँ हमर बात नीक लगलैन। जहिना केकरो चाहो, पानो, सिगरेटो आ नोइसो लैक अभ्यास रहल, आ करवन कोन अम्मलक प्रयोगक प्रयोजन मनकेँ अछि ओ तँ अपने-अपने मनमे होइए, मुदा एहनो तँ होइते अछि जे अन्ना-गाहिंस झटहा जकाँ फेकलासँ आनो काज सुतैर जाइए, तहिना भेल। भेल ई जे जीतू कक्काक मनमे रहैन जे कन्यादान परिवारक काज छी, ओ तँ परिवारे-जनकेँ करैक भार अछि, ओना कहनिहार, सुननिहार आ केनिहारो तँ समाजमे ऐछे, मुदा ओ तँ केना सुति रहल अछि, आकि सुता गेल छइ, आकि सुता देल गेल छै ओ तँ सभ समाजक मुहेँ-कानसँ बुझल-जानल जा सकैए।

अपन शुभ काजक अनुकरण जँ दोसरो-तेसरो परिवार करत तँ ओकरो शुभे-शुभ हेबाक सम्भावना रहै छै मुदा बदलैत सामाजिक परिवेशमे एकरो निश्चितता नइ रहि गेल अछि। तँए अपन कएल शुभ कर्मक महत घटि गेल सेहो तँ नहियेँ अछि...।

जीतू काका बजला»

“बौआ, परिवारक काज समयानुसार समैपर सम्पन्न होइत चलए, वएह भेल परिवारक शुभ गति-विधि।”

जीतू काकाकेँ आगूक बोल मुहेँमे रहैन कि बिच्चेमे बजा गेल»

“एकरा के काटत?”

ओना बजलौं अनठेकानियेँ मुदा जीतू काकाकेँ अपन विचार अकाट बुझि पड़लैन, जइसँ मनक मणि मुनि रूपमे फुटलैन»

“बौआ, बेटीक बिआह भेल, जइमे बहुत एहेन विधि-बेवहार भेल जेकर या तँ प्रयोजने ने छल, वा नव सिरासँ चढ़ि गेल। मुदा कन्यादानो करब तँ अनिवार्य, जे काजक मूल बिन्दु भेल। हँ! तखन, औझुका परिवेशमे अपन-काजक अँटावेश केना हएत, ई तँ अपने ने बुझए पड़त?”

कहलयैन» “हँ।”

काका बजला»

“छह लाख रुपैआ कन्यादानमे खर्च भेल, खेत बेच कऽ केलौं। अदहासँ बेसी रुपैआ धुर-खेल भऽ गेल। मुदा उपायो तँ दोसर नहियेँ छल। नीक-अधला बजनिहार समाजमे ढेरियाएल अछि, मुदा नीक-अधलाक विचार करैत समाजकेँ आगू दिस लऽ चलब, एहेन विचारक लोक केते अछि?”

मनमे बेर-बेर उठए जे जे विचार करए चाहै छी ओ विचार भइये ने रहल अछि आ अनेरे समाजक बात दौड़-दौड़ कऽ बीचमे आबि खसि पड़ैए..!

सम्हारि कऽ बजलौं»

“काका, ऐ बेरक समय तँ लगनक हिसाबे कहियौ आकि बिआह-दानक हिसाबे, सोल्हन्नी धुर-खेले भऽ गेल! जेते नेंगरा-लुल्हा, कन्हा-बौका छल सभ उठि गेल!”

हमर बात जेना जीतू काकाकेँ नीक लगलैन। गाम दिस हिया कऽ ताकए लगला, चारिटा बिआह नजैरपर पड़लैन। ओना गामे छी, जे गाम जेते नमहर तइ गाममे तेते काज होइते अछि। मुदा हमर गाम से नहि, अखुनका जे सरकारक पंचायतिक नाप अछि, तइ हिसाबक गाम अछि।

ओना जीतू काका चौअन्नी मुस्की भरि चुपे रहला, मुदा फुलटुसी काकीकेँ जेना छुबि देलकैन! बजली» “बौआ, बजैमे केकरो किछ लगै छै! बेटी बिआह केहेन होइ छै से जेकरा करए पड़ै छै ओ बुझैए। कोढ़ तोड़ि देलक!”

ओना काकीक विचारकेँ जीतू काका सेहो मने-मन मानि रहल छला मुदा बजला किछु ने। कनी काल तीनू गोरेक बीच गुमा-गुमी बनल रहल। सभ सबहक मुँह देखि-देखि नजैर उताइर धरतीपर लऽ आनी...।

कनी कालक पछाइत मौन-भंग करैत जीतू काका काकीकेँ

कहलखिन»

“एते काल चाह-चाह, मिठाइ-मिठाइ घोल करै छेलौं, आ जखन बेर आएल तखन मुँह दाबि नेने छी!”

‘खग जानए खगक भाषा’, जीतू कक्काक बात फुलटुसी काकी बुझि गेली। बीचसँ उठैत बजली»

“बहुतरबा कौफी सेहो उगरल अछि।”

तनैत वाणमे जीतू काका बजला»

“चाह-कौफी पछाइत पीयाएब, पहिने कनी नोनगर-मिठगर लाउ।”

जहिना अफरजात वौस रहने बारीककेँ परसैमे नीक लगै छै तहिना फुलटुसी काकीकेँ सेहो भेलैन। घरमे सभटा वौस देखले रहैन, उठि कऽ गेली आ थारी भरि साँठि आगू बढ़ली।

बीचमे बजलौं»

“काका, समाजो आ गामो एक रहितो टुकड़ी-टुकड़ी बनल अछि। जइसँ एके गामक वा एके समाजक काज रंग-विरंगक भऽ जाइए। जइसँ सामाजिक सरोकारपर..!”

बिच्चेमे जीतू काका लोकि लेलैन। बजला»

“हँ से तँ ऐछे।”

तैबीच भरल थारी नेने फुलटुसी काकी सेहो पहुँच आगूमे रखि देलैन। मधुर भोज्य-वस्तुसँ थारी भरल रहबे करइ। देखिते जेना मनो मिठाएल। बजलौं»

“काका, अनेरे लोककेँ दुरमतिया चढ़ल छइ। कहू जे वैवाहिक सम्बन्ध दूभि-धानसँ सेहो भऽ सकैए, तइमे लाखक-लाख, करोड़क-करोड़ रुपैआ धुर-खेल भऽ रहल अछि! लूटा रहल अछि! मुदा की गाम-

समाजमे ओते सम्पन्नता आबि गेल अछि जे जेकर कुप्रभाव समाजपर नइ पड़त?”

मुड़ी डोलबैत जीतू काका सूहकारि तँ लेलैन, मुदा बजला किछु ने। तैबीच दुनू गोरे एक-एकटा रसगुल्ला थारीसँ उठेलौं। जीतू काका हाँइ-हाँइ मुँहक रसगुल्ला चिबबैत बजला»

“बौआ, दहेज आइ कोढ़ बेमारी जकाँ समाजक कोढ़कें खखोरि-खखोरि खा रहल अछि, से केकरा?”

ओना मुँहमे अपनो लालमोहन लऽ नेने रही मुदा जेना रस तर चलि गेल आ गिद्धबला छेना मुहेंमे लठिया गेल रहए, तैयो बजलौं»

“नइ बुझि पेलौं, कका?”

नइ बुझि पबैक कारण अछि जे समाजक सभ बजैए जे दहेज अधला छी। तैठाम काका की बाजि रहला अछि?

जीतू काका बजला»

“बौआ, गाम-समाजमे जे जाइतिक जल्ला पसरल अछि ओइ जल्लाकें सोझरबैमे दहेज आएल। जे नीक भेल।”

एक तँ कक्काक पहिलुके बातक ओझरी मनमे नइ छुटल छल, तैपर फेर दोसर ओझरी लगा देलैन! ओझरी ई जे ‘दहेज नीको छी।’

..छँटियबैत बजलौं»

“काका, दूटा प्रश्न एक संग आगूमे आबि गेल अछि। पहिल, दहेज नीक केना? आ दोसर, ओझराएल समाजक जालकें दहेज केना सोझरा रहल अछि?”

तैबीच दुनू गोरे दू-दूटा मिठाइ आ चरि-चरिटा नमकीन-कटलेट खा पानि पीब नेने रही। चाहक बारी आबि गेल छल। मुदा फुलटुसी काकी सेहो दुनू बात सुनने छेली तँए उत्तर पबैले मुँह बाइब निचेनीमे बैसल

छेली। चाहक छौंकमे जीतू काका बजला» "बौआ, अखन कोनो काजक औगताइ नइ ने छह?"

कहलयैन»

"नइ।"

ओहुना तँ बाते-विचारक काजे एतए आएल छी, तखन आन काजक अगुताइयोक बात केना कहि दैतिऐन।

असथिर होइत जीतू काका बजला»

"बौआ, काजक खुशी आकि गम किछु ने अछि। ई तँ परिवार चलैक प्रक्रिया छी जे सभकेँ करै पड़तै।"

ओना, मुड़ी डोलबैत बजलौं»

"हँ, से तँ करै पड़तै।"

मुदा मनमे ईहो होइत रहए जे फेर ने कहीं काका परिवारक दोसर

विचारमे ओझरा जाथि। मुदा से जेना जीतू कक्काक अन्तरात्मा बुझि गेलैन। बजला»

"बौआ, अपना सबहक गाम-समाजमे जाइतिक भीतर जाइतिक जल्लाक सीढ़ीनुमा खाड़ही बनल अछि, किछु काजोक हिसाबसँ आ किछु वृत्तियोक हिसाबसँ आ किछु माननौं।"

जीतू कक्काक सोझराएल बात सुनि मुड़ी डोलबैत बजलौं»

"ऐमे के 'नइ' कहत!"

जेना हमर बातसँ जीतू काकाकेँ सह भेटलैन, तहिना सहियारैत बजला»

"एतबे जँ रहैत तँ सोझ-साझ डाँरि घीच डँरियाएब हल्लुको होइत, मुदा..!"

जीतू काका 'डाँरि घीच डँरियाएब' की बजला सँ नीक जकाँ बुझबे

ने केलौं! बुझबो केना करितौं, कागजपर कलमसँ डाँरि घीचलकैं सभ देखैए। खेतमे आड़ि बना सेहो लोक अड़िया-अड़िया डँरियबैत अछि। मुदा मनुक्ख तँ बिनु सींग-नाँगैरक छी। मनुक्खकैं डँरियाएब! ई की..?

मुँह खोलि बजलौं» "काका, कनी आरो सोझरा कऽ कहियौं। मन पूरा फरीच नइ भेल।"

हमर बात सुनि जेना जीतू काका विह्वल भऽ गेला, मनमे विचारक लहैर उठि गेलैन, कोन ढंगे बुझौल जाए जे मनक बात ओहो बुझि जाए..?

संयमित होइत बजला» "बौआ, समाजमे पहिल भेल सामाजिक जाति आ सामाजिक जाइतिक बीच जाति-जातिक बीच सेहो अहिना बनल अछि, जहिना समाजमे अछि। जाइतिक बीच अगुआएल-पछुआएल इत्यादि, सेहो अनेको जातिक बीचक दूरी ओतबे अछि जेते समाजक बीचक जाइतिक दूरी अछि।"

भकइजोतमे जहिना कखनो साफो देखि पड़ैत आ कखनो अन्हराइयो जाइत, तहिना जीतू कक्काक विचारमे हुअए। जे बात जीतूओ काका बुझि गेला। बजला» "मन अकछाइ-तकछाइ ते ने छह?"

मुदा हमरो सुतरल। बजलौं» "मन अकछाएत तँ एक बेर फेरो चाह पीब लेब।"

चाहक चर्च सुनि फुलटुसियो काकीक मन फुरफुरेलैन, जेना अपनो चाह पीबैक विचार पहिनेसँ जगल होइन। फुलटुसी काकी उठैत बजली»

"हमरो आबह देब, तखन फरिछौट करब।"

फुलटुसी काकीक बात सुनि मनमे भेल जे भरिसक जे बात काकी बुझि रहली अछि, से अपने नइ बुझि पेब रहल छी! तैबीच जीतू काका बजला»

"कोनो बाते-विचार आकि काजे-उदेमकैं फरिछबैक जे रस्ता अछि ओ एक बेर कि हजारो बेर फरिछौल जा सकैए। भेल तँ एतबे ने जे घोर-

मट्ठा पोखरिक पानि केना घाटपर फरिच हएत जे साफ पानि लेब?”

ओना, अपना मनमे बेर-बेर उठैत रहए जे जाबे काकी अबै छैथ ताबे विचारकेँ चरियबैत रही, मुदा कक्कोक बातक उलंघन करब नीक नइ बुझि पड़ैत रहए।

अपनो हिस्सा चाह नेने फुलटुसी काकी पहुँचली। बीचमे तस्तरी रखि गिलास उठा जाबे जीतू कक्काक हाथमे पकड़ौलखिन, तइ बिच्चेमे अपनेसँ गिलास उठा मुहमे लगेलौं। ताबे काकी सेहो गिलास उठौली। विचारकेँ खरियबैत बजलौं» “काका, ऐ बेर तँ बुझि पड़ैए जे बिआहेक साल छी!”

जीतू काका बजला» “अपना गाममे केते लड़का-लड़कीक बिआह भेल?”

ओना, नजैर उठा-तकलौं तँ बुझि पड़ल जे बिआहो की एके रंगक भेल। केकरो बिआह-दुरागमन संगे भेल, तँ केकरो दुरागमनेटा। तेतबे नहि, चुमौनो तँ कम नहियेँ भेल। भेल तँ तीनू। मुदा अपना तँ यएह ने अछि जे नव परिवारक ओझराएल बात बुझि, माथक बात पटकैत बजलौं» “काका, ओते छुट्टी रहैए जे भरि गामक बिआहक हिसाब जोड़ब। तखन ते जइ बिआहमे सागिर्द भेलौं तेतेक ठेकान अछि।”

हमर बात जेना जीतू काका बुझि गेला। बुझबैत बजला»

“बौआ, रंग-रंगक जाइतिक बीच बिआह-दान भऽ रहल अछि, मुदा सभमे किछ-ने-किछ सम्बन्धो अछि आ नहियोँ अछि।”

कक्काक सहगर बात सुनि आरो सह दैत बजलौं» “हँ, से तँ ऐछे।”

जीतू काकाकेँ जेना सह भेटलैन तहिना सहटैत आगू बढ़ि बजला»

“बौआ, समाजमे एहेन कोनो जाति नइ अछि जेकर काजमे एक-दोसरसँ कनी हटलो आ कनी सटलो नइ होइ। मुदा ओते मगजमारी कथीले करब, अपन बात कहै छिअ।”

कक्काक सुढ़ियाएल विचार सुनि मनमे कनी सवुर भेल जे जइ काजे आएल छेलौं, से पटरीपर आबि रहल अछि! तँए, कनी पाछूसँ काकाकेँ धकियबैत बजलौं» “काका, अपना ऐठाम जे काज भेल ओ बढ़ियाँ ढंगसँ भेल।”

ओना मनमे ई रहए जे सहगर बात सुनेने कक्काक मन सोहनगर हेतैन जइसँ नीक जकाँ सभ बात कहता। मुदा से भेल नइ। बजला»

“बौआ, आब तँ काजक समापन भऽ गेल। तँए अनेरे छोट-छोट खोंच-खाँचकेँ खोंचाह बनाएब नीक नहि।”

गर भेटल, बजलौं» “हँ-हँ! अनेरो चिक्कन बाँस वा लकड़ीकेँ टेंगारीसँ काटि-काटि खोंचाह बनाएब नीक नइ।”

बजला» “गाममे ते सभ जाइतिक बीच मिला कऽ साइयोसँ बेसी बिआह भेल, सभटाकेँ समेट एकठाम करब कठिन अछि। मुदा अपन आ गामक तीनटा बिआह मिला चारूक बात कहै छिअ।”

बजलौं» “चारियोटा कम नइ भेल, चारि रंगक भेल। एको रंगमे केतेको रंगो अछि आ बेदरंगो अछि। बेदरंग भेल बाल-बोधक काजक रंग।”

जीतू काका बजला» “अपन ऐठाम जे काज भेल तइमे तोंहू जड़ि-सँ-छीप धरि छेबे कएल छेलह, सभ किछु देखबे केलह। ओना, किछु काज एहनो भेबे कएल जे विचारक विपरीत छल मुदा समाजक जे रूप-रेखा बनि गेल अछि, तइमे दोसर उपैयो तँ नहियेँ छल।”

बजलौं» “हँ, से तँ बनियेँ गेल अछि।”

आगू बढ़ैत काका बजला» “श्याम बाबू सेहो बेटीक बिआह केलैन, खर्चक हिसाबे हुनकर काज हमरा काजसँ नमहर भेलैन। मुदा ओ तँ हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ, नीक दरमहो पबै छैथ। पाँच बर्ख पहिनहिसँ, बेटीक नामे रुपैआ बैंकमे जमा करैत आबि रहल छला, सेहो जोर देलकैन आ

हितो-अपेछित मदैत केलकैन तँए हुनका कोनो अखर नइ भेलैन।”

बजलौं»

“हँ से तँ भेबे केलैन।”

आगू बढ़ैत जीतू काका बजला»

“तेसर बिआह सोहन लालक बेटीक भेलैन। ओहो ब्लौकमे सप्लाइ इन्सपेक्टरक नोकरी करै छैथ। ब्लौक भरिक डीलर सभ तेते मदैत केलकैन जे उगैड़िए गेल हेतैन। अपना घरसँ एको पाइ खर्चो ने भेल हेतैन।”

बजलौं»

“हँ, सेहो तँ देखबे केलौं।”

जीतू काका बजला»

“चारिम, मुनेसर भाइक बेटीक बिआह भेलैन। हुनको हमरे जकाँ खेत बेच कऽ करए पड़लैन।”

बजलौं»

“काका, बहुत समय भऽ गेल। जाइ छी।”

❑

शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016

गुलेती दास

अन्तिम जेठक दस बजेक समय। चारि दिन पहिने गुलेती दासकेँ दूटा छिट्टा दइले कहने रहिऐ। आइ भोरे समाद पठौलक, 'छिट्टा तैयार भऽ गेल से लऽ जाह।' ..समयमे तीखपन, ओना पूर्बा हवा सिहकैत रहइ मुदा तैयो जेना बुझि पड़ैत जे धरतीसँ आगि उठि रहल अछि, खास कऽ दस बजेक पछाइत आ चारि बजेक बीचक समयमे। रोहनियाँ बर्खा नइ भेल, ओना पनरह दिन पहिने बिहड़िया पानि भेल, मुदा ओहो छीच्चे जकाँ भेल जइसँ समैयक तापकेँ दाबि नइ सकल। छिछियाएले जकाँ रहि गेल। गोटि-पँगरा रोहनियाँ आम पकए लगल मुदा समय नइ पेने ओकरो सुआद पकाइने जकाँ, माने रौद-पक्कुए सन बुझि पड़ैत। गुलेती दास ऐठाम छिट्टा आनए विदा भेलौं।

गुलेतीक पुश्तैनी जातीय टाइटिल 'मुखिया' छिऐ। माने मल्लाह परिवारमे गुलेती दासक जन्म भेल। पचीस बर्ख पूर्ब गुलेती मुखिया कबीर पंथी वैष्णव भेल, जइसँ 'मुखिया' टाइटिल बदैल 'दास' भऽ गेल। पचास बर्खक गुलेती दासक जिनगीक अपन रूटिंग बनल छइ। दस बजे ओ भानसक पाछू लगि जाइए, जे एगारह-सबा-एगारह बजे भोजन तैयार कऽ लइए। भानसक पछाइत नहा कऽ, मंत्र-जाप तँ किछु अबै नइ छै, मुदा तैयो 'जय सत्-नाम, जय-जय सत्-नाम' करैत चानन सेहो करैए। चानन केलाक पछाइत भोजन करैए। बारह-सबा-बारह बजे थारी-बरतन धो-धा चीनमारपर रखि अराम करए चलि जाइए। तीन बजे ओछाइन छोड़ि मुँह-हाथ धोइ, पानि पीब, तमाकुल चुना कऽ खा, अपन काजमे

लगि जाइए...।

भिनसुरका उखड़ाहाक काज सम्पन्न करैत गुलेती भानस करए विदा होइक ओरियान करिते छल कि पहुँचलौं। हमरा देखिते गुलेती दास बाजल»

“भैया, तोहर काज काल्हिये बेरू-पहर सम्पन्न भऽ गेल, भने आबिए गेलह।”

कहि दुनू छिट्टा आनि आगूमे रखि देलक। दुनू छिट्टाकेँ निहारि-निहारि देखलौं तँ बुझि पड़ल जे जहिना कहने छल, तहिना छिट्टा बनौनौं अछि। पुछलिऐ»

“गुलेती, दुनूक केते दाम भेलह?”

ओना शुरूहेमे, माने जखन छिट्टा दइले कहने रहिऐ तखने डेढ़-डेढ़ साए रुपैयेक हिसाबसँ कहने रहए। मुदा ईहो कहने रहए जे जखन छिट्टा बनि जाएत तखन दस-बीस कमे करि कऽ दिहह। ..छिट्टा देखि मनमे भेल जे जेहेन वौस देलक अछि तइमे दामक अतिरिक्त किछु उपड़ा सेहो दिऐ, मुदा लेबाल-देबालक विचार मनमे जोर मारि देलक तँए दोहरा कऽ कहा गेल ‘केते दाम भेलह।’

गुलेती दास बाजल» “भैया, कहनहि रहिहह जे तीन साएमे दस-बीस कमे दिहह।”

साए-साए रुपैआक तीनटा नमरी जेबीसँ निकालि गुलेती दासक हाथमे दैत कहलिऐ»

“गुलेती, तूँ जेते दस-बीस कम करहब, ओते दाम कम भेल, मुदा तोहर कारीगरी देखि मन खुशी भऽ गेल तँए तोरा ओते इनाममे दइ छिअ, ओहो रखि लएह।”

‘इनाम’ सुनि गुलेती मुस्कुराइत कहलक» “भैया, पाइ-कौड़ी कोनो वौस छी, असल छी जे मनसँ असिरवाद दएह जे अहिना काज लगल

रहए जइसँ समाजक उपकार करैत रहिऐ। भानस करैक बेर भऽ गेल तँए अखैन बेसी गप नइ करबह।”

अपनो गुलेती दासक रूटिंग बुझले अछि तँए बेसी गप-सप्पकेँ आगू नहि बढ़ा, दुनू छिट्टा हाथमे लऽ विदा भेलौं।

जहिना कोनो गाममे जे जेते पहिने आएल रहल ओ ओते नीक बासभूमि अपनबैत बसैए, आ जे जेते पछाइत आएल ओ ओते आगू बढ़ैत बास बनबैत जाइए, तहिना गुलेती मुखियाक पिता–दोरिक मुखिया सेहो हरिपुरमे आबि बसला। से खाली दोरिके मुखिया नहि, आठ-दसटा मलाह परिवार कोशिकन्हासँ उपैट आबि बसल छला। करीब साठि बर्ख पहिने...।

जइ समय दोरिक मुखिया हरिपुरमे आबि बसला, तइ समय मात्र तीनियेँ गोरे परिवारमे छला। दोरिकक माए- रूपनी, पत्नी- तेतरी आ अपने दोरिक। गैरमजरूआ आम जमीन, करीब पाँच कट्ठाक परती रहै तेहीपर आठो-दसो परिवार बसला।

हरिपुरक आबादी पतराएले छल, खेती-पथारी करैबलाक खगता छेलैहे। ..जहिया आठो-दसो परिवार आबि बसला, तहिया हरिपुरमे जे सुभ्यस्त किसान सभ छला ओ भरपुर सहयोग केलखिन। चारि-पाँच परिवार दू-दू-तीन-तीन परिवारकेँ अपना बीटक बाँस, खढ़ आ साबे दऽ दऽ घर बनबा देलखिन। ओहू दसो-बारहो परिवारकेँ बोनि-बुत्ता करैक गर सेहो भेटलैन।

ओना, रूपनी उमेरदार मुदा तैयो बेटा-पुतोहुक संग अखाढ़मे धनरोपनी आ अगहनमे धनकटनीक संग रब्बियो-राइ उखाड़ए-काटए जाइते छेली। जे किसान दोरिककेँ घर बनबैमे बाँस, खढ़ आ साबेक मदैत केने रहथिन, हुनके हरवाहि दोरिक करए लगला।

सालक बारह मासमे दू मास हरवाहि चलै छल, जइमे एक मास

सुख-जोत आ एक मास कदबा चलइ, बाँकी दस मास हरवाहिक काज बन्ने रहइ। खेतियो असान छेलइ। अखाढ़मे धनरोपनी, भादो-आसीनमे खरहाएल धानक खेतमे कमठौन आ अगहनमे धनकटनी चलइ। दौन-दोगौन किसान अपने कऽ लइ छला।

समय आगू बढ़ल। दोरिक मुखियाक माए मरि गेली। दोरिककेँ सेहो पहिल बेटा आ दूटा बेटी भेलैन। सात सालक जेठ बेटा- फुदी मुखिया। फुदियाक बिआह सेहो भऽ गेल।

दुनू बेटी, जे एकटा पाँच बर्खक छल आ दोसर अढ़ाइ बर्खक छल, ओ आ फुदिया लगा पाँच गोरेक परिवार दोरिक मुखियाक छेलैन। ओना, बेटाक बिआह भऽ गेल मुदा ओइसँ परिवारक जनसंख्यामे कोनो बिरधी नइ भेल। होइतो अहिना छेलै आ अखनो केतौ-केतौ होइते अछि जे बच्चेमे बेटा-बेटीक बिआह भेल आ दस-बारह बरिसक पछाइत दुरागमन।

बाल-विवाहक कारण छल, बेटा-बेटीक बिआह माए-बापक अनिवार्य कार्य मानल जाइत रहल अछि जेकर पुरती करब सेहो अनिवार्य बुझल जाइत रहल अछि। एक तँ ओहुना मनुखो आ आनो-आन जीव-जन्तुक जिनगीक कोनो निसचित ठेकान नइ अछि। मर्त्त लोक छी, जे जन्म लेलक ओ मरबे करत। मुदा तोहूमे जैठाम जिनगी-ले अनुकूल परिस्थिति नइ रहल तैठाम तँ आरो जिनगी बेठेकान भऽ जाइए। ओना, जँ मनुखो आ आनो-आन जीव-जन्तुक अनुकूल परिस्थिति रहल तँ जिनगीकेँ ठेकनौले जा सकैए। बच्चासँ वृद्धि होइत वृद्ध बनैत-बनैत साए बर्ख भइये जाइए।

चारि साए बीघाबला गाम हरिपुर। चारियो साए बीघा जमीन चारि किस्समे बँटल अछि। ओना माइटिक अनेको किस्म अछि मुदा से नहि, साइजिक हिसाबसँ हरिपुरमे चारि किस्मक जमीन अछि। पहिल अछि-

‘उपराइर’, जइमे बासो-अगवास अछि, बाड़ियो-चौमास अछि आ गाछियो-बिरछी अछि। दोसर अछि- ‘मध्यम जमीन’। मध्यमोमे दू रंगक किस्म अछि। पहिल ‘ऊँच मध्यम’ आ दोसर अछि ‘नीच मध्यम’। आ चारिम अछि ‘चौरी’, ‘चौर’।

चारि साए बीघा जमीनमे दू साए बीघा चौरी अछि, बाँकी दू साए बीघा मध्यमसँ बास धरिक अछि। ओना, चौरियोमे धानक खेती होइए, मुदा अबिसवासू। जइ साल अगते नमहर बर्खा भेल आकि बाढ़ि आएल पानिसँ चौरी भरि गेल, तहन तँ दहार भेल तँए एको कनमा धान नइ उपजत।

हरिपुरक उत्तर-पच्छिम कोण होइत सुपर्णा धार प्रवेश केने अछि। जे उत्तर-पच्छिमसँ शुरू होइत गामक उत्तरबरिया बाध देने उत्तर-पूब कोण पकैड़ दच्छिन-मुहेँ होइत गामसँ बहराएल अछि। गामक चारू-कात माने चारू बाधमे चौरियो अछि आ आनो-आनो किस्मक जमीन। ओना, जँ समय नीक रहल, माने दाही-रौदी नइ भेल, तखन तँ एते उपजा भइये जाइए जइसँ सालो भरिक बुतातमे कटमटी नइ अबैए मुदा दाही-रौदी भेने तँ आबिए जाइए।

दोरिक मुखिया, जिनका अपन घर छोड़ि किछु ने छैन, सेहो अपन काजकेँ बढ़ौलैन। बारह मासक सालमे तीन मास काज रहने, तीन मास तँ परिवारक गुजर चलि जाइ छेलैन, मुदा बाँकी मासमे भुखमरी आबि जाइ छेलैन। ओना, परिवारमे गुलेतीक जन्म सेहो भऽ गेल। गुलेती माने दोरिक मुखियाक चारिम सन्तान।

गामक दछिनबरिया चौरीक बगलेमे पूबसँ पच्छिम-मुहेँ बान्ह अछि। जे बीचमे टुटल अछि। सुखार मासमे तँ सुखले-सुखल लोक टपैए मुदा जखने बर्खा भेल आकि बाढ़ि आएल तहन रस्ता बन्न भऽ जाइए। ओना सोलहन्नी तँ बन्न नइ होइए, मुदा भरि-जाँघ-भरि-डाँड़ पानिमे टपए

पड़ै छइ।

करीब एक कट्ठामे बान्ह टुटल अछि। जइ देने चौरियोक पानि आ बाढ़िक पानि सेहो बरसातमे बहैत रहैए। जेकरा लोक खोरबन्हा सेहो कहै छइ। ओही टुटलाहा बान्हमे दोरिक टौहकी पहटासँ घेर मछबारि सेहो करै छैथ। जइसँ साओन-भादोसँ लऽ कऽ कातिक तक मछबारिक रोजगार चलिते छैन। ओना, पोखरिक पोसा माछ जकाँ तँ नहि मुदा अनेरूओ आ पोखैर-झाँखैरक जे पुरना माछ बाढ़िमे भँसि-भँसि पड़ाइए ओहो तँ होइते छैन।

बाँसक छिट्टा-पथिया आ टौहकी-पहटा सेहो बनबैक लूरि दोरिक मुखियाकेँ छैन्हे। टौहकी-पहटाक बिकरी तँ बेसी नहियेँ होइ छेलैन मुदा छिट्टा-पथियाक बिकरी तँ होइते छेलैन। ओहीठाम माने खोरिबन्हाक पुबरिया भित्तामे, खोपड़ियो आ मचानो बना दोरिक मुखिया सौनसँ जे रहए लगै छला ओ कातिक तक बाधेमे दिन-राति बितबै छला।

एक-बेर-दू-बेर टौहकी चाहि माछो ऊपर करै छला आ भरि दिन छिट्टा-पथिया सेहो बनबै छला, जेकर बिकरी गामोमे होइ छेलैन आ आनो-आनो गामक लोक आबि-आबि किनै छल।

जहिना दुरागमनक पछाइत दुनू बेटी सासुर चलि गेल तहिना जेठका बेटा–फुदिया सेहो दुरागमनक पछाइत घर-जमाए बनि सासुरेमे रहए लगल। कारण भेल, ससुरकेँ मात्र एकेटा बेटी दोसर कोनो सन्तान नहि। सासुरमे घराड़ीक संग दू कट्ठा बाड़ियो...।

ओना, गुलेती सेहो पनरह बर्खक भऽ गेल, मुदा अलबटाह जकाँ रहने बिआह नइ भेलइ। अलबटाह ई जे देहक हिसाबे माथो नमहर रहै आ बोलियो साफ नइ निकलै। ओना बाजै सभ किछु मुदा स्पष्ट बोल नइ रहने सुननिहार साफ-साफ नइ बुझैत। तैसंग दुनू पएरो झरखाइ।

भादो मास, सूर्यास्तक समय। टौहकी चाहैत दोरिक मुखिया भरि

डाँर पानिमे रहैथ। बड़का टौहकी रहइ। ओइमे एकटा साँप फँसि गेल। मेघौन समय, दोरिकर्कें बुझि पड़लैन जे अन्है छी। टौहकीक मुँह खोलि साँपकेँ अन्है बुझि पकड़ए चाहलैन।

टौहकीमे फँसल साँप छटपटाइते रहए। जहाँ दहिना हाथे साँपकेँ पकड़ए लगला कि हाथेमे साँप काटि लेलकैन। जखन हाथमे साँप काटि लेलकैन तखन दोरिकर्कें बुझि पड़लैन जे भरिसक ढोढ़ साँप छी, वएह काटि लेलक।

ढोढ़क बिख माल-जालकेँ तँ लगै छै मुदा मनुक्खकेँ नइ लगै छइ। ओना, हाथसँ छर-छर खून बहए लगलैन मुदा तेकरो चिन्ता मिसियो भरि दोरिकक मनमे नइ भेलैन।

टौहकीक मुँह बान्हि दोरिक ऊपर एला आ जैठाम खून बहैत रहैन, तैठाम चुनौटीसँ चून निकालि लगा लेलैन। ओना, बिख तरेतर देहमे पसरए लगलैन मुदा तेकरा अनठा देलखिन। चून लगा फेर पानिमे पैस टौहकी उठौलैन। टौहकीक मुँह खोलि साँपकेँ निकालए लगला कि फेर दोहरा कऽ साँप काटि लेलकैन। टौहकी चाहिते-चाहिते दोरिक पानिमे खसि पड़ला। दोसर कियो ओइठाम नहि। पानियेँमे दोरिक मरि गेला।

एक घन्टाक पछाइत जखन गुलेतियो आ ओकर माइयो पहुँचल तँ दोरिककेँ खोपड़ीमे नइ देखलक। चारू-कात तकलक तँ केतौ ने नजैरपर पड़लैन। अन्हार सेहो भऽ गेलइ। गुलेती कपड़ा बदैल पानिमे पैसल तँ पिताकेँ मुइल पड़ल देखलक। देखिते जोरसँ माएकेँ शोर पाड़ैत बाजल»

“माए! बाबू मरि गेल!”

‘मरब’ सुनि तेतरियो पानिमे पैस कऽ देखलैन जे पतिक साँस बन्न भऽ गेल छैन।

पानिपर ताबे अलगल नइ रहैथ। गुलेतीकेँ कहलखिन»

“बौआ, पहिने दुनू गोरे पकैड़ कऽ ऊपर लऽ चलह।”

भरि राति दुनू माय-पुत माने गुलेतियो आ तेतरियो दोरिकक‍ेँ खोपड़ीमे रखि ओगैड़ कऽ बैसल। भोर होइते दुनू माय-पुत खोपड़ीए-मे कानए लगल। ओना गामसँ हटल खोपड़ी, मुदा रहै तँ गामेक दछिनबरिया बाधमे। ..दुनू माए-बेटाक कानब सुनि एके-दुइए गामक लोक पहुँचए लगल। अन्तमे मचानेक फट्ठो आ बल्लोक चचरी बना दोरिकक लाशकेँ उठा धारक कात लऽ जा गाड़ि देलकैन।

अखन धरि तेतरीक मनमे मिसियो भरि ई चिन्ता नइ पैसल छलैन जे निसहाय छी। बुझियो केना पड़ितैन, सोझमे पति, बेटा, बेटी सभकेँ देखैत। तैसंग जे जिनगी बनल आबि रहल छेलैन सेहो तँ रहबे करैन। माने ई जे जइ सुख-दुखक बीच जिनगी बनल छैन सेहो तँ छैन्हे, जइसँ अपन ऐगला शेष जिनगीपर नजैर किए जइतैन। मुदा पतिक परोछ भेने तेतेरीक मनो आ शरीरो हरहरा कऽ जेना बैसए लगलैन। ओना तेतरी सत्तैर बर्ख टपि चुकल छैथ मुदा अखन तक मनसँ मृत्युओ आ दुखो हेराएल छेलैन।

पतिक परोछ भेने जेना एकाएक तेतरीक मनकेँ चिन्ता दाबए लगल। दाबबो केना ने करितैन। एक दिस गुलेती सन अलबटाह बेटा सोझहामे देखैत तँ दोसर दिस जेठ बेटा-पुतोहु आ पोता-पोतीकेँ अपनासँ दूर हटल दोसर गाममे देखैत। जे कहियो एको कौर खाइक आकि एको बीत वस्त्रक जोगार नइ करैत। बेटी तँ सहजे जन्मदाता माए-बापसँ हटि दोसर घर बसिते अछि, तँए ओकर आशे कोन...।

साल बितैत-बितैत तेतरीक शरीर जड़ि कटल लत्ती जकाँ अलिसा-अलिसा सुखैत-सुखैत सुखि गेलैन। माने तेतरी मरि गेली।

पिताक मृत्युक पछाइत गुलेती मुखियाक ऊपर परिवारक भार आबि गेल। ओना, गुलेतीक बुधि ओते परिपक्व नहि जे अपन पूर्ण दायित्व बुझैत मुदा तैयो तँ एते बुझबे करै छल जे जहिना पिताक

अमलदारीमे माछक कारोबार करै छेलौं तहिना आबो करब। जइसँ तीन-चारि मास गुजर चलिए जाइए। तैसंग पिताक संग बाँसक बीटसँ बाँस काटि अनै छल आ ओकरा पाँगि-पुईंग कऽ टुकड़ी बना-बना, माने ओकरा टोनि-टोनि, चीर-फारि छिट्टा-पथियाक कड़ो आ बीनैबला कैमचियो बनबै छल, तैसंग छोट-छोट पथियो-टौहकी आ पहटो गुलेती बना लइ छल। ओना पहटा बनाएब सभसँ सोझगर अछि मुदा आब ने ओकर खगता गाममे अछि आ ने बिकरीक वस्तु बनल अछि।

जहिया दोरिक कोशिकन्हासँ पड़ा कऽ हरिपुर आबि बसला तहिया तीन गोरेक परिवार रहैन–अपने, माए आ पत्नी, जे समय पेब कलशल। बेटा-बेटी भेने पाँच गोरेक परिवार भेलैन। मुदा बेटा-बेटीकेँ सासुर बास भेने फेर तीनियेँ गोरे–तेतरी आ गुलेतीपर आबि अँटैक गेलैन। ओना, बेटो-बेटी जे सासुर बसैए, जीवित छैन आ तैसंग पोतो-पोती आ नातियो-नातीनसँ परिवार झमटगर भइये गेल छैन, जइसँ दुनू परानी दोरिकक मनमे खुशी रहबे करैन। मने-मन बजबो करिते छला जे जहिना कोशिकन्हासँ पड़ा आबि हरिपुरमे बसलौं तहिना भगवान एकसँ एक्कैस परिवार बना देलैन। आगू की हएत से लोक थोड़े देखैए। बड़ देखैए तँ वर्तमान देखैए आ अतीत देखैए। अतीतो तँ अतीते छी जे अपन चुगली अपने करैए। चुगली ई जे जहियासँ मनुक्ख ऐ धरतीपर जन्म लेलक आ लतड़ैत-चतड़ैत आगू बढ़ल तहियासँ हमरो वंश जीबैत आबि रहल अछि, जँ से नइ जीबैत रहल अछि तँ आइ हम केना छी। समैयक चपेटमे, माने समैयक उतार-चढ़ावमे परिवारक डारि-पात जे टुटल हुअए आकि झड़ल हुअए मुदा शील रूपमे वंशो तँ जीवित ऐछे।

ओना, गुलेतीक परिवार असगरक भऽ गेल। माने परिवारमे गुलेती असगरे रहि गेल। मुदा असगरो रहल तैयो तँ परिवार रहबे कएल, भलेँ अलबटाह रहने गुलेतीक बिआह नइ भेल, तइसँ परिवार आगू नइ बढ़त, मुदा असगरोक परिवार तँ ऐछे। जखने परिवार रहल तखने ओकरा

जीवित रखैले परिवारक सभ विहीत करए पड़ै छइ।

परिवारो तँ परिवार छी। एको गोरेक होइए आ पचासो गोरेक होइते अछि। एक गोरेक परिवार ओ भेल जे गुलेतीक छइ, आ गोटे-गोटे ऋृषि-ऋृषिकाक सेहो होइए, जइमे असगरेक जिनगियो आ परिवारो होइए आ दुइयो-तीनियों आ चारियो-पाँचोक होइए। तैसंग जँ दू भैयारी आकि तीन भैयारी आकि चारि भैयारीक रहल, तँ पाँच-दस-पनरह-बीसक सेहो होइए। तहूसँ बेसी जँ पिताक परिवारसँ आगू बढ़ि बाबा तकक रहल तँ तीसो-चालीस गोरेक भेल आ जँ तहूसँ पाछू परबाबा तकक संयुक्त रूपमे रहल तँ पचासो-साठि गोरेक परिवार होइते अछि जेकरा 'संयुक्त परिवार' सेहो कहै छी। ओना, संयुक्तो परिवार केते रंगक होइए। जँ दू-तीन भैयारीक रहल तँ ओहो संयुक्त परिवार भेल आ जँ तइसँ पाछू बाबा तकक भेल तँ ओहो भेल आ जँ परबाबा तकक भेल तँ ओहो संयुक्ते परिवार भेल।

मुदा तँए कि एक गोरेक आकि दू गोरेक परिवार नइ अछि, एहनो तँ नहियेँ कहल जा सकैए किएक तँ सेहो ऐछे। ओना, एक-पुरखिया परिवारकेँ संयुक्त परिवार बनैक अनुकूल परिस्थिति बनितो नहियेँ अछि तँए ओ नमहर जड़ि रहितो ताड़-खजूर जकाँ एक-पुरखियाहे रहैए। माने ई जे जँ परबाबा धरिक परिवार अछि। ओइ परिवारमे परबबो असगरे भैयारी छला आ बेटो एकेटा भेलैन, बेटी भलेँ बेसीए रहल होनि जे सासुर चलि गेलैन ओ परिवार तँ एक-पुरखियाहे आगू बढ़ि बाबापर पहुँचैए। आ जँ बबोक वएह गति भेलैन जे एकेटा बेटा भेलैन जइसँ फेर एक-पुरखियाहे परिवार आगू बढ़ल...। तँए ओहन परिवार तँ कहियो संयुक्त नहियेँ बनि पाओैत, बेसीसँ बेसी एतबे ने हएत जे बबो-दादी आकि माइयो-बाप आकि बेटो-पुतोहु एकठाम रहि गुजर-बसर करैथ। ओना, अकसरहाँ लोकक मुहेँ यएह निकलैत जे 'संयुक्त परिवार नष्ट भऽ गेल वा जेहो अछि से नष्ट होइक बाट पकैड़ नेने अछि।' मुदा ऐठाम हमरा भ्रम

भऽ गेल अछि। भ्रम ई भऽ गेल अछि जे हम समयक गतिकेँ नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी।

जहिना समैयक गति अछि जे भिनसरसँ दुपहर, दुपहरसँ साँझ पड़ैए तहिना सभ कथुक अछि, जइमे परिवारो आ समाजो अछि। समाज परिवर्तनशील अछि। कोनो क्षण एहेन नइ होइ छै जइमे परिवर्तन नइ होइए। मुदा प्रति क्षण होइबला परिवर्तन जाबे तक पुरान स्थितिमे रहल माने पुरान सीमाक बीच रहल–ताबे तक मात्रात्मक परिवर्तनक बीच रहल मुदा जखन ओ धीरे-धीरे बदलैत ओइ सीमापर पहुँच लांघए चाहैए वा लांघैए तखन स्थिति बदलौ चाहै छै आ बदलियो जाइ छै जइसँ बदलावक एक नव रूप धारण करैए जेकरा गुणात्मक परिवर्तन कहै छिऐ, अहीठामसँ परिवारो आ समाजोमे एक नव रूपक उदय होइ छै जे विकास कहबैए। उदाहरणक रूपमे हम देखै छी जे जहिना केटलीमे पानि भरि चुल्हिपर चढ़बै छी, ओइमे निच्चासँ आँच दइ छिऐ, जइसँ पानि गर्म होइत खौलए लगैए। जाधैर पानि खौलैत रहैए ताबे धरि ओ मात्रात्मक परिवर्तनक रूपमे रहल मुदा जखने खौलैत पानि वाष्प बनि उड़ए लगैए तखन ओ गुणात्मकमे बदैल जाइए, जइसँ पानिक रूप वाष्पक रूपमे बदैल जाइए।

अहिना परिवारोक संग अछि। जेकरा हम 'संयुक्त परिवार' कहै छिऐ ओ अखनो अपन बदलैत रूपमे जीवित अछि आ आगूओ रहत। अखनो एहेन परिवार तँ ऐछे जे पचीस-पचास जनक अछि। परिवारक जे श्रमशील लोक छैथ ओ अपन-अपन जीविका-ले अपन-अपन उत्पादनमे दसठाम छिड़ियाएल रहै छैथ, आ जखन परिवारमे कोनो पैघ काज–विवाह, श्राद्ध इत्यादि भेल तखन सभ एकठाम भऽ दस-दिन-बीस-दिनमे काज निवटा अपन-अपन जगह पुन: पकैड़ लइ छैथ। ..जाबे धरि परिवारक सभ जनकेँ जीबै जोग उपार्जन नइ रहतैन ताबे ओ परिवार ठाढ़ो केना रहि सकैए तँए जेकरा नष्ट होइत संयुक्त परिवार बुझै छी ओ

पाछूक विचार आ ढाँचा छी। मुदा नव ढाँचाक रूपमे 'संयुक्त परिवार' अखन नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। हँ, एते जरूर भेल अछि जे ओ नव रूप पकैड़ ठाढ़ अछि।

गुलेती मुखियाक परिवारक जे पैछला रूप छल ओ बदैल गेल मुदा जीवित भाए-बहिनक बीचक सम्बन्ध अखनो जीवित अछि। माने ई जे गुलेतीक जेठ भाइयो आ बहिनो–जे सासुर बास करैए, अपन के कहए जे दुनू बहिनो आ भागिनो-भगिनीक आवा-जाही छइ। तैसंग ईहो छैहे जे गुलेतियो कहियो काल अनदिनो माने बिना कोनो काज-उदेमक सेहो–जाइते अछि आ तैसंग जँ कहियो कोनो विशेष काज–बिआह आदि- भेल तँ तहूमे जाइते अछि। ओना, माता-पिताक मुइने गुलेतीक परिवार असगरेक रहि गेल, मुदा परिवार तँ ठाढ़ रहबे कएल। नमहर परिवार रहने परिवारक जे जरूरतक वस्तु अछि ओकर जरूरत बेसी होइ छइ, आ जेते छोट रहल तेते कम होइ छइ। माने ई जे रहैक घर हुअए आकि भोजनक सिदहा-समर, आकि देहक वस्त्र आकि रोग-वियाधिक दवाइ-दारू ऐ सभ चीजक खगता कम आ बेसी रहने बेसी होइ छइ।

जाबे तक दोरिक मुखिया जीबै छला ताबे तक शकलदेवकेँ गिरहत मानि हुनके काज-उदेम करैत रहलैन। शकलदेवे दोरिककेँ घर बनबैक बाँसो-खढ़ देने रहथिन आ अपन गिरहस्तीमे काजो देने रहथिन, तैसंग मौका-कुमौकामे दू सेर आकि दू टाका दऽ मदैतो करै छेलखिन। ओना, शकलदेवो मरि गेला। बेटा सुरतलाल छथिन जे पितेक सीख-लिखे अखनो धरि परिवार चलबै छैथ।

हाथ-पएर टेँढ़ रहने गुलेतीकेँ ने हर जोतल होइ आ ने धनरोपनी कएल होइ, जइसँ सुरतलालक संग सम्बन्धमे कमी आबि गेल। ओना, सुरतलाल हर जोतैले दोसर गोरेसँ सम्बन्ध बना लेलैन मुदा गुलेतीकेँ सेहो सोलहन्नी नहियेँ छोड़लखिन। अखनो जइ दिन सुरतलाल खेती शुरू करै छैथ, माने पहिल दिन, जइ दिन जन-हरबाहकेँ नति कऽ खुअबै छथिन-

तइ दिन गुलेतीकेँ सेहो नौत दऽ खुऐबते छथिन।

दोरिकक अमलदारीमे परिवारमे तीन दिसक आमदनी छल, पहिल छल हरबाहिक संग रवियो-राइ उखाड़ै-काटैसँ लऽ कऽ धनकटनीक बोइन सेहो, तैसंग सौनसँ लऽ कऽ कातिक तक माछोक छल आ टौहकी-पहटा-छिट्टा-पथिया जे बनबै छला सेहो छेलैन। से गुलेतीक परिवारमे नइ रहल। मुदा तैयो मछबारिक आमदनी आ छिट्टा-पथियाक रहबे कएल। टौहकी-पहटा बनाएब छोड़ि गुलेती सोलहन्नी छिट्टा-पथिया बनबैए।

सुरतलाल गामक सुभ्यस्त किसान छैथ, जिनका दस बीघा जोतो, खढ़ो-खरहोरि आ वेखो-बुनियादि छैन। पाँच कट्ठाक जे बँसवाड़ि छैन ओ ओहन जइमे दस-बीसटा बाँस सभ दिन सुखले रहैए। गदिआह माटिपर बँसबाड़ि छैन जइसँ एक-एकटा बाँस पचास-पचास हाथक होइ छैन। तहूमे जीवनी किसान शकलदेव, रंग-रंगक बाँसो लगौने छला आ ओकर तरद्दुत सेहो साले-साल करिते छला। तरद्दुत ई जे बाँसक बीटमे साले-साल बैशाख-जेठमे माटियो दइ छेलखिन आ खाली जमीनक तमनी सेहो करिते छला, जइसँ पुरान बीट रहितो बुझिए ने पड़ैत जे ई एते पुरान अछि। ओना, नवो बीट पुरान बीट जकाँ बिना तरद्दुतक भइये जाइए। हेबो केना ने करत जहिना गरीब परिवारमे समुचित भोजन आ बर-बेमारीमे समुचित दवाइ नइ भेटने जुआनो-जहान झखड़ल बुझि पड़ैए तहिना नवको बाँसक बीटमे भइये जाइ छइ।

गुलेतीक परिवारक सम्बन्ध जे शकलदेव परिवारक संग अखन धरिक छल ओइमे काजक कमी भेनौं कमी नइ आएल अछि। जइ समय दोरिक जीबै छला तहू दिनमे छिट्टा-पथिया बनबैले शकलदेवक बाँस कीनि बनबै छला आ गुलेती जखन करए लगल तखनो सुरतलालेसँ बाँस कीनि-कीनि बनबैए। ओना, गुलेतीक परिवार आ सुरतलालक परिवारक सम्बन्धमे मिसियो भरि विघटन नहि भेल मुदा सम्बन्धक रूपमे परिवर्तन तँ भेबे कएल। होइते अहिना छै जे समैयक संग बेकतियो, परिवारो आ

समाजोक सम्बन्धमे परिवर्तन भऽ जाइए।

जहिना दोरिककेँ हरिपुर एलापर शकलदेव बिसवासक संग बाँस, खढ़, खरही दऽ घर बनबा बसौलखिन आ अपन मदैतक लेल हरबाहिक संग गिरहस्तीसँ जोड़ि जिनगीकेँ बिसवासक संग आगू बढ़बैत रहलखिन तहिना सुरतलालो गुलेतीक संग अपन बिसवासकेँ जीवित रखनहि छैथ। माने ई जे गुलेतीकेँ जे छिट्टा-पथिया बनबैले बाँसक खगता होइ छै तइले कहि देने छथिन»

“गुलेती, बाँसक बीट अपने बुझिहह, तँए जखन तोरा खगता हुअ तखन परोछोमे काटि सकै छह। दामक कोनो बात नहि, तोरो बुझले छह जे बीस रुपैआ एगो-बाँसक दाम होइए, जे तूँ पहिनौं दऽ सकै छह आ पछातियो दऽ सकै छह।”

ओना, गुलेतियो इमानदारीसँ ई बुझिते अछि जे बिसवासो तँ पुरनाइये गेल अछि जइसँ कमी आबिए जाइ छइ। तँए जखन बाँसक खगता होइ छै तखन ओ अपन जीवनक जीविकाक काज बुझि पहिने सुरतलालकेँ जानकारी दैत काज करैए।

अन्तिम जेठ, टहटहौआ रौद। गुलेती मुखिया तीन बजे अपन छिट्टा बीनैक सभ समचाक संग एकटा डाबामे पानि नेने घरसँ थोड़े हटि रस्ता परक पाखरि गाछ लग पहुँचल। ओना, ओ आइए-टा नहि, सभ दिन ओही गाछक निच्चाँक छाहैरमे बैस अपन काज करैए।

गाछक निच्चाँमे काड़ा, कैमची, पगहरिया आ पानिक डाबा रखि बौगुलीसँ तमाकुल निकालि चुनबए लगल। तही काल लोहिया पट्टीवाला श्याम सुन्दर दास अपन दूटा चेलाक संग पहुँचला। तीनू गोरे भनडारा पुरए दीप जाइ छला। ओना, तीनू गोरे छत्ता सेहो ओढ़ने रहैथ मुदा तैयो रौदा गेले छला। रौदेबो केना ने करितैथ, एगारहे बजे खा-पी कऽ गामसँ विदा भेला। लोहिया पट्टी आ दीपक बीच पाँच-छह कोस जमीन अछि।

चारि बजेसँ भनडाराक कार्यक्रम पहुँचनहि शुरू हएत।

भनडरो नमहर छइ। एगारह साए टूक बँटने छैथ। सातटा महात्माक जुटानी अछि। तैसंग परोपट्टाक जे कण्ठीधारी कबीर पंथी छैथ, तिनको सभकेँ दल पड़ले छैन। एक-सँ-एक गबैया सभ सेहो एबे करता। ओना, कम कि बेसी जे साधु-महात्मा छैथ, सभकेँ किछु-ने-किछु भजन कीर्तन अबिते छैन, जे कियो खौजरीपर गबै छैथ तँ कियो ढोलक-हरमुनियाँपर तँ कियो ओहिना थोपड़ी बजा-बजा सेहो गेबे करै छैथ।

जहिना छोट-पैघ कबीर पंथी महंथक जुटानी अछि माने दल पड़ल छैन, तहिना छोट-पैघ गबैयोक जुटानी ऐछे। रहबो केना ने करैत, अखुनका जकाँ कि अपन-अपन फीस बना गबैया चलै छैथ, एक टूक सुपारी अपना पंथक भेट जाइ छैन कि अपन सेवा दइले तैयार भऽ जाइ छैथ, जइसँ नीकसँ नीक भजन-कीर्तनक कार्यक्रम, कम-सँ-कम खर्चमे चलिते अछि। ..इलाकाक पैघ गबैया सरिया दासीन जे डोम परिवारक छैथ, जिनकर कहब छैन जे सात-दिन-सात-राति एक-सुरे जँ गबैत रहब तैयो दोहरा कऽ एक भजन नइ गाएब। गबैया नमहरक दोसर कारण ईहो अछि जे अपने-आपमे ओ पूर्ण छैथ। माने ई जे ने हुनका दोसर संग पुरनिहार गबैयाक खगता होइ छैन आ ने कोनो बजन्त्रीए-क। माने ई जे एहनो गबैया तँ छैथे जिनका नीक माईक आ आधुनिक बाजाक संग नीक बजौनिहारोक खगता होइ छैन, तैठाम सरिया दासीन अपने मुहेँ गेबो करै छैथ आ अपने हाथे खौजरियो बजबै छैथ। चेहरा-मोहरा भलेँ देखनुक नइ होनि मुदा ज्ञान ज्योतिक प्रखर गबैया तँ छैथे जे पारखी लेल आकर्षणक कारण ऐछे। तँए खाली पंथाइयेक सुननिहारटा नहि आनो-आन कला-पारखीक जुटान तँ भइये जाइए। तहूमे सरिया दासीनक संग छट्ठू दास, हिताइ दास, राम अशीष दास, रामजी दास इत्यादि अनेको गबैयाकेँ टूक भेटले छैन। सभ कियो जुटबे करता।

एक तँ ओहिना गोसाँइ साहैबक सेवकान तहूमे नमहर कार्यक्रम

ऐछे तैठाम जँ कार्यक्रम शुरू होइसँ एको घन्टा पहिने नइ पहुँचता सेहो केहेन हएत। ..यएह सोचि लोहिया पट्टीबला महात्मा श्याम सुन्दर दास एगारह बजे खा-पी कऽ गामसँ विदा भेला जे तीन बजे तक दीप पहुँच जाएब। मुदा से भेलैन नइ शुरूमे तँ एक झोंक खूब चलला जइसँ घन्टे भरिमे दू कोस टपि परसा लगिचा देलखिन। मुदा एक तँ खेलहा-पीलहा परहक चालि, दोसर जेठुआ रौद, परसा अबैत अबैत बेदम भऽ गेला। कटोरिया धोधि थुलथुल देह, थकानसँ ई बुझि पड़लैन जे जँ एको डेग आगू बढ़ब तँ खसि पड़ब। ओना, अपनोसँ तबाह दुनू चेला भऽ गेलैन। चेलाक तबाहीक कारण भेल जे दुनू गोरेक काँखमे नमहर-नमहर झोरो, जइमे कपड़ा-लत्ताक संग झालि-खौजरी इत्यादि छेलैन, तैपरसँ एक हाथे छत्ता सेहो पकड़ए पड़ल रहैन। मुदा मुँह फोरि अपन बेथा गोसाँइ साहैबकेँ कहबो केना करतैन। कहैक माने भेल अपना संग गोसाँइयो साहैबक समय लेब। एक तँ ओहिना समैयपर पहुँच पएब कि नहि, तैपर सँ आरो समय खटियाएब उचित नहि।

..संजोग नीक बनल। परसा धामक आगू पहुँच गेला। केना गोसाँइ साहैब श्याम सुन्दर दास कहितथिन जे 'थाकि गेलौं, कनी अराम करब।' तँए बोल बदलैत बजला»

"छीतन दास, भने नीक जगहपर पहुँच गेलौं। सूर्य मन्दिर छी। चलू कनी दर्शन कऽ लेब।"

एक तँ ओहिना सबहक मनकेँ रौदक थकान दबने, तैपर गोसाँइ साहैबक विचार कटलो तँ नहियेँ जा सकैए। छीतन दास बजला»

"हँ-हँ सरकार, फेर कहिया ऐ रस्ते आएब कहिया नहि, तँए जिनगीक जे काज अगुआइत भऽ जाए ओ ओते बढ़ियाँ किने।"

ओना, दोसर चेला–दुखी दास बुझि गेला जे दुनू बहन्ना कऽ रहला अछि, भरि दिन निरगुने-सगुनक विचार करैत रहै छैथ आ अखन दर्शन

करैक मन भऽ रहल छैन! तँए दुखी दासक मुँह बिजकैत रहैन। जे बात श्याम सुन्दर दास बुझि गेला। दुखी दासकेँ पछुअबैत पुछलखिन»

“की दुखी दास अहाँक की विचार अछि?”

गोसाँइ साहैबक विचार कटलो तँ नहियेँ जा सकैए तखन तँ भेल गुरुकेँ अनुकूल बना चली जइसँ अनुकूलता औत। ..मुस्की दैत दुखी दास कहलकैन»

“साहैब, अहाँक ने पहिल दिन छी। मुदा हमर तँ सासुरे परसा छी। जखन सासुरमे रहै छी तँ भोरे सुति उठि नहा कऽ पहिने एक लोटा जल सूर्ज भगवानकेँ चढ़बै छिऐन, तेकर पछाइते चाहो-पान करै छी आ दुनियोँ-दारीक गप-सप्प।”

सभ गप करिते तीनू गोरे मन्दिरक आगूक आँगनमे पहुँच अपन-अपन झोरा-झपटा रखि अराम करए लगला।

ओना, तीनू मुरतेकेँ निन सेहो दाबए लगलैन मुदा चारि बजेसँ पहिने दीप पहुँचैले कछमछी सेहो मनकेँ रेबारिते रहैन। पनरह-बीस मिनट अराम केलाक पछाइत श्याम सुन्दर दास बजला»

“छीतन दास! अराम केने समैपर नइ पहुँचब, आगू बढ़ू।”

छीतन दास बिना किछु बजने उठि कऽ झोरा काँखमे लटकौलक। तीनू गोरे परसा धामसँ टहटहौआ रौदमे छाता तानि विदा भेला।

परसा धामसँ दू कोस आगू हरिपुर। हरिपुर अबैत-अबैत तीनू मुरते फेर बेदम भऽ गेला। तीनूक मन लुस-फूसाए लगलैन जे केतौ बैस कनी काल अराम करी। मुदा श्याम सुन्दर दासक नजैर जखन घड़ीपर पहुँचैन तँ मन कड़ुआ जाइन। एके घन्टा समय बँचल अछि आ कोस भरिसँ बेसी जमीन चलबो अछि। मुदा आगू बढ़ैक डेगे ने ससरैन। तैपर पियाससँ मन छटपटाइत रहैन। तहूमे गामो तेहेन अछि जे अँगने-अँगने सभ चापाकल गरौने, रस्ता कातमे एकोगो कल नहि, पानियोँ केतेए पीब। केकरो ऐठाम

जँ पानि पीबए पहुँचबो करब तँ तेते ने आगत-भागत करए लगता जे आरो बेसी समय लगत। अपन सेवकानमे भनडारा छी, गेला पछाइते कार्यक्रमक श्री गणेश हएत। ..श्याम सुन्दर दासकेँ कोनो रस्ते ने सुझैत रहैन जे की केने की नीक हएत। ततमत करैत तीनू गोरे पाखरि गाछ लग पहुँचला।

गाछक जड़िमे गुलेती डाबाक मुँहपर लोटा औन्ह कऽ रखने रहए। जहिना प्रियतमक प्रेममे प्रेमीक नजैर चकोनो होइत रहैए तहिना श्याम सुन्दर दासक नजैर पाखरि गाछक जड़िमे राखल माटिक कलशपर अँटकल रहैन। मुदा ताकमे रहैथ जे चीजबला किछु बाजत तखन ने बातक सोरि पकैड़ अपन बात राखब। से गुलेती दास किछु बजबे ने करैत। मतलबे वेचाराकेँ की रहइ। तहूमे रस्ता-पेरा चलनिहारकेँ उपकैर कऽ टोकबो नीक नहि। जँ कहीं टोकाइन लगि जानि तँ अनेरे गुम्हरता। तँए, तइसँ नीक ने जे ‘ने मारी माछ आ ने उपछी खत्ता।’

ओना, श्याम सुन्दर दासकेँ नमगर चानन देखि गुलेती बुझि गेल जे ई सभ बबाजी छिआ। किएक तँ श्याम सुन्दर दासकेँ मोछ-दाढ़ी ने झमटगर नइ छैन मुदा चानन तँ नमगर-चौड़गर छैन्हे। छीतन दास आ दुखी दास ने झोंटो बढ़ौने छैथ आ मोछो-दाढ़ी बढ़ौने छैथ, भलेँ कण्ठी गमछे तरमे किए ने झँपाएल होनि मुदा छैथ सभ बबाजीए।

समयक गतिकेँ अँकैत श्याम सुन्दर दास गुलेती दिस तकैत बजला»

“बाउ, दीप केते दूर हएत?”

ओना, श्याम सुन्दर दासकेँ बुझल रहबे करैन, किए तँ केतेको दिन अही रस्ते दीप गेल छैथ। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे लग-पासक गामक दूरी बेसी आबा-जाही भेने छोट भऽ जाइए आ बाहर-बलाक लेल माने दस-कोस-बीस-कोस चलनिहार थाकल लोक-ले बढ़ि जाइए।

गुलेती मुखिया बाजल»

“बाबा महराज, किरिण डुमैत दीपक हाट तीमन-तरकारी-ले जाइ छी आ दोसर साँझ होइत-होइत घुमि कऽ आबि जाइ छी, तेतबे दूर अछि।”

गुलेतीकेँ कोस आकि किलोमीटर बुझब कोन जरूरी छइ, अपन काजसँ मतलब छइ, तँए अपन काजक नापसँ दीपकेँ नापि बाजल। ओना, गुलेतीक इमान श्याम सुन्दर दासक मनकेँ मोहि लेलकैन। मोहि ई लेलकैन जे अखनो जँ केतौ इमान बँचल अछि तँ एहने-एहने लोकक बीच अछि। ऐठाम जँ सम्बन्ध नइ बनाएब तँ नीक सम्बन्धीसँ भेँट हएब कठिन अछि। विचारकेँ आगू बढ़बैत श्याम सुन्दर दास बजला»

“बाउ, डाबामे जल छी?”

‘जल’ सुनिते गुलेतीक अपनो मन जलजला गेलइ। जलजला ई गेलै जे भूखलकेँ एक कौर अन्न आ पियासलकेँ एक लोटा जलदान करब धरम छी। मुदा अपनो तँ धर्म अछि, जँ धर्म-धर्म अपनेमे लड़त तँ अधर्मक राज हेबे करतै। अपन धर्म बँचबैत गुलेती मुखिया बाजल»

“बाबा महराज! हम साँकठ छी। मलाह सेहो छी, सालमे चारि मास मछबाइरे करै छी। हमर घैलक जल केना पान करब?”

गुलेतीक बात सुनि श्याम सुन्दर दासक मनमे एकाएक अनेको प्रश्न उठि गेलैन। मुदा समयकेँ देखैत अपन विचारकेँ दाबए चाहैथ। मुदा जे रणक्षेत्रमे प्रश्न उठि गेल अछि ओकरा छोड़बो तँ नीक नहियेँ हएत। मुदा प्रश्नो तँ एहेन जटिल अछि माने पेरासूत जकाँ तेहेन घुरछी लागल छै जे धड़फड़मे सोझराएबो कठिन ऐछे। जँ कहबै जे ‘बौआ माछ खाएब छोड़ि दहक सेहो नइ हएत। किए तँ कैतकी गैंचीक सुआद मनमे हेबे करतै। हमर बात किन्नौं सुनत। ..जाबे केकरो अनुकूल नइ बना पएब ताबे ओ संग थोड़े आबि सकैए। मुदा ‘पियास ने मानए धोबी घाट...।’

..पियाससँ तीनू मुरतेक मन माटिपर पड़ल माछ जकाँ छटपटाइत रहैन। श्याम सुन्दर दासक मनमे ईहो उठैन जे हमर जे पूर्व महापुरुष सभ भेल छैथ ओ भूखलमे कुत्तोक मौसुकेँ अमृत मानि भक्ष वस्तु कहने छैथ...।

श्याम सुन्दर दास मने-मन विचारए लगला जे की कहलासँ गुलेती अनुकूल हएत। जाबे अनुकूल नइ हएत ताबे जे जल पियौत तँ मन अपन गवाही देबे करतै जे पाप केलौं! एक दिस 'साधु-महात्मा'क सेवा, दोसर दिस 'पाप', दुनू सिरापर ऐछे! तैबीच ईहो तँ ऐछे जे दुनियाँमे सभकेँ अपन इष्टदेव छै आ ओही इष्टदेवक आदेशानुसार अपन-अपन बुधि-विवेकसँ काज करैए। तत्काल जँ किछु आदेशो देबै आ परिस्थितिवस जँ मानियोँ लेत तँ पछाइत अपन मन कहबे करतै जे ई अनुचित भेल। माने ई जे बटोही-अभ्यागत बुझि कहबै आ तेकरा जँ ओ सेवा बुझि काइयो लेत तैयो मने-मन गुनधुन करबे करत। मुदा जाबे ओकर मनकेँ मोड़ि अपना मनोनुकूल नइ बना लेब ताबे आगूओ केना बढ़ब। ..एकाएक श्याम सुन्दर दासक मनमे भेलैन कहाँ एक लोटा 'जल' आ कहाँ जलसँ भरल अथाह समुद्र.., तैठाम जँ पछैड़ जाइ सेहो नीक नहि, तँए नीक ई हएत जे अनकर मनकेँ मोड़ैले कनी अपनो मनकेँ लियौन करी।

अपन मनकेँ लियौन करैत श्याम सुन्दर दास गुलेतीकेँ कहलखिन-

"बौआ, परिवारमे के सभ अछि?"

'परिवार' सुनि गुलेती मुखियाक मन चौंकल। चौंकल ई जे आइ तक कियो एहेन शुभचिन्तक नइ भेला जे हमरा सन गरीब लोकक परिवारक खोज-खबैर लथि। ओना गुलेती काज करैक सुर-सार करिते रहए, हाथ नइ लगौने रहए, तइ बिच्चेमे परिवारक बात उठि गेल। ..गुलेती बाजल»

"बाबा महराज, असगरे छी माइयो आ बाउओ मरि गेल।"

'असगर' सुनिते श्याम सुन्दर दासक मनमे उठि गेलैन जे एक दिस

लसगरक बीच जा रहल छी आ दोसर दिस बाटेमे असगरसँ भेँट भऽ गेल। किए ने एकरो ओही लसगरमे लसका दिऐ जे समूहमे समाज बनि सामाजिक जीवन धारण करत। तैबीच मनमे ईहो उठलैन जे लसगर जँ बोनो-झाड़ आकि धारो-समुद्रमे रहैए तँ ओकर जिनगीक अपन आनन्द छइ, मुदा असगर जँ से रहत तँ बोन-झाड़मे बाघ-सुगरक डर हेतै जे कहीं किम्हरोसँ आबि चाभि ने दिअए। तहिना धारो-समुद्रमे हेबे करतै जे कोनो मोइनमे ने डुमि जाइ...।

विचारकेँ आगू बढ़बैत श्याम सुन्दर दास बजला»

“असगरे परिवारक सभ काज सम्हारि केना लइ छी। परिवारमे काज तँ बहुत होइ छइ, उपैतसँ विपैत धरि?”

ओना, श्याम सुन्दर दासक विचार गुलेती नीक जकाँ नइ बुझलक। माने उपैत-विपैतक अर्थ नइ बुझलक। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे दू गोरेक गप-सप्पमे बिनु बुझलो प्रश्नक उत्तर लोक दइते अछि। ..गुलेतियो मुखिया सहए बाजल»

“बाबा महराज, गरीब लोकक परिवारे की! ‘आगू नाथ ने पाछू पगहा।’ तखन तँ पेट अछि ते भूख लगबे करत, तइले कमा कऽ खाइ आकि भीख माँगि कऽ आकि ठकि-फुसिया कऽ, लोक कहुना तँ जीबे करत।”

ओना, गुलेती अपना धुनिमे बाजल। मुदा श्याम सुन्दर दासकेँ जिनगीक एकटा पन्ना भेटलैन, जेकरे पकैड़ पुछि देलखिन» “कमाइ की सभ अछि?”

‘कमाइ’ सुनि गुलेती मुखियाक मनमे ठहकल। पहिने काज तखने कमाइ। काज करब तखन ने कमाइ हएत..। बाजल»

“बाबा महराज, सालो भरि बाँसक छिट्टा-पथिया बनबै छी, ओकरे बेच कऽ खाइ-पीबै छी।”

श्याम सुन्दर दास» “एकेटा काज करै छी आकि दोसरो?”

गुलेती»

“ई भेल सालतनी काज आ बीचमे एकटा दोसरो काज अछि। सालक चारि मास मछबारि सेहो करै छी।”

श्याम सुन्दर दास»

“जखन मछबारिक काज करैत हएब तखन तँ छिट्टा-पथियाक काज छुटि जाइत हएत?”

ओना, गुलेती मुखियाक मोट बुधिक मन तँए मेही बात सभ बिसैर-बिसैर जाइते अछि। मुदा अखियास करैत बाजल»

“बाबा महराज, आसिन-कातिकमे जहिना पावनिक धुमसाही रहैए तहिना काजोक भऽ जाइए। एक तँ जनमारा मास दुनू छी, केकरो मलेरिया बोखार धरैए तँ केकरो साँप-बिच्छूसँ छुबबैए, तैपर दिनो कनी छोट भइये जाइए। मुदा..?”

‘मुदा’ सुनिते श्याम सुन्दर दासक मनमे ठहकलैन। ठहैकते मुहसँ मुस्की छुटलैन। मुस्कियाइत बजला» “तखन पार केना लगैए?”

जहिना कोनो भारी माने चौड़गरो आ गहींरगरो धार टपै काल मनमे समोह उठैए तहिना गुलेतीक मनमे समोह उठल, जइसँ बोली लटपटाए लगल। बाजल»

“गरीब लोकक जिनगीक कोनो लज्जैत रहैए। ने खाइ-पीबैक ठेकान आ ने रहै-सहैक, तखन तँ कहुना मनकेँ मारि नहि रहत तँ.. ।”

ठमकैत गुलेतीकेँ देखि श्याम सुन्दर दास बिच्चेमे पुछि देलखिन»

“जखन असगरे छी तखन एते लन्द-फन्द काज किए करै छी? काजकेँ समेट जतबे खगता अछि तही हिसाबसँ करू।”

श्याम सुन्दर दासक विचार जेना गुलेती मुखियाक मनमे भरि गेल

तहिना तीर लगल चिड़ै जकाँ छटपटाइत बाजल» “से केना हएत?”

श्याम सुन्दर दास बजला»

“जँ साल भरिक रस्ता भेट जाए तँ चारि-छह मासक रस्ता छोड़ि दी।”

हँसैत गुलेती बाजल»

“से तँ नानियोँ-मुहेँ सुनने छी जे बेसी काल बजै छेली जे छह मासक रस्ता नइ चलि साल भरिक चली।”

सुढ़ियाइत गुलेतीक मनकेँ देखि मोहैन चलबैत श्याम सुन्दर दास बजला»

“जखन रूख-सुखमे बैस छिट्टा-पथियाक काज कऽ लइ छी तखन जँ पानि-झाड़क काज करै छी से नीक लगैए?”

‘पानि-झाड़’ सुनिते गुलेतीक मन पनियाइत झहरल»

“बाबा महराज, हमर बाउओ पानियेँ-मे मरल।”

‘पानिमे मरल’ सुनिते श्याम सुन्दर दासक मनमे उपकलैन-मुर्दघट्टीए ओहन जगह छी जैठाम लोक अन्तिम साँस लइए। जखन जिनगीक अन्तिम साँसक समय अबैए तखने नव साँस पौने मनमे परवेशो करैए...।

जहिना मरैत रोगीकेँ कोराइमिन दऽ किछु समय प्राणकेँ ठहरौल जाइए तहिना जिनगीक कोराइमिन दैत श्याम सुन्दर दास बजला»

“बाउ, जखन साल भरिक उपैतिक काज लगले अछि तखन दू-मसुआ आकि चरि-मसुआ काज छोड़ि देब नीक। ओना, टुकड़ी-पुरजा काज जे होइए ओ थोड़े लभगर होइते अछि मुदा ओइ लभगरक लोभमे नइ पड़ी।”

जहिना धुर-झार श्याम सुन्दर दास अपन विचारकेँ व्यक्त करैत गेला

तहिना गुलेतीक जिज्ञासा सेहो बढ़ैत गेल, जेकरा ओ ठाढ़ कानक कोन बात जे मुँह-बाबि सुनबो करए आ अखियासो करए, मुदा जड़िक मूल लग नजैर जेबे ने करइ जे श्याम सुन्दर दास की कहि रहला अछि। खएर.., एते तँ जिज्ञासा जगिए गेलै जे बाजल» “बाबा महराज, अहीं सेने हमहूँ जाएब। केतए जाइ छिऐ आ कहिया घुमबै?”

अपन मेहनतक फल देखि श्याम सुन्दर दासक मन ठाढ़ भेलैन। ठाढ़ होइते हियाबए लगला जे ‘की केने की नीक हएत’ तँए किछु बजैमे बिलम होइत रहैन। बिच्चेमे छीतन दास टीपलक»

“गुलेती भाय, करीब बीस बर्ख पहिनहि हमरो घरवाली मरि गेल, आ जेठका बेटा जे पनरह सालक रहए ओ गौंआँ सबहक संगे बिराटनगर पड़ा कऽ चलि गेल।”

बिच्चेमे गुलेती बाजल» “दोसर-तेसर धिया-पुता बीचक नइ अछि?”

गुलेती मुखियाकेँ धड़फड़ाइत देखि छीतन दास बाजल» “छह मास अल्हुआ माटि तर रहैए से धड़फड़ेबे ने करैए आ अहाँ लगले धड़फड़ा गेलौं। पहिने भेख लिअ तखन आरो भीख भेटत।”

लगले सूरमे गुलेती बाजल»

“अहाँक विचार मानि गेलौं। पहिने एक लोटा जल पीब लिअ जे थाकल-ठेहियाएल छी, बजैमे कण्ठो सर्रास हएत।”

कहि गुलेती पाखरि गाछक जड़िमे माटिक डाबा लग आबि लोटा अखारि कऽ पानि भरि श्याम सुन्दर दासक हाथमे दैत बाजल»

“गरीब लोक छी, ऐसँ बेसी ऐठाम उपाइए की अछि। जँ आइ ठहैर जैतिऐ तँ सौंझुका भनडारा चलितै।”

लोटो भरि जल पीब श्याम सुन्दर दास बजला» “अखनसँ अहाँ ‘गुलेती मुखिया’ नइ ‘गुलेती दास’ भऽ गेलौं।”

अपन बदलैत नाउक-नाँगैर सुनिते गुलेतीक मन भगवान रामक धनुषपर पहुँचल। ..पियाससँ छीतनो-दास आ दुखियो दासक कण्ठ सुखिते रहैन। तैबीच गुलेती दासकेँ देखलैन जे हाथ बागि माने पानि पियाएब छोड़ि विचार सुनैमे वौआ रहल अछि। अपनो-ले अपने मुँह नइ उठाएब तखन तँ अन-पानि बेतरे मरिए जाएब आ कियो पुछनिहारो ने हएत। बजला»

“गुलेती भाय, पहिने जल पिआउ तखन गुलेतीक फट्ठाकेँ धनुषक फट्ठा बनाएब।”

छीतन दासक व्यंग्य-वाण सुनि श्याम सुन्दर दासक मसुएलहा मन मकइ जकाँ जे खापैड़ पड़िते भरभरा जाइए तहिना बत्तिसो दाँतकेँ छिटकबैत भरभरा गेलैन। बजला»

“छीतन दास, बहुत दिनक पछाइत एहेन संगी भेटल।”

गोसाँइ साहैबक वाणीक वाण जेना छीतन दासक छातीकेँ पघिला देलकैन। मनमे एलैन- जहिना असगरूआ अपने छी, तहिना गुलेतियो दास अछि मुदा जाबे अपन बात गुलेतीकेँ कहि नइ देबै ताबे ओ ओते लग केना औत। माने ई जे जाबे अपन हृदयक दर्द कहबै नइ ताबे अनका दर्दक संग अपन छातीक दर्द घुलत-मिलत केना।

..छीतन दास बाजल»

“गुलेती भाय, पहिलुका जे पनरह बर्खक बेटा रहए जे पड़ा कऽ बिराटनगर चलि गेल ओ जीबैए कि मरैए से अखनो ने बुझै छी। तैबीच डेढ़-साल-दू-सालपर पान-सातटा धिया-पुता भेल, नीक जकाँ मनो ने अछि।”

बिच्चेमे गुलेती टोकलकैन» “अपनो धिया-पुता मन नइ अछि?”

मुस्कियाइत छीतन दास बाजल» “एकोटा जीबैत रहितए तखन

ने। कोनो तीनियेँ मासमे, तँ कोनो साल भरिपर, तँ कोनो तीन सालक भऽ भऽ कऽ मरि गेल।"

मुस्की दैत गुलेती बाजल»

"घरवाली अछि किने?"

छीतन»

"सएह ने कहै छी, अन्तिम बेर जौंआ बेटा भेल, मुदा बेटाक संग घरोवाली सोइरीए-मे मरि गेल। तेकर पछाइत हमहूँ गोसाँइये साहैबसँ भेख लऽ बेरागी बनि साधु-सेवामे लगल छी।"

धड़फड़ाइत गुलेती बाजल»

"बाबा महराज, अपन सभ अरजाल-खरजाल समेट कऽ अखने आँगनमे रखि अबै छी। अही पाखरिक गाछक निच्चाँमे अपनेसँ भेख लेब आ अपने संग सेहो जाएब।"



शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016

भोला नाथ बाबा

अन्तिम जेठ, काल्हि सौंझुका बरखा तेहेन भेल जे मौसमोमे बदलाहट आएल आ धारो सभ फुलाए लगल। ओना, दूटा बरखा पहिनौं भेल छल, ई तेसर बरखा जेठक छेलै, जइसँ जे धार आर्द्राक ओद्रसँ निकैल फुलाइ छल ओ अनुकूल मौसम पाबि अगते फुला गेल। होइते अहिना छै जे जँ समयकेँ अनुकूल बनैसँ पहिने अनुकूल वातावरण बनि गेल तँ ओइमे अनुकूलता स्वत: आबए लगै छइ, सएह भेल।

..अनुकूलता ई भेल जे पहाड़ी धार हौउ आकि तराइ इलाकाक, बर्खाक पानि पबिते फुला जाइए, सएह भेल। नेपालसँ लऽ कऽ दूर-दूर तक तराइ इलाकामे तेते बर्खा भेल जे धारक संग-संग मौसमोमे बदलाहट आबि गेल।

सालोक संजोग नीक रहल, जहिना अगहनमे धनमण्डल धान भेल तहिना चैतमे दलिहनो आ गहुमो भेल। तैसंग आमो-जामुन तेते फड़ल जे ऐ बेर कौओ-कुकुरक मन अघेबे करत। जहिना आमक फड़ी तहिना जामुनक फड़ी लगने छोट-छोट गाछक कोन बात जे बड़को-बड़को गाछक डारि सभ धरती दिस झूकि कऽ निच्चाँ-मुहेँ भऽ गेल। छोट-छोट आमक गाछमे तँ बाँसक सोंगरो लोक लगौलक मुदा नमहर गाछमे सोंगर केना लगौत, तँए ओ ओहिना रहि गेल। जामुनक गाछकेँ तँ बेसी फड़नौं, फड़ छोट भेने, सोंगरक खगते ने होइ छै जे सोंगर कियो लगौत। ओना, आमक गाछ आ जामुनक गाछक लकड़ियोमे अन्तर होइते अछि जइसँ

लकड़ीक गुणोमे अन्तर होइते अछि। जइसँ जेते भार उठबैक शक्तियो मजबुतियो जामुनक गाछकेँ होइ छै तइसँ कम शक्ति आमक गाछकेँ होइ छइ। मुदा तैसंग एकटा कुभाँजो तँ ऐछे। कुभाँज ई जे तगतगर जामुनक गाछकेँ होइतो फड़ छोट होइ छै आ आमक गाछमे नमहर फड़ होइए...।

बेरुका समय, भोला नाथ बाबा दुपहरिया सूतबसँ उठि मुँह-हाथ धोइ, पानि-चाह पीब दरबज्जाक ओसारक कुरसीपर बैस अपन पचासी बर्खक बीचक आजुक दिनपर मने-मन विचार करए लगला।

बेर झुकने सुरूजो पच्छिम-मुहेँ झूकि पछबरिया रस्ता पकैड़ नेने आ पुरबा हवा अपन रस भरल चालि पकैड़ रसे-रसे चलि रहल अछि।

पनरह गोरेक परिवार भोला नाथ बाबाक छैन, जइमे सभसँ श्रेष्ठ अपने छैथ, से दुनू मानेमे परिवारमे श्रेष्ठ छैथ। पहिल जे बाबाक सीढ़ीपर छैथ आ दोसर पचासी बर्ख बितौल जिनगियो छैन।

आइक परिवार मनमे अबिते भोला नाथ बाबाक पहिल नजैर पत्नीपर गेलैन। ओना, साले भरिक छोट पत्नी छथिन, मुदा काजमे केतौ साल भरिक छोट, तँ केतौ पचीस-पचास सालक छोट छथिन। माने ई जे किछु काज भोला नाथ बाबाक बहुत अगुआएल छैन मुदा पत्नी ओइ काजमे बहुत पछुआएल छथिन। ओना, किछु छथिन मुदा पैंसैठ-छियासैठ बर्खसँ संगी बनि संग-संग चलि तँ आबिए रहल छथिन।

पत्नीपर नजैर पड़िते भोला नाथ बाबाक मन मधुएलैन। मधुआइते मन मुस्कियेलैन। मुस्की भरैत बुदबुदेला»

“तुलसी ऐ संसारमे भाँति-भाँतिक लोक...।”

मुहसँ तँ निकैल गेलैन मुदा मने-मन जखन विचार करए लगला तखन एकटा काज मोन पड़लैन। मोन पड़िते मुहसँ फुटलैन»

“कहू जे ई केहेन भेल!”

..भेल ई रहैन जे पोता मोटर साइकिल किनलकैन। नव रहने

झलकैत रहबे करइ। मधुबनीसँ आनि दरबज्जाक आगूमे लगौलक। गाड़ीसँ उतैर दरबज्जेपर सँ दादीकेँ ई सोचि शोर पाड़लक जे गाड़ी देखि मन खुशी हेतैन, असिरवाद देती। जखने दादीक असिरवाद भेट जाएत तखने बबोक असिरवादक मिनहा भइये जाएत आ आरो जे सभ परिवारमे छैथ, माने माता-पिता, काका-काकी ओ नीक छोड़ि अधला बात बाजिए ने सकै छैथ। खुशीए-खुशी परिवारमे हएत। यएह ने भेल परिवार आकि समाजक काज जइसँ सभ एकमुहरी अनुकूल वा खुशीक नजैरसँ ओइ काजकेँ देखए।

दरबज्जाक आगूमे गाड़ी ठाढ़ कऽ 'दादी-दादी' बजैत राम किशुन आँगन आबि दादीकेँ गोड़ लागि बाजल»

"दादी, गाड़ी कीनि कऽ अनलौं हेन?"

गाड़ीक नाओं सुनिते दादीक मन खुशीसँ खुशिया लगलैन। ओसारपर सँ उठि सोझे दरबज्जापर आबि गाड़ी देखि बजली»

"ताबे निच्चेमे रहए दहक... ।"

कहि पार्वती चोट्टे आँगन घुमि सिदहा नापैबला तम्मामे धान लेलैन, हाँइ-हाँइ कऽ चारिटा दुभि सेहो नोंचि अनलैन आ पुतोहुकेँ कहलखिन»

"कनियाँ कनी पीठार पीसू।"

सासुक आदेशे पुतोहु सुखले अरबा चाउरकेँ पानि दए-दए पीठार पिसलैन।

सिनूर-पीठार आ दुभि-धान नेने पार्वती लोहाक गाड़ीकेँ बाहर पुइज घर प्रवेशक आदेश देलखिन। ओना, भोला नाथ बाबा सेहो दरबज्जापर बैसल दादीक सभ लीला देखलैन मुदा बजला किछु ने। मुदा मनमे एते उठबे करैत रहैन जे एक परिवार रहितो कियो अपना मनक धारमे भँसिया रहल अछि तँ कियो जीवनकेँ धार बुझि पार होइक ओरियान कऽ रहल अछि।

..मुदा लगले दादीक ओ रूप सोझहामे आबि गेलैन जे संग मिलि केहनो रौद रहौ कि बरखा हौउ आकि जाड़े-ठाढ़ रहौ, एते तँ गुण छैन्हे जे जाधैर काजमे जुटल रहै छी ताधैर पार्वती सेहो समयकेँ बिनु ठेकनौनौ जुटल रहै छैथ। यएह ने भेल संगीक संगपना, जे गुण पार्वतीकेँ शुरूहेमे धेलकैन से अखनो धेनहि छैन। ओना उमेरोक हिसाबे आ समैयोक हिसाबे काज बदैल गेल छैन, मुदा काज करैक जे उत्साह आ जिज्ञासा शुरूसँ धेलकैन ओ अखनो धेनहि छैन।

पत्नीपर सँ नजैर उतैर भोला नाथ बाबाकेँ अपनापर एलैन। अपनापर अबिते मन ठमकलैन। मुदा ठमकला कनीए कालक पछाइत मन घुसैक कऽ शासन आ सत्ता दिस बढ़ि गेलैन।

सत्ता दिस नजैर बढ़िते हँसी लगलैन। हँसी ई लगलैन जे जइ सत्ताक पाछू पत्र-पत्रिका, रेड़ियो, टी.भी, इन्टरनेट सभ सहयोगी अछि तैठामक आम-अवामक जे समस्या अछि आ सरकारक जे समाधान छइ, से लोक बुझिए ने रहल अछि जइसँ ओकर लाभ उठौत। मनमे अबिते भोला नाथ बाबा गुनधुन करए लगला जे एना किए भऽ रहल अछि? एक दिस देखै छी जे धिया-पुताक कलम-किताब आ स्कूलक बैग तकक माध्यमसँ प्रचार भऽ रहल अछि आ दोसर दिस सभ शून भेल बैसल अछि। मुदा लगले भोला नाथ बाबाक मन उचैट कऽ फेर अपनेपर आबि गेलैन। अपनापर अबिते बुदबुदेला»

“जानए जअ आ जानए जत्ता। जखन राज सत्तासँ कोनो मतलब नइ अछि तखन ओइ पाछू माथे धूनब फाजिल हएत। जँ एते माथ अपना-ले धूनब तँ अपनो कल्याण हएत, परिवारो-समाजक हेतइ आ देशो-दुनियाँक हेतइ। पाँच बीघा जमीन अछि, जेकर मालगुजारी सरकारकेँ दइते छिऐ, ओही जमीनक ने उपजा-बाड़ीसँ अपनो आ परिवारो ठाढ़ अछि। जँ कनियोँ नजैर सरकार आकि सत्ताक रहैत तँ ओहो ने अपन देशक सम्पैत बुझि सहयोग करितए, सेहो तँ नहियेँ अछि।

लऽ दऽ कऽ पाँच बीघा जमीनक माटि अछि, जेकरा उपजबै-ले पटौनीक संग-संग नीक बीआ, नीक खादक खगता अछि, से पुरौनिहार के अछि। जखन अपने केने होइए तखन अनकर भरोसे केते। सहजे तँ इनारेमे भाँग घोरा गेल अछि तखन तँ जीविते छी सहए बहुत भेल।"

सितम्बर 1929 ईस्वीमे भोला नाथक जन्म एकटा साधारण किसान परिवारमे भेलैन। गाममे तँ लोअरे प्राइमरी धरिक स्कूल, मुदा कोस भरि हटि दोसर गाममे मिड्ल स्कूल रहइ। गौरी नाथक बहुत इच्छा रहैन जे बेटाकेँ पढ़ा-लिखा एक सुशिक्षित नागरिक बनाबी मुदा अंग्रेजी शासन रहने विचारमे बाधा रहबे करैन। पाँच बर्खक पछाइत भोला नाथकेँ पिता स्कूलमे नाओं लिखा देलखिन। साले-साल आगू बढ़ैत भोला नाथ सतमामे पहुँचल।

1942 ईस्वी। अंग्रेजी शासनक खिलाफ गामे-गाम आन्दोलन पसैर गेल। जइ स्कूलमे भोला नाथ पढ़ै छला, ओइ स्कूलमे पाँचटा शिक्षक, जइमे चारि गोरे तँ अपनाकेँ शिक्षक बुझि आन्दोलनसँ हटल रहला मुदा पाँचम– देवकान्त बाबू आन्दोलनमे कुदि पड़ला। जखन सौंसे देशक लोक अपन-अपन स्वतंत्रताक भागीदारी दर्ज करा रहला अछि तखन हमहूँ तँ अही गुलाम देशक एक पढ़ल-लिखल नवयुवक छी। कहिया-ले ई जुआनी राखब। ..यएह सोचि देवकान्त बाबू आजादीक आन्दोलनमे कुदल रहैथ।

दस-बारहटा स्कूलक विद्यार्थी सेहो संग देलकैन। मुदा जहिना रामकेँ बानर-भालू संग देने रहैन तहिना देवकान्तो बाबूकेँ बाल-बोध संग देलकैन। ओना, गामे-गाम आन्दोलन पसरल रहबे करइ तँए संगीक अभाव नहियेँ रहैन।

..ओही समयमे भोला नाथ दसो-बारहो विद्यार्थीक संग आजादीक आन्दोलनमे आगू बढ़ला।

जहिना कोनो तीर्थ-व्रत करैले लोक संगी भँजियबैए तहिना देवकान्त बाबू सेहो नजैर खिड़ा भँजियौलैन। गाममे गाँधीजी आन्दोलनक ऐगला बाहन रहैथ। ओना, गाँधीजीक असल नाओं रघुनन्दन रहैन जे 1921 ईस्वीमे गाँधीजीक नाओं सुनि आन्दोलनमे कुदल रहैथ।

1934 ईस्वीमे जबरदस भुमकम भेल छल, जहिना 1988 ईस्वीमे भेल तहूसँ नमहर। केतेको लोक मरल, केतेको घर-दुआर खसल, केतेको नीक खेत बाउलसँ बलुआहा खेत बनि गेल। ओही भुमकममे जे सहयोग-ले अन-पानि कपड़ा-लत्ता, गाममे भेटलैन, ओइ सहयोगकेँ तेते इमानदारीसँ रघुनन्दन बँटलैन जे गामक लोक 'गाँधीजी' कहए लगलैन। ओना, जेते भुमकम पीड़ित गाम छल, अकसरहाँ गामकेँ सहयोग भेटल, मुदा गामक जे अगुआ सभ छला ओ आधा-छिधा बँटबो केलैन आ आधा-छिधा अपनो रखि लेलैन।

ओना, जखन देवकान्त बाबू आनन्दोलनक संकल्प मनमे रोपि विद्यालय छोड़ि विदा भेला तखन चारू शिक्षक, जे आन्दोलनमे नइ बढ़ला, देवकान्त बाबूकेँ मनाही केलकैन जे नइ जाउ। मुदा किनको बात नहि सुनि देवकान्त बाबू विद्यालयसँ निकैल गेला, जिनका संग दस-बारहटा विद्यार्थी सेहो देलकैन। जइमे भोला नाथ सेहो छल।

विद्यालयसँ निकैल दसो-बारहो विद्यार्थीक संग देवकान्त बाबू एकटा आमक गाछक छाहैरमे बैस विचार करए लगला। विचारमे एलैन जे जइ बाल-बोधकेँ संग नेने जा रहल छी, ओ मनसँ जा रहल अछि आकि होहामे जा रहल अछि। तँए सबहक मनक बात बुझैले एका-एकी सभकेँ पुछलखिन। उत्साहित बाल-बोध सभ हँ-मे-हँ मिला देलकैन। हँ-मे-हँ मिलिते देवकान्त बाबूक मन कलशलैन। कलशलैन ई जे ऐ जत्थाक नेतृत्व करैक भार ऊपर आबि गेल। आब तँ अपने ने विचार करए पड़त जे केतएसँ शुरू करब? ..मन ठमकलैन, ठमैकते आन्दोलनक सीमांकन केलैन। एक दिस दिल्लीक गद्दी आ दोसर दिस गाम-गामक लोकसँ लऽ

कऽ खेत-पथार धरि दाबल अछि। तैठाम जँ गामक लोक गामसँ आन्दोलन शुरू नइ करत तखन तँ गामे छुटि जाएत। गामे-सँ-गाम जोड़ि ने जिलो-जबार आ राजो-देश बनल अछि।

देवकान्त बाबू दसो-बारहो आन्दोलनकारी सभकेँ संग नेने गाँधीजी माने रघुनन्दन ऐठाम पहुँचला। पनरह-बीस गोरेक संग गाँधीजी आन्दोलनेक विचार कऽ रहल छला। कियो रेलवेक पटरी उखाड़ैक विचार दइ छेलैन, तँ कियो पोस्ट ऑफिसमे आगि लगबैक, कियो गोरा-सिपाहीक रस्ताकेँ अवरूद्ध करैले पुल तोड़ैक विचार दइत रहैन...। मुदा जाबे कोनो एकमुहरी विचार नइ भऽ जाएत ताबे आगू केना बढ़ल जा सकैए। ..अही गुनधुनमे सभ कियो विचार करिते छला कि देवकान्त बाबू अपन जत्थाक संग पहुँचला।

बाल-बोधक जत्था देखि सभ आन्दोलनकारी खुशियो भेला आ छगुन्तोमे पड़ला। खुशी ई भेला जे जखन कोनो देशक बच्चा-बच्चा अपन देशक गरिमा बुझत तखन ओ देश आजादक कोन बात जे एक सुसम्पन्न देश सेहो बनबे करत। आ छगुन्तामे ई पड़ला जे बाल-बोध केना पैघ-सँ-पैघ यातना सहि सकैए! गाँधीजी देवकान्त बाबूकेँ पुछलखिन»

“देवकान्त बाबू, समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ अहीं सभ छी, केना आगूक कार्यक्रम बनाएब?”

गाँधीजीक प्रश्न सुनि देवकान्त बाबू ठमकला, मुदा ई जगह तँ कोनो प्रश्नक निर्णायक उत्तर दइबला नइ छी, अपन विचार रखैक छी, जे निर्णायक दौड़मे अछि। ..देवकान्त बाबूक नजैर तखन भोले नाथपर रहैन। हीगर-पुष्टगर भोला नाथ रहबे करए। ओना, छल बारहे-तेरहे बर्खक मुदा रहए कलशगर। सदिकाल कानो आ कन्हो उठौनहि रहै छल। देवकान्त बाबू बजला» “जखन अंग्रेजी शासन तोड़ए चाहै छी तखन ओकर डारि-पात सभकेँ तोड़ए पड़त। नइ तँ जहिना कोनो बर-पीपरक

गाछकेँ जड़ि काटि खसा देबइ आ ओकर डारि-पात, फूल-बीआ रहबे करतै तखन तँ ओ फेर गाछ हेबे करत।”

देवकान्त बाबूक विचारपर सभ बुजुर्ग आन्दोलनकारी विचार करए लगला। अन्तो-अन्त विचार भेल जे गाँधीजीक मुहेँ बजौल गेल» “पहिने थानाक चौकी जे चौकीदारक जिम्मामे छइ, ओकर बरदी-मुरेठा छीनि कऽ आइ जरा देब अछि।”

गाँधी जीक संग सभ कियो विदा भेला...।

गाममे दूटा चौकीदार दुनू गामेक। दुनू गोरेकेँ भाँज लगि गेल जे बरदी-मुरेठा जरबैक विचार आन्दोनकारी कऽ लेलक अछि। दुनू चौकीदार विचारलक जे अनेरे गौंआँ हाथे मारियो खाएब आ सामाजिकता सेहो टुटत, तहूमे अंग्रेजी सरकार कि अपना देशसँ रुपैआ आनि दरमाहा दइए। ओकर कि कोनो नून-हरदी खाइ छिऐ। गौंएँ ने आठअना-एक-रुपैआ चौकीदारी दइए जइसँ पनरह-पनरह रुपैआ दुनू गोरेकेँ दरमाहा भेटैए। खाली बरदी देने अछि आ लऽ दऽ कऽ चारि हाथ मुरेठाक कपड़ा देने अछि। ..किए ने अपन सामाजिकता राखब। सएह केलक। ओही मुरेठा जरबैक घटनामे देवकान्तो बाबू आ भोलो नाथ जहल गेला। पहिल बेर, देवकान्त बाबू सन 1942 ईस्वीमे तीन बर्ख धरि जहलमे रहला आ भोला नाथ छबे मासमे नवालिक दुआरे छुटि कऽ एला।

भोला नाथक जिनगी सन 1942 ईस्वीक आन्दोलनसँ शुरू भेल समाजसँ अपन अलग रूपमे अपन जिनगीक क्रिया-कलाप अपनौलैन। आन्दोलन बढ़ैत गेल, भोला नाथक जहल यात्रा सेहो बढ़ैत गेलैन। देशक सत्ता विदेशीसँ देशीक हाथमे आएल। आने जकाँ भोलो नाथ स्वतंत्र देशमे साँस लेलैन।

ओना, आजादीसँ पूर्ब आ 1942 ईस्वीक बीच भोला नाथ आरो

तीन बेर जहल गेल छला। समाजोक बीच विचारमे बदलाव आबि चुकल छल। बदलाव ई जे अखन तक समाजमे एहेन धारणा बनल छल जे जहल जाएब पाप छी आ पापीए-ले जहल अछि, माने जे पाप करैए सएह जहल जाइए।

तीन भाए-बहिनक बीच भोला नाथ। दू बहिनक बीच जेठ भोला नाथ। पिता गौरीनाथकेँ पुश्तैनी पाँच बीघा जमीन। समयानुसार जिनगी बना परिवारकेँ अखनो ओहिना जीवित रखने छैथ जहिना बाबाक अमलदारीमे रहैन।

देशक बीच आजादीक विर्ड़ो उठल, गाम-गामक नवयुवको आ समझदारो सभ आन्दोलन कऽ रहला अछि तँए कहियो भोला नाथकेँ पिता ई नइ कहलखिन जे बौआ आन्दोलन अधला छी...।

नव उमेरक भोला नाथक मनमे बैस गेल छल जे आन्दोलनेसँ आजादियो भेटत आ आजादीक पछाइते आजाद भऽ कियो अपन जिनगीकेँ आजाद बनौत। तैसंग जहलमे ईहो आन्दोलनकारी सभसँ सीख नेने छला जे अपन देश आइए नइ बहुत दिनसँ गुलामीक शिकंजामे कसल आबि रहल अछि। गुलाम देशक आम-अवामक जिनगीकेँ तोड़ैत-तोड़ैत एते तोड़ि देल जाइए जे मनुक्खक जिनगीकेँ पशुवत बना दइए। जइसँ चीन-पहचीन रहिए ने जाइ छै।

भोला नाथ जखन उन्नैसम बर्खमे पहुँचल तखन गौरीनाथ कहलखिन»

"बौआ, आब तँ हमहूँ चारिमे सीढ़ीमे पहुँचब, दुनू बेटीक बिआह भइये गेल, माता-पिताक जिनगीक अन्तिम क्रियो-कर्मसँ निवृत्त भइये गेल छी, खाली तोरे बिआह-टा पछुआएल अछि।"

पिताक विचारकेँ स्वीकार करैत भोला नाथ बाजल»

"बाबू, परिवारक जे ढर्रा बनि गेल अछि तइ अनुकूल मानि गेलौं मुदा परिवारक संग समाजोक सेवा करबे करब।"

बेटाक विचारसँ सहमत बनबैत गौरीनाथ बजला»

"जाबे जीबै छी ततबे दिन ने, मुदा पछाइत तँ अपने निमाहए पड़तह।"

ओना, अखन तक परिवारक कोनो भार भोला नाथक ऊपर नइ पड़ल छल तँए भारक-भारीपन बुझबे ने केलक आ बाजल»

"बड़ बढ़ियाँ।"

भोला नाथक बिआहो भेल।

जहलमे एते भोला नाथ बुझि गेल छल, पैघ-पैघ विचारकक विचार सुनि, जे पहिने परिवारसँ गाम, गामसँ जिला-जबार होइत राज्य-देशकेँ जानब अछि, तइले अध्ययनो आ देशाटनो जरूरी अछि। तहूमे पिता जीवित छैथ तँए अखन मौका अछि। सएह केलैन।

जहिना कोनो तीर्थ स्थानक कियो तीन-पेखैन करैत तहिना भोला नाथ सौंसे देशकेँ तीन बेर भ्रमण करैत देशक सामाजिक आर्थिक अध्ययन देखियो कऽ आ किताबो पढ़ि कऽ बहुत किछु जानि चुकल छला। दस बर्खक पछाइत माता-पिताक अन्त भेलैन। परिवारक भार भोला नाथकेँ अपना ऊपर ओइ रूपेँ आएल जे पिताक अमलदारीमे पाँच गोरेक परिवार छेलैन जे अखन छअ गोरेक भऽ गेल अछि।

देशक संग गामोक दशा पछुआएले छल। ने खेती-बाड़ीक समुचित बेवस्था आ ने पढ़ै-लिखैक स्कूल-कौलेजक सुविधा आ ने बर-बेमारीक इलाजक समुचित सुविधा। ओना, लहेरियासराय अस्पताल आ ठाम-ठाम स्कूलो-कौलेज खुजि गेल, मुदा आवश्यकतानुकूल नहि।

अपन पाँचो बीघा जोतसीम जमीनकेँ भोला नाथ एकठाम केलैन।

माने गौंआँ सभसँ अदैल-बदैल, एकटा बोरिंग गड़ा खेतक पानिक सुविधा बनौलैन। एक जोड़ बरद आ एकटा महींस सभ दिने परिवारमे रहलैन जेकरा समुन्नत बनौलैन। समुन्नत ई जे महींसक सेवासँ कम्मो सेवामे गाइक सेवा होइ छइ, परिवारमे जेते करताइत अछि तही हिसाबसँ ने परिवारक काज ठाढ़ हएत। ..काज करैबलाक हिसाबसँ अपन काजक रूप-रेखा बना भोला नाथ काजकेँ बदलबो केलैन आ निरमेबो केलैन।

समैयक संग अपन जिनगीकेँ ताल-मेल बैसबैत परिवारक गाड़ीकेँ भोला नाथ खिंचए लगला। खेती-पथारी आकि कोनो आमदनीक जड़ि समैयक अनुकूल घटौलो-बढ़ौलो जा सकैए। मुदा मनुक्खक जनमसँ लऽ कऽ धरम-करम धरिक जिनगियो तँ परिवारेमे सृजित होइए। तइमे भोला नाथ बाबा स्वतंत्र देशक, स्वतंत्र जिनगीक संग जीविए रहला अछि।



शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016

दुरकाल

'दुरकाल'क अर्थ भेल ओहन काल जे जिनगीक अनुकूल नइ भेल। दोसर भेल 'काल' जे ने जिनगीक बेसी अनुकूल भेल आ ने बेसी प्रतिकूल भेल आ तेसर भेल 'सुकाल' जे जिनगीक अनुकूल भेल।

बहुत बर्खक पछाइत एहेन 'दुरकाल'सँ किसान सभकेँ भेँट भेलैन, किसाने-टा नहि मनुक्ख-मात्रेकेँ भेँट भेलैन। ओना, पनरह बर्ख पहिनौं एहेन समय भेल छल, आ तइसँ पूर्ब 1981 ईस्वीमे सेहो भेले छल। मनुक्खेक इतिहास जकाँ समैयोक इतिहास अछि, जइमे उपजा-बाड़ीसँ लऽ कऽ जिनगीक दशा तकक वृतान्त सेहो ऐछे। केते दिनपर केहेन भुमकम भेल, केहेन बरखा कहिया भेल, केहेन रौदी कहिया भेल, केहेन झाँट-बिहाड़ि कहिया आएल इत्यादि..। मुदा ई तँ समयक गति-विधि छी, हेबे करत। तहूमे बेठेकान हएत। तैबीच ईहो तँ सच ऐछे जे देशक सवा अरब लोकक पूर्वज सेहो जीवित धारमे बहैत आबिए रहला अछि। जँ से नइ जीवित अबैत रहितैथ तँ आइ हम-अहाँ केना छी? तँए दुनू संगे-संग अबितो रहल अछि आ आगूओ रहबे करब...।

दरबज्जापर बैसल शिव शंकर काका मने-मन दुनियाँक संग-संग अपन परिवारोकेँ तजबीज कैये रहल छला कि मौलाएल सरूप पहुँचल। ओना, तजबिजोक अपन-अपन ढंग अछि, कियो बैसले-बैसल दुनू आँखि मुइन तजबीज करै छैथ, तँ कियो ओछाइनपर पड़ल-पड़ल, तहिना कियो दुनू आँखि तकैत तजबीज करै छैथ, तँ कियो दुनू हाथे काज करैत आ दुनू

आँखि तकैत सेहो तँ करिते छैथ। ..शिव शंकर काका दुनू आँखि तकैत तजबीज करै छला तँए सरूप लालकेँ पहुँचते देखि लेलैन। देखिते बजला»

“सरूप, बहुत दिनक पछाइत नजैरपर चढ़लह अछि?”

शिव शंकर कक्काक आगूमे बैसल सरूप लाल बाजल»

“काका, की नजैरपर चढ़ब, जीब कठिन अछि! गाम छोड़ि पड़ाए पड़त।”

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर काका ठमैक गेला। ठकमुराइत मने-मन विचार करए लगला जे मिसियो भरि सरूप लाल झूठ नइ बाजल अछि। कहलो गेल छै जे ‘कंगनाकेँ देखैले ऐनाक खगता थोड़े पड़ै छइ।’ ओ तँ आँखिक सोझहेमे अछि। अखनो तँ ओही बीच छी। मुदा सरूप लालक बेथित मनकेँ जँ सुथित नइ बना देबै तखन तँ आरो जे छह मासमे मरत आकि गाम छोड़ि पड़ाएत, से लगले पड़ा जाएत।

अपनाकेँ समरस बनबैत शिव शंकर काका बजला» “सरूप, तोहूँ सभ दिन एके रंग रहि गेलह!”

‘सभ दिन एके रंग’ सुनि सरूप लाल चौंकल। चौंकल ई जे काका की कहि देलैन जे ‘सभ दिन एके रंग रहि गेलह!’ लोक केना सभ दिन एके रंग रहत? जखन बच्चासँ चफलगर होइत सियान बनैत अधवेसू बनैत बुढ़ भऽ कऽ मरि जाइए। तखन ओ एक रंग केना भेल रहत?

मुदा लगले सरूप लालक मन घुमलै। घुमिते ठमकलै। ठमकलै ई जे शिव शंकर कक्काक बात आकि विचार तँ कहियो हूसल नइ भेलैन अछि आ ने कहियो कोनो हूसल विचारे देलैन। तखन एहेन जँ कहलैन तँ हुनको अपन विचार हेतैन। तँए पुछि लेब नीक हएत...।

सरूप लाल बाजल» “काका, एके रंग की कहलिऐ से नीक जहाँति नइ बुझि पेलौं।”

सरूप लालक जिज्ञासा देखि शिव शंकर कक्काक मन मणियेलैन।

मणियाइते बजला»

“सरूप, जहिना तूँ धिया-पुतामे डरबुक छेलह तहिना अखनो छहे।”

सरूप लालक मनमे आरो ओझरी लगि गेल। तहूमे पेरासूत जकाँ दोहरी ओझरी भऽ गेलइ। पहिल ‘एकरंग’ दोसर ‘डरबुक’ जहिना धिया-पुतामे डरबुक छेलौं तहिना अखनो छीहे..!

अपन विचारो आ काजोक बुझैक लूरि अपने भेने जहिना बुझनिहारक मनमे खुशी उपकै छै तहिना सरूप लालकेँ उपकल। मनमे उपकल यएह भेल जिनगीक रंग। मुदा जखन एके मंत्रकेँ बेर-बेर जपल जाइए, तहू पाछू तँ किछ कारण हेबे करत, तँए किए ने कक्कैसँ दुनू शब्दक माने पुछि लिऐन। बाजल»

“की डरबुक छी काका?”

सरूप लालक प्रश्न सुनि शिव शंकर काका मुस्कियेला। ओना, कक्काक मुस्की देखि सरूप लालक मनमे शंका उठल। शंका ई उठल जे भरिसक काका कोनो डेराएल काज देखलैन तँए मुस्की मारि रहला अछि! मुदा सरूप लाल पाछू दिस नजैर खिड़ौलक तँ केतौ किछु ने देखि पड़इ। लगले मनमे होइ जे देखैयोक तँ अपन-अपन नजैर होइए। कोनो चीजपर जँ हमर नजैर नइ जा रहल अछि एकर माने ईहो तँ नहियेँ हएत जे ओ चीज ऐछे नहि। ..सरूप लाल बाजल»

“काका, कनी अपन विचारकेँ फरिछा दिअ।”

‘अपन विचार फरिछा दिअ’ सुनि शिव शंकर काका मने-मन तजबीज करए लगला जे कोन रूपेँ फरिछाएब नीक हएत, जे बात वा विचार करए चाहब ओ नीक जकाँ ओहिना हू-बहू बुझि जाएत। बुझनिहारो तँ रंग-रंगक अछि। कियो हू-बहू ओहिना बुझनिहार अछि तँ कियो बेसियो बुझनिहार अछि आ कियो जेतबो अछि तहूसँ कम बुझैबला

अछि। ..मुदा लगले मन हरिया गेलैन। हरिया ई गेलैन जे सरूप लालसँ की कोनो आइए-टा भेँट भेल अछि जे नइ चिन्है छिऐ। बेसी काल एकठाम बैस अपनो परिवारक आ गामो-समाजक गप-सप्प करिते छी...।

शिव शंकर काका बजला»

“सरूप, कोनो कि अही बेर एहेन दुरकाल समय भेल हेन जे डरे पड़ा जेबह। जिनगीमे समयसँ कहियो डर नइ करी। केहनो समय किए ने हुअए, ओकर मुकाबला करी।”

‘समयसँ मुकाबला करी’ सुनि नहाएल चिड़ै जकाँ पाँखि झाड़ि सरूप लाल बाजल»

“काका, कहलिऐ तँ बेस बात मुदा...।”

‘मुदा’ सुनि शिव शंकर काका बुझि गेला जे जहिना रस्ता चलैत बटोहीकेँ आगूमे टुटल रस्ता वा खच्चा वा काँट-कुशसँ घेरल देखि पएर अँटैक जाइ छइ, भरिसक तहिना सरूपो लालकेँ भऽ रहल छइ। मुदा चलैक ने रस्ता एकटा होइए, जिनगीक तँ से नइ अछि। अनेको रस्ते एक दिन, एक क्षण चलए पड़ै छइ। तँए कोन रस्तामे बाधा उपस्थित भेलै जे गामे छोड़ि पड़ाए चाहैए वा जिनगीए-सँ हाथ धोइक परिस्थिति बनि गेल छइ, ओ तँ जाबे खुलि-खरियारि कऽ नइ पुछि लेब ताबे नीक जकाँ उत्तर केना दऽ पेबइ। उत्तर तँ ओ ने भेल जे समस्याकेँ निच्चाँ उताइर टपि जाइ। ..शिव शंकर काका बजला»

“सरूप, दुनियाँमे एहेन कोन रोग अछि जेकर दवाइ नइ छइ, आ एहेन कोन प्रश्न अछि जेकर उत्तर नइ छइ आकि एहेन कोन समस्या अछि जेकर समाधान नइ छइ।”

...ओना, जहिना सरूप लाल लहका बंशी जकाँ अन्दाजे खेल रहल

अछि तहिना शिवशंकरो काका खेला रहला अछि, तँए प्रश्नोत्तरी भेला पछाइतो प्रश्न हेराएले छैन, मुदा तैयो दुनू गोरे मने-मन गुड़-चाउर तँ खाइए रहला अछि।

तैबीच सरूप लालक मन कलशल। होइतो अहिना छै जे पात झड़ल गाछ हुअए आकि अधसूखू गाछ हुअए–अधसूखू गाछ जीवित-सुखल केर बीच बँटाएल रहैए, तइमे जेमहरसँ जीवित रहल–वसन्तक समय पबिते कलैश जाइए तहिना वसन्ती विचारसँ सेहो मन कलैशते अछि, सएह सरूप लालकेँ भेल। मन कलैशते सरूप लालक मुँहक टुसी खिलल। खिलते खिल-खिलाइक खेल खेलए चाहलक मुदा विवेकी विचार रोकि देलकै।

ओना, शिव शंकर काका सरूप लालक मुँहक टुसीसँ बुझि गेला जे सरूपक मन पाहिपर चढ़ि गेल अछि। मुदा पाहियोपर चढ़ने तँ धड़फड़ीमे पहिया नहियेँ पाबि सकै छी, किएक तँ प्रश्नकेँ बिनु पहियेने पाहिपर चढ़ाएब बचपना हएत।

तैबीच सरूप लालक मनक टुसी टुसिया कऽ नव पातक रूप पकैड़ लेलक। मुस्की दैत बाजल»

“काका, ऐ बेर भगवान सोलहन्नी बेपाट भऽ दुरकाल बना देलैन!”

ओना, शिव शंकर काकाकेँ सेहो देखलो आ भोगलो समय छैन्हे। मुदा कालक सीमा तँ ऐछे। केकरो पेटक समस्या अछि, केकरो घरक अछि, केकरो बर-बेमारीक अछि, तँ केकरो बाल-बच्चाकेँ पढ़ै-लिखैक, तैठाम जँ फुटा कऽ नइ बुझि लेब तखन ओकर समाधानक समुचित उपाय केना हएत। ओना, तैयो शिव शंकर काका अनुभवी डॉक्टर जकाँ चेहरेसँ बेमारीकेँ अँकैत रहैथ, मुदा रोगीक बिनु हाल-चाल बुझबो अधखिजुए भेल। ओना, शिव शंकर कक्काक अपन आत्माराम गवाही दइते रहैन जे सरूप लालकेँ परिवार नमहर छइ, खेते-पथार-टा जीविका

छइ, असगरूआ समांग अछि, तैपर अभागल एहेन अछि जे अनेरे चारि गोरेक परिवार आरो बढ़ा लेलक। बढ़ा ई लेलक जे दोसर बिआह सेहो कऽ लेलक। ..फेर लगले मनमे एलैन जे जे कियो बेल खाइए अपना अँतड़ी भरोसे आकि अनका भरोसे, कियो ताड़क गाछ आकि नारिकेलक गाछ रोपैए अपना हाथ-पैरक भरोसे आकि अनका भरोसे। ..शिव शंकर कक्काक मन ठमैक गेलैन। आगू बजैक हिम्मते ने होइन। मुदा जइ समस्याक जिज्ञासासँ गप-सप्प शुरू भेल ओ तँ आगूमे ऐबे ने करत। तखन मुहोँ चुप राखब नीक थोड़े हएत। ..आगू-पाछूक विचार करैत शिव शंकर काका बजला-

"दुनियाँ बड़ भारी अछि। खोजनिहार सभ अपना-अपना ताले खोजि रहला अछि, कियो मेघमे लोहापर उड़ि रहला अछि, तँ कियो धरतीमे सोना उपजा रहला अछि, तँ कियो खानसँ सोना खुनि रहला अछि। मुदा जहिना सभकेँ अपन-अपन जिनगीक बाट बनल छैन जे अपना-अपना बाटे कियो दौगियो कऽ तँ कियो रसो-रसो रमि रहला अछि, तहिना ने अपनो सबहक जिनगीक आगू टपान अछि जेकरा अपने टपब।"

शिव शंकर कक्काक विचार सुनि सरूप लालक मन झुझुअए लगल। झुझुअए ई लगल जे भरिसक हमर बात काका कातमे रखए चाहै छैथ, आ दुनियाँक बीच वौआबए चाहै छैथ! ..दुनियाँमे केकरा-ले के अछि, मुदा अपना-ले तँ सभ अपना-अपनी-के ऐछे। अपन समस्या जाबे काकाकेँ नहि कहबैन ताबे समधानल जवाब थोड़े भेटत। बाजल»

"काका, ई साल जहिना शुरू भेल तहिना अन्तो-अन्त भऽ रहल अछि। तैबीच केना जीब?"

ओना, सरूप लाल अखनो काते-कात प्रश्नकेँ घुमा रहल अछि, मुदा शिकारी जहिना बोनमे चारू कात रस्ते-रस्ता देखैए, किसान बाधमे देखैए

तहिना शिव शंकर काका सेहो देखि तँ रहला अछि, मुदा घिरनीबला बंशी खेलेनिहार जकाँ, तँए मनमे कोनो औगताइ रहबे ने करैन। तहूमे मन गवाही दैन जे एहेन जे बुड़िवाण अछि जे घरमे अखैन सिदहा नइ हेतइ आकि कोनो आने वौस नइ हेतइ, तेकर ओरियान छोड़ि बात बनबैए! मुदा लगले मन रोकि कहलकैन। सरूप लालेकेँ एहेन किए बुझब। एते तँ देखिते छी जे दस-एगारह गोरेक परिवार अपना बाँहु-बले चलाइए रहल अछि। सेहो जे चला रहल अछि ओ ओही बपौती खेत-पथारकेँ जोति-कोरि कऽ किने। अनका जकाँ थोड़े अछि जे मनोरंजनक रूपमे ताश खेलैत जुआक पाशा बना पान-साए-हजार जीत कऽ आनत आकि बुड़ौत। तेतबे किए, शास्त्रो-पुराण कि कोनो झूठ कहैए जे जुआ खेलब अधला छी। जँ अधला रहैत तँ कृष्णक बीचमे दुनू भैयारी कौरब-पाण्डव खेलबे करैत। जइ काजकेँ शास्त्रो-पुराण अधला नइ कहि कर्मक्षेत्र कहियौ कि कुरूक्षेत्रक लेल उचित ठहरौने छैथ, ओ अधला केना भेल जे कियो ओकरा अधला बुझि वर्जित करत?

..मनक अपने विचारमे शिव शंकर काका ओहिना ओझरा गेला जहिना केकरो अपने पाइक खगता रहनौं जोगारक पाछू रहैए आ तैबीच जँ कियो जोगारी जानि कऽ पाइक मांग करइ, आ तखन जहिना मन तबैए तहिना तरे-तर शिव शंकर काकाकेँ सेहो हुअ लगलैन, मुदा प्रश्न तँ एहेन ऐछे जे अपन जोगार भोजनक लेल पाइयक अछि आ दोसरकेँ बर-बेमारीक इलाजक लेल, ओना बरो-बेमारीक महत केतौ-केतौ भोजनसँ कम्मो अछि आ केतौ-केतौ बेसियो, मुदा लतड़ल मनक विचारकेँ समेट शिव शंकर काका सरूप लालक मनक मलिन प्रश्नकेँ, कोनो वस्तुकेँ जहिना पत्तरक चुट्टासँ पकड़ल जाइत, तहिना चुट्टी जकाँ पाते-पात टहलैबला विचारकेँ बिच्चेमे पकड़ैत बजला»

“सरूप, मनुखो बड़ अखज होइए!”

‘अखज’ सुनि सरूप लाल चौंकल। चकोना होइत बाजल» “से की

कहलिऐ काका?”

सरूप लालक पिपाशु मन देखि शिव शंकर कक्काक मन गवाही देलकैन जे सरूप लाल पाहिपर चढ़ि गेल। आब पहियबैमे देरी नइ हएत। बातकेँ लतड़बैत बजला»

“सरूप, एन-एच. सभपर देखबहक जे गाड़ीमे गाड़ीकेँ जे भिरानी होइ छइ, ओइमे निचेनसँ बैसल यात्री सभकेँ देखबहक जे यात्रामे अछि आ दुनू टाँगे तेना कऽ टुटि गेलै जे अपना बुते उठि कऽ ठाढ़ो ने भेल हेतइ, मुदा की ओकरो मन कहै छै जे यात्रा नइ पूरत आकि नइ पहुँचब?”

शिव शंकर कक्काक विचार सरूप लालक मनकेँ जेना बेधलक। होइतो अहिना छै जे अस्पतालमे आकि कोनो डॉक्टरक क्लिनीकमे एक रोगी दोसरक दुख देखि अपनाकेँ आशान्वित होइए जे जखन ईहो जीवित जिनगी पेब सकैए तखन हमहीं किए ने पेब। माने ई जे आँगुर टुटल रोगीकेँ गट्टा टुटल रोगीकेँ देखने सबुर होइ छइ, तँ गट्टा टुटल रोगीकेँ बाँहि टुटल रोगीकेँ देखने सबुर होइ छइ। कष्ट-पीड़ा भलेँ तरे-तर जेकरा जेते होइत हौउ, मुदा मुँहक चुहचुही थोड़बे बिलाइए। बिलेबो केना करत, दुनियोँ तँ पागलेक छी। सभ पागले अछि, मुर्ख मुरुखपनामे पागल अछि, ज्ञानी ज्ञानपनामे। तहिना कियो इमनपनामे पागल अछि, तँ कियो बे-इमनपनामे। कियो गुणपनामे पागल अछि तँ कियो अवगुणक बोनमे पगलाएल अछि। केकरो अमृत पीलाक पछाइत अमरताक बोध होइ छइ, तँ केकरो मृत मृत्तिकापन पीबैमे होइ छइ। ..नचैत मनमे शिव शंकर कक्काक नव विचार जगलैन। बजला»

“सरूप, तेहेन दुरकाल समय आबि गेल जे जएह दिन जीबै छी, सहए दिनकेँ लाख बरिस बुझि मनकेँ बुझबै छी।”

गरदैन लग तक भरल पानिक बरतनकेँ चुल्हिपर चढ़ा निच्चासँ आगिक ताउ देलासँ जहिना खौलैत पानि उधिया-उधिया ऊपर अबैत

तहिना सरूप लालक मनक विचार तरसँ ऊपर आबए लगल। बाजल»

“ऐ बेरक समय, माने ई साले तेहेन कुसमय भऽ गेल जे ऐगला साल पकैड़ पएब कि नहि, से मन नइ मानि रहल अछि।”

समुद्रक गहराएल पानि देखि जहिना विचार गहराइ छै तहिना सरूप लालक विचार सुनि शिव शंकर कक्काक मन गहराइते कलपलैन। कलैपते बजला»

“लोक बजैए जे एके दहारमे किदैन बहार।”

शिव शंकर कक्काक विचार सरूप लालक मनमे जेना गहराइसँ गड़ल। गड़िते बाजल»

“से की कक्का?”

सरूप लालक जिज्ञासा देखि शिव शंकर कक्काक मनमे एलैन जे सरूप लालक अशियाएल मन टुटि रहल अछि, जँ अखैन संजीवनी नइ देब तँ हो-ने-हो एके बेर छाती ने कहीं चहैक कऽ टुटि जाइ। तँए जाबे हर्ट-एटेक नइ भेल अछि तइ बीचक जे समय अछि, यएह ओकरा बँचबैक समय छी।

..जहिना मेघनादक वाणसँ लक्ष्मणकेँ भेल रहैन जे सूर्योदयसँ पहिने संजीवनी सेवन जँ नइ करौल जेतैन तँ ऐगला दिन मृत्त घोषित भइये जइतैथ। मात्र किछु घन्टाक समय बीचक अछि...।

चितवनमे विचड़ैत शिव शंकर काका बजला»

“पहिने ई कहह सरूप, जे केते दिन घरक बुतात से काज चलि सकै छह?”

शिव शंकर कक्काक विचार सुनि सरूप लालक मन जगलै। जगिते उठलै जे झूठ-फूस नइ बाजब मुदा सतो बाजब कि असान अछि। ओहो तँ कठिन ऐछे। कठिन ई जे अखन तक अपने खेत-पथारसँ आकि आने

कोनो उपायसँ उपारजन कऽ आनि पत्नीकेँ सुमझा दइ छिऐन। तखन घरमे की अछि आ की नइ अछि से अपने थोड़े बुझै छी। बुझियो तखने ने सकै छेलौं जखन पत्नी कहितैथ जे चाउर सठि गेल आकि गहुम सठि गेल, सेहो तँ नहियेँ कहली अछि। बाजल»

"काका, घरे छी तँए घरक कोठीमे की अछि आ की नइ अछि से केना कहब।"

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर काका अपना विचारकेँ आगू बढ़ैसँ रोकि दोसर दिस मोड़ि लेलैन। मोड़ैत बजला»

"सरूप, समैयक संग मनुक्खकेँ लड़ए-झगड़ए पड़ै छइ। केहनो समय आगूमे आबए, लड़िए-भिड़ कऽ ओकरा टपि सकै छी। जँ से नइ करब तँ आजुक बाधा व्योधाक शिकारी बना शिकार कए लेत। जखने व्योधाक शिकार बनब तखने जिनगी विलोप भऽ जाएत! तँए सदिकाल अपनाकेँ जिनगीक संग लड़ैत-भिड़ैत चलैत रही।"

ओना, शिव शंकर काका एके साँसमे आरो बाजए चाहै छला, मुदा मनमे भेलैन जे कनछेदन काल बाल-बोधकेँ ओतबे गुड़ खियौल जाइए जेतेक पीड़ा कनछेदनमे होइ छइ। ई तँ नइ ने जे गुड़क चेकीए आगूमे रखि देब। ..बिसमित होइत सरूप लाल बिच्चेमे टोकलकैन»

"काका, नीक जकाँ अहाँक बात नइ बुझि पेलौं। कनी फरिछा कऽ बुझा दिअ।"

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर कक्काक मन पघिल गेलैन। पघिलते मनमे उठलैन जे सरूप लाल अपन जिनगीक सूत्र नइ पकैड़ पाबि रहल अछि। किसान छी, किसानी जिनगी छइ, मुदा किसानी जिनगी धड़धड़ाइत धार जकाँ केना आगू दिस चलैत रहत, भरिसक सरूप सएह नइ बुझि रहल अछि। मुदा प्रश्नो तँ जटिल अछि। ने किसानकेँ एक रंग जमीन अछि आ ने करताइते एक रंग छइ। तैठाम सामूहिक विचार करैमे

थोड़े कठिनाह तँ ऐछे। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे परिवारो कि कोनो सबहक एके रंग अछि। खगतो तँ सभ परिवारकेँ सभ रंग छइ। तखन तँ भेल जे जेकरा जेते खेत छै आ जेते लोकक परिवार छइ, ओइ दुनूक बीच सामंजस करए। केना खेतमे सालो भरि उपज लागल रहत, जइसँ एकटा घर औत दोसर घरसँ खेत जाएत। तैसंग जे परिवारक श्रमशक्ति अछि ओ सभ दिन श्रमशील केना बनल रहत...। मुदा जहिना रोगसँ दाबल रोगीकेँ तत्काल दवाइक जरूरत होइ छै नइ कि रोगक जड़ि कारण बुझैक आकि दवाइयेक जड़ि कारण बुझैक। मुदा बिनु बुझनौं तँ स्थायी काज नहियेँ चलत। तखन तँ यएह ने नीक हएत जे दवाइक संग-संग रोगोक कारणक उपाय सुझौल जाए। ..मन खनहन भेलैन। खनहन होइते शिव शंकर काका बजला»

"सरूप, तोरा ते नइ ठेकान हेतह मुदा हमरा तँ भोगल अछि।"

बिच्चेमे सरूपलाल टोकि देलकैन»

"नइ बुझलौं, काका?"

शिव शंकर काका बुझबैत कहलखिन»

"1971 ईस्वीक बात छी। तइ समय जुआन रही, माने पचीस बर्खक अवस्था रहए। अखन तोहर उमेर केतेक छह?"

सरूप लाल»

"केते भेल हएत! पैंतीस-चालीसक लगधगमे हएब।"

शिव शंकर काका»

"जहिना ऐ बेर शुरूहे अखाढ़सँ जे सुपाने बरखा हुअ लगल जइसँ धानो दहा गेल आ केते लोकक घरो खसल, तहूसँ बेसी बरखा ओइ साल, 1971 ईस्वीमे भेल रहइ। सालो भरि लधनहि रहि गेल छल। ओही बेर बंगला देश पाकिस्तानसँ फुटि स्वतंत्र बंग-भाषी देश बनल। बड़ भारी लड़ाइ भेल रहइ। देशक ओहन हालत भऽ गेलै जे लोककेँ जीब कठिन

भऽ गेलइ। तैठामक लोक तँ एते ठाठसँ जीविते अछि। आ अपना सभकेँ कोन भारी विपैत अछि।”

शिव शंकर कक्काक विचार सरूप लालक मनक सोगकेँ जेना थबकौलक। सोग थबैकते सरूप लाल बाजल»

“काका, मनुक्ख ते मनुक्ख छी किने। ओ तँ मनुक्खे जकाँ ने जीबए चाहत।”

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर काका भभा कऽ हँसए लगला। जइसँ जे बात बाजए चाहै छला ओ पेटेमे कुदैत रहि गेलैन।

जहिना अबोध बच्चा माए-बापक हँसी देखि अपन कानब छोड़ि हँसए लगैए तहिना सरूप लालकेँ सेहो भेल। मुदा बाल-बोध बच्चासँ भिन्न चेतन बोध होइए। बाजल»

“काका, हाथी केतबो नमहर किए ने भऽ जाए मुदा मूसकेँ जे घर बनबैक लूरि छै से ओकरा हेतइ?”

सरूप लालक बात शिव शंकर काकाकेँ ओहिना बुझि पड़लैन जहिना एक तीर्थ स्थान गेनिहार यात्रीकेँ एके रस्ताक ठेकान करब जरूरी होइ छइ। तँए सरूप लालकेँ आगूक बन्द बाट देखा अपन जे पएर रोपैक जगह छै तैठामसँ रस्ता बनाएब सभसँ बेसी उपयुक्तो आ नीको हएत..। बजला»

“बौआ सरूप, अपना सभ किसान छी। खेतेक उपजावाड़ी ने जीविका छी। तँए अपन जीविका जहिना फुलाइत-फड़ैत चलत तहिना ने जिनगियो चलत।”

जहिना कोनो अनाड़ियो-धुनाड़ीकेँ, माने जे पारखी नइ अछि, जँ रस्तापर चमकैत लाल अन्हारोमे प्रकाशित मणि देखि मनमे नव शक्तिक संचार होइ छै तहिना सरूप लालकेँ सेहो भेल। बिच्चेमे बाजल»

“कक्का, कनी खरियारि कऽ बुझा दिअ।”

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर काकाकेँ जेना शिव दर्शनक बोध भेलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे एहनो-एहनो जगह-स्थान तँ ऐछे जेकरा बुझै-बुझबैले शब्दे ने अछि। तँए ओहन जगह वा स्थानकेँ बुझाएब तँ कनी कठिन ऐछे। मुदा लगले मन खनखना गेलैन। खनखनाइते उठलैन, कोनो भाषा आकि साहित्यमे कम शब्द अछि, आ कोनोमे बेसी अछि, तँए कि ओइ भाषा आकि साहित्यकेँ कमजोरो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। जँ ओ कमजोर भेल तँ ओइ भाषा-भाषी आकि साहित्य-साहित्यिकीकेँ की कम रस भेटै छैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा लगले फेर भेलैन जे अनेरे मनकेँ वौआबै छी। असल भाषा आ साहित्य तँ ओ भेल जेकरा दिअ चाहै छिऐ ओ बुझि कऽ अपनामे ढाइर लिअए...।

मन असथिर करैत शिव शंकर काका बजला-

"बौआ सरूप, अपना जेते खेत छह, ओकर हिसाब जोड़ि कऽ देखहक जे सालमे ऐसँ केते आमदनी होइए। दाही भेने केतेपर आबि कऽ अँटकै छी वा रौदी भेने केतेपर अँटकै छी। भगवानक भरोस छोड़ि दहक जे नीक समय करबे करता, सालो भरि उपजा-बाड़ी होइते रहत, गुजर-बसर चलिते रहत।"

शिव शंकर कक्काक विचार सुनि सरूप लालक मनमे उठल जे शिव शंकर काका ठीके कहि रहला अछि। मुदा हिसाबो जोड़ब तँ कठिन ऐछे...।

बाजल»

"कक्का, कनी हिसाबसँ अपन बात कहियौ।"

'हिसाब' सुनिते शिव शंकर कक्काक मनमे खुशी ई उठलैन जे जखने लोक परिवारो आ समाजोक अपन-अपन हिसाब बुझि अपना-अपना हिसाबे चलए लगत तखने ने जिनगीक हिसाब हएत। जाबे से नइ हएत ताबे तक तँ ओ बेहिसाबेक भेल, जेकर कोनो मोल नइ छइ। ..शिव

शंकर काका बजला»

“सरूप, सरकारी सेवा बहबाँइर भऽ गेल अछि, मुदा जिनगी तँ क्षण-पलमे चलैए, तँए क्षण-पलक हिसाब जखन भेटत तखने ने ओ हिसाबसँ चलि सकैए, जाबे से नइ हएत ताबे तँ जिनगी बेठेकाने बनल रहत किने।”

मुड़ी डोलबैत सरूप लाल बाजल»

“बेस कहलौं काका।”

सालक हिसाब जोड़ैत शिव शंकर काका बजला- “सरूप, चारि मास बर्खाक समय होइए। माने अखाढ़सँ आसिन तक। ओना बिचला दुनू मास माने सौन-भादो, ढेनुआर भेल, अखाढ़ चढ़ल भेल आ आसिन उतरल भेल। जँ खूब बरखा भेल तँ दाही होइए, बाढ़ि अबैए आ जँ नइ भेल तँ रौदी होइए। यएह भेल रौदी-दाही। मुदा बारह मासक सालमे आठ मास ऐसँ अलग अछि। जेकरा हाथमे आनब अछि। ओना, रौदियो-दाहीक समयकेँ हाथमे आनल जा सकैए, मुदा ओ कनी भरिगर अछि। जैठाम किसानी जिनगीए दबल अछि, तैठाम रंग-रंगक दबौठकेँ एके बेर नहियेँ हटौल जा सकैए मुदा बेरा-बेरी तँ हटौले जा सकैए।”

सरूपक मन जेना भरि गेल। बाजल»

“काका, अखन जाइ छी, काल्हि निचेनसँ आरो बुझब।”

❑

शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016

कलंक

पैंतीस साल हाइ स्कूलमे शिक्षकक नोकरी केलाक पछाइत सेवा निवृत्त भऽ जीवन लाल काका अपन गाम जगरनाथपुर आबि गेला। ओना, तीन भाँइक भैयारी छैन मुदा छोट दुनू भाँइकेँ अखन अवस्था रहने नोकरी छैन्हे। गाममे नइ रहने खेतो-पथार, कलमो-गाछी आ घरो-दुआर अनभुआर जकाँ भइये गेल छेलैन जे गौंओं बुझै छैन, तँए अपन परिवार आकि अपन सम्पैतमे कोनो बाधा बीचमे नहियेँ भेलैन।

हजार बीघा रकबाक गाम जगरनाथपुर। जइमे बारहो वर्ण बसल अछि जइसँ परोपट्टामे जगरनाथपुर सम्पन्न गाम मानल जाइते अछि, जे आनो गामबला मानिते अछि आ गौंओं अपन गामक समृद्धताक सुखो तँ भोगिते छैथ। सुख ई जे जिनगीक अधिकांश जरूरतक काज गामेमे पुरि जाइ छैन। माने ई जे दैनिक जिनगीक जरूरतक पूर्ति जँ गाममे हुअए तँ यएह ने भेल समृद्धता। ओना लोकोक जिनगी समटल ऐछे, तेकर कारण अछि जे बाहरी वातावरणक प्रवेश आन गाम जकाँ जगरनाथपुरमे नहियेँ भेल अछि।

जहिना पसारी– माने नौआ, धोबि, बड़ही इत्यादि अछि जेकर अपन-अपन बेवसाय समाजमे छइ, तहिना गामक किसानो आ बोनिहारो तँ ऐछे। बेवसायिक जाति अपन-अपन बेवसाय करिते छैथ। ओना साएसँ ऊपर किसान परिवार छैथ, मुदा सभकेँ एक-रंग जमीनो-जत्था नहियेँ छैन। पचासो बीघाबला किसान छैथ आ तीनियोँ बीघाबला छैथ।

तहिना बोनिहारोक अछि। किछु एहनो अछि जेकर घरो अनके जमीन वा सरकारी जमीनमे छै आ किछु एहनो अछि जेकरा अपन घर-घराड़ी अछि आ किछु एहनो अछि जेकरा अपन दस-पाँच कट्ठा खेतो छै आ किछु एहनो अछि जेकरा अपना खेत पथार तँ नइ छै मुदा दस-पाँच कट्ठा बर-बटाँइ सेहो करैए।

गामक जमीन सेहो एक रंगाहे अछि। एक रंगाह भेल जे ने बेसी उपरारि जमीन अछि आ ने बेसी चौरी अछि। ओना, चौरीक तँ छुतियो नइ अछि मुदा डेढ़-दू साए बीघा उपरारि अछि जइमे लोक घर-घराड़ीसँ लऽ कऽ गाछी-कलम लगौने छैथ। ..जहिना सम्पन्न गाछी-कलम अछि तहिना बँसवाड़ि सेहो ऐछे। उस्सर जमीनक छुतियो गाममे नहियेँ अछि। चालीस-बियालीसटा पोखैर सेहो अछि जे करीब साए बीघा जमीनमे अछि। पोखरिक महारपर बेसी लोकक बास छइ।

ओना गाम बरह-वर्णा छी, मुदा कोनो जाति एहेन नहि छैथ, जे जमीनेमे आकि जनसंख्येमे दोसर-तेसरसँ बेसी अगुआएल छैथ। चालीस-पचास बीघा जमीनबला पाँच गोरे छैथ जे पाँच जातिक छैथ, जहिना साए घरसँ ऊपर जातिबला चारि छैथ, जे चारि जातिमे छैथ। नोकरी-चाकरी चाहे सरकारी हौउ आकि गैरसरकारी, कम लोक करै छैथ। तहूमे ओहन लोक करै छैथ जे समंगर छैथ। सोभाविके छै जे जखन गुजर करै-जोकर अपने साधन रहत तखन लोक नोकरीए किए करत। ..ई धारणा पढ़लो-लिखल लोकमे छैन तँए ओहो सभ अपन गिरहस्तीकेँ अगुआ कियो माछ उपजबै छैथ, तँ कियो खेतीक संग गाइयो-महींस पोसै छैथ। सबहक (माने पढ़ल-लिखल) मनमे धारणा बनले छैन जे सरकारी नोकरीमे ओतबे दरमाहा भेटैए जइसँ पदक हिसाबसँ माने स्तरक हिसाबसँ जिनगी बना जीब सकै छी। तहिना बोनिहारोक धारणा बनल अछि जे जखन मेहनैते केने केतौ गुजर करब आ जँ गामेमे बारहो मास काज भेटत तखन अनेरे गाम-समाज छोड़ि आन गाम-समाजमे किए

जाएब। किए गामक नाक कटेबै जे फल्लाँ गामक भिखमंगा भीख मांगए आएल अछि। की ई कहब झूठ अछि जे 'अपन घरक अदहो पेट खेनाइ आन घरक भरि पेटसँ नीक होइए।' तहूमे समाज अपन खगताक पूर्ति लेल केतेको पावनिक उपास सेहो कऽ कऽ अपन साल पुराइए लइ छैथ। ओना अपना ऐठाम किसानी जिनगी अपन समुचित रूप नइ पौने ठूठ भऽ ठूठिया जरूर गेल अछि, मुदा से जगरनाथपुरमे नइ अछि। सबहक मनक विचार एक-रंगाहे छैन जे जखन तीन साए पैंसैठो दिन माने सालो भरि मनुखो आ पशुओकेँ भोजनक संग चैनसँ रहैले घरोक जरूरत होइ छइ, तेतए तँ तीन साए पैंसैठो दिनक प्रबन्ध सेहो ने करए पड़त। तहूमे हम सभ ओइ धरतीक वासी छी जैठामक ऋृषि-मुनिक परम्परा रहल अछि जे आजुक खगताक पूर्तिसँ जँ एको मुट्ठी सिदहाक चाउर काल्हि-ले रखै छी तँ अहाँ समाजमे चोर भेलिऐ। ओना ऋृषि-मुनिक जिनगी, किसानी जिनगीसँ ऊपर अछि मुदा विचारमे इमान नइ छैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तहूमे जनक सन-सन महापुरुष जे हरबाहि करैत किसानी जिनगी धड़ैत जोगी-संयासी छला।

जगरनाथपुरक बोनिहारोक बीच धारणा एहेन बनले अछि जे- 'लूटि लाउ कुटि खाउ, भिनसर भने फेर जाउ।' ..जैठाम श्रमक संग जिनगी सटि कऽ चलि रहल अछि तैठाम श्रम-साध्यमे भेद केना उपस्थित हएत। हाथसँ जेते काज भऽ सकैए ओ तँ हाथक काज भेल, जेकरा करैले सभकेँ दू-दूटा छइहे। अही दुनू हाथक भरोसे ने बीत भरिक पेट अछि...।

गाम एला पछाइत जीवन लाल काका एक-पनरहिया अपना रहै-जोकर घर-दुआर बनबैमे लगौलैन। पनरह दिनक पछाइत रहैक घर देखि नमहर साँस छोड़ैत मने-मन विचारलैन जे आइ धरिक जे समाज छल आकि उपैतिक जिनगी छल ओ दुनू हेरा गेल। जखन जिनगीमे दुनू हेरा गेल, तरखन आगूक जिनगी-ले रहल की जे अपनाकेँ ओहन बुझब? ..आइ धरि जीवन लाल काकाकेँ एहेन विचार मनमे कहियो ने उठल छेलैन।

जहिना तीन भाँइक भैयारीमे दुनू छोट भाए अपन-अपन परिवारक संग बाहरे छैन, तहिना दुनू बेटो अपन-अपन परिवारक संग सेहो रहिते छैन। असगरे दुनू परानी गाम आबि शेष जिनगी बितबैक विचार कैये नेने छैथ। ओना जखन मास दिन समय सेवा निवृत्ति होइमे जीवन लाल काकाकेँ रहलैन तखन चाह पीबै काल पत्नीकेँ कहने रहथिन»

“ऐ बेरक अदरा पावनिक खीरो आ गुलाब खास आमो निचेनसँ गामेमे खाएब।”

ओना अखन धरिक बाहरक अभ्यस्त जिनगी तँए अनुराधाकेँ ओते मनमे नइ गड़लैन जेते गड़क चाहिऐन। मुदा गामक नाओं सुनि बेटा-पुतोहु दिस नजैर तँ गेबे केलैन। ..बजली»

“आब चारिम-पनमे दुनू परानी ऐलौं, जाबे हूबा छल ताबे ने कमाइयोक आ भोगैयोक मनसूबा छल, मुदा ऐ अवस्थामे बिनु सहाराक जीवियो तँ नहियेँ सकै छी।”

पत्नीक थरथराइत विचार सुनि जीवन लाल काका बजला»

“हमरा-ले कोनो हर्ष-विस्मय नइ अछि, दूटा बेटा अछि, जखन गरमी मास रहतै तँ राँचीबला ऐठाम रहब आ आन छह मास दोसर बेटा लग।”

ओना जीवन लाल काका लहका बंशी जकाँ पत्नीक आगू अपन विचारकेँ रखलखिन मुदा अनुराधाकेँ घिड़नीबला बंशी जकाँ विचार मनमे घुरिया लगलैन। विचार ई घुरिया लगलैन जे ‘साँइक राज अपन राज, बेटाक राज मुँह तक्की।’ तहूमे तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे कोन पुतोहु सासुकेँ सासु बुझैए। जहिना मनमे सोचै छी जे निचेनसँ बेटा-पुतोहु लग रहब तहिना तँ तेकर उल्टो भऽ सकैए। उल्टा होइक कारण अछि जे कियो वंशगत परिवारक सम्पैतिक संग बेटा-पुतोहुक बीच जिनगी बसर करै छैथ, तँ कियो घरसँ बाहर नोकरी-चाकरी करैत वा कोनो बेवसाइए

करैत, तैबीच रहब दुनू एक केना भऽ हएत? तँए किछु-ने-किछु ओकर असर तँ पड़बे करत। माने ई जे वंशगत परिवारमे वंशगत आचार-विचार आ बेवहार वंशक बाट पकैड़ चलैए जइसँ मन-मनान्तरक कोनो कारणे ने रहैए मुदा नव जगहपर सामाजिक नव परिवेश तँ रहिते अछि जइसँ जिनगीमे किछु-ने-किछु मन-मनान्तरमे भेद आबिए जाइए। मानि लिअ जे कियो अपन भारतीय साहित्यसँ एम.ए. केने छैथ, जिनका ऊपर अपन भारतक जीवन दर्शनक प्रभाव छैन, माने ई जे राम, कृष्णक संग सीता, राधा, सावित्रीक जिनगीक अनुकरण करबाक ज्ञान छैन आ कियो फ्रेंच साहित्यसँ एम.ए. केने छैथ जिनका ऊपर शारीरिक खुला जिनगीक प्रभाव छैन, तैठाम तँ ज्ञान वा डिग्रीक एक सीमा रहितो विचार आ बेवहारमे अन्तर हेबे करत।

..ओना, ई अन्तर अपन समाजक बीच परिवेश पाबि सेहो भइये रहल अछि। परिवेश ई जे कियो किसानी जिनगी धारण केने छैथ आ कियो नोकरीक, दुनूक बीच काजक माने उपार्जनक लेल साध्यक अन्तर तँ आबिए जाइत अछि, जे मनुक्खक जिनगीक गठनमे किछु-ने-किछु जीवन-गाँठ तँ बनाइए दैत अछि, जइसँ किछु-ने-किछु दूरी बनियेँ जाइत अछि। ओना, अनुराधाक मनमे एहेन विचार नइ उठल छेलैन, हुनका मनमे ई उठल छेलैन जे अखन धरि अपना हाथे-मुट्ठीक बले जीबैत एलौं, जइसँ अखन धरिक जिनगीक रूप बनल आबि रहल अछि, ओ जखने बेटा-पुतोहुक परिवारमे रहब, जे परिवार बेटा-पुतोहुक हाथे-मुट्ठीए चलि रहल अछि, तैठाम अँटावेशमे किछु-ने-किछु विघटन तँ हेबे करत, जखने विघटन हएत तखने ने ओइमे भेद औतइ। जखने भेद औतै तखने ने मन-भेद जगत। जखने मन-भेद जगतै तखने ने रक्का-टोकी हएत, जखने रक्का-टोकीक जन्म परिवारमे भेल तखने परिवारक रूपमे विश्रृंखलता एबे करत जइसँ कहा-सुनी होइत-होइत झगड़ा-झाँटी हएत जे आब जिनगी भरि लधल रहि जाएत! तेतबे नहि, जखने मनमे झगड़ा-झाँटीक रूप

बनल रहत आ देहमे केहनो चिक्कने वस्त्र वा पेटमे भोजन रहबे करत तइसँ चेन मन थोड़े रहत। आ जखने मनमे चेन नइ रहत तखने ओ निचेनीकेँ बास थोड़े हुअए देत। ..मनमे उठिते अनुराधाक मन औना गेलैन। आगूक कोनो निचेनी जिनगीक बास नहि देखि भकमोड़पर मन भकुअए लगलैन।

भकुआइत अनुराधाक मन ठमकल गाछमे जहिना कोनो मुड़ीमे कलशक नव टुसाक आगमन होइते गाछकेँ नव जिनगी भेटैक आशा जगै छै तहिना भेलैन। भेलैन ई जे दुनू परानीक उमेर साइठ-बासैठ बर्खक भेल अछि, अखन तकक जिनगीक जे अभ्यास बनल आबि रहल अछि ओकरा उमेर की करतै। शर्कसमे देखै छिऐ जे लोक हाथीकेँ उठा लइए ओहो तँ ओकरा अभ्यासेसँ ने भेल रहै छै जे जखन हाथीक बच्चा छल ओकरो महींसिक पड़ू जकाँ दुनू हाथे उठौल जाइए, तहिना ने हाथियोकेँ होइए। बच्चामे दुनूक अन्तरे की रहैए। कनी-मनी रहैए। मुदा उठौनिहार तँ ओइसँ बीस रहबे करैए। तखन जे जिनगी जीबैत आबि रहल छी ओ भारीए केना भेल जे केकरो ऐठाम जा कऽ रहब। ओह! मनमे अनेरे जिनगीक सोग पकड़ैए..! अनेरे बुझै छी जे जिनगी भारी अछि तँए केकरो सहारामे रहब जरूरी अछि। जखन बाप-पुरखाक देल घर-घराड़ीक संग वाड़ी-फुलवाड़ी सेहो ऐछे–माने गाछी-कलम, तखन जे अनेरे कोनो बेटा लगमे रहि कऽ मरब आ बिजलीसँ जरौल जाएब, जइमे ने एको मुट्ठी छाउर हएत जे गयामे पिण्ड पड़त, आ ने एक्को टुकड़ी हड्डीए बँचत जे गंगा लाभ हएत..?

अनुराधाक घुरियाइत मनमे एकटा विचार जगलैन, विचार जगलैन जे भगवान रामक संग सती सावित्री सीता केना राज-पाट छोड़ि बोने-बोन चौदह बर्ख धरि जिनगी जीलैन! जखन साठि-बासैठ बर्खक उमेर भइये गेल अछि, सत्तैर-पचहत्तैर बर्खमे सभ मरैए, हमहूँ दुनू परानी मरब, तइले मनहानि करब नीक नहि।

..अनुराधा बजली» “जहिना सभ दिन दुनू गोरे अपन मनक मन्दिर बना जिनगी जीलौं तहिना आगूओ जीब। बड़-बेसी हएत तँ एतबे ने हएत जे दरमाहा अधिया जाएत, मुदा ईहो तँ हेबे करत जे जिनगी भरि जे कमा-कमा तोरा गाड़लौं, ओहो तोरा तँ भोटबे करत। तैसंग बाप-पुरखाक ओहन सम्पैत ऐछे जइसँ केते पुरखाक जिनगी चलल छैन। तँए अनेरे किए केतौ आनठाम जा कऽ रहब, अपने गाममे रहब, आब केतौ ने जाएब।”

पत्नीक विचार सुनि जीवन लाल कक्काक मनमे सेहो अपन पैंतीस सालसँ पूर्वक स्मृति मानस पटलपर उतैर धड़-धड़ा कऽ घेर लेलकैन। घेरते मनमे माता-पिताक संग अपन विद्यालय सेहो उतैर एलैन। वएह गाम कहियौ आकि मातृभूमि जैठामक विद्यालयमे पढ़ि अपना-कैँ सक्षम शिक्षक बनि पैंतीस बर्ख धरि विद्या दान केलौं। कहब जे दरमाहा तरे ने विद्या बेचलौं। बेचलौं कहाँ! जैठाम रहलिऐ तैठामक अन-पानि खेलिऐ-पीलिऐ। ने कहियो केकरो ट्यूशन पढ़ा फीस लेलिऐ आ ने परीक्षामे नम्बर घुसका-फुसका एको पाइ लेलिऐ आ ने केकरो ऐठाम रहि खेलिऐ-पीलिऐ। अपन डेरा बना, अपने परिवार जकाँ जीबो केलिऐ आ बाल-बच्चाकेँ पढ़ेबो-लिखेबो केलिऐ...।

पत्नीक विचारकेँ शिरोधार्य करैत जीवन लाल काका बजला» “मन कि दुनू गोरेक बाँटल अछि। जएह मन अहाँक अछि, सएह ने अपनो अछि।”

सिनेह भरल पतिक विचार सुनि, जहिना बिढ़नी वा मधुमाछी अपन छत्तासँ निकैल एके सुड़कुनियाँमे ओतै जा कऽ अँटकैए जेतए ओ अपन बास-भूमि बुझि अपन चसनीक चास चलियबैए, तहिना अनुराधा जिनगीक एके सुड़कुनियाँमे पैंतालीस बर्ख पूर्बक बिऔहती मड़बापर पहुँच गेली। बजली» “मन अछि की नइ जे पहिल दिन केना चितवनक चितचोर जकाँ दुनू गोरेक चित्त मिलल रहए आ अही मुहसँ जिनगीक

संगी बनबक शपथ खेने रही।”

पत्नीक मधुआएल विचार सुनि जीवन लाल कक्काक मन ठहकलैन, ठहकलैन ई जे संगीक संगपनाक बात कहि मनमे मोहैन चलबए चाहि रहली अछि, संगपना तँ तेहेन निमाहली अछि जे मने कहैत हेतैन आ अपनो मन देखैए। कहू जे ई कोन बड़ भारी बात अछि जे ऐ चिनमय संसारक सभ चिनमय छी तखन जे सालमे पचीसो दिन उपासक बहन्ने भूखे टटौलैन से केते नीक भेल। भाय! जँ बनौनिहार अपन पेट साधि सकैए तँ खेनिहार तँ पानियोँ पीब कऽ चौबीस घन्टाकेँ के कहए जे चौबीसो दिन तक जीब सकैए। खएर.., ई तँ अपने मन ने गवाही दइए मुदा घरवाली घरबलाक बीच झगड़ा भेने अनेरे ने तेसर आबि घरकेँ लारत-चारत तँए मनेमे रखलौं। तैसंग ईहो विचार ने रहल जे अपन जन्मभूमि नइ छी, अपन जन्मभूमिमे नँगटो जिनगी लोक धारण केने रहैए (माने बच्चामे) मुदा ऐठामक जन्म तँ हमर शिक्षकक रूपमे भेल अछि, दोसर गाम छी, ऐठामक तँ जे परवासीक गरिमा अछि ओ तँ निमाहए पड़त किने। जहिना कलमक अपन गरिमा छइ, तहिना ने वाणी-विचारीक सेहो हेबा चाही। तँए आनठाम मुँहपर कनी ताला लगा कऽ लोककेँ रहए पड़ै छइ...।

जीवन लाल काका बजला» “छोड़ू बितलाहा बात। तीस बर्खक ऐगला योजना बनाउ। जे आगू तीस साल केना रहब। एते नफ्फा तँ हमरा कमाईसँ अहाँकेँ भेबे कएल अछि किने जे पढ़ि कऽ मास्टर बनलौं हम आ हमरो मास्टरनी बिनु पढ़नौं बनि गेलौं अहाँ, तँए ऐगला तीस बर्खक मास्टरी सेहो अहींकेँ करए पड़त।”

सेवा निवृत्तिक पछाइत जीवन लाल काका अपन जन्मभूमिमे अपन समाधि सेहो बनबए चाहि रहला अछि। मुदा जिनगीक बदलैत स्वरूप देखि थकथका जाइथ। थकथकी ई रहैन जे दुनियाँमे पैघ-सँ-पैघ देशो अछि, माने जनसंख्योंक हिसाबसँ आ क्षेत्रफलोक हिसाबसँ, आ

छोट-सँ-छोटो देश तँ ऐछे, जेकर अपन सभ किछु छइ, माने जीबैक साधन, रहैक नीक बास, साहित्य, भाषा, संस्कृति इत्यादि। जेकर रक्षा करत तखने ने ओ अपन अस्तित्व बनौने रहत। ऐठाम दुनियाँ दू विचारधारामे बहि रहल अछि। जेकर बीचक जे धारा छै ओ बहबाँइर भऽ गेल अछि। जेकर संख्या एक आ साएक बीच अनठानबे अछि। गामो-समाज ओही रूपमे अछि। अतीतक जे विचार पद्धति रहल ओ सर्वोत्कृष्ट ऐछे मुदा आइ जहिना दुनियाँक दूरी समटा रहल अछि, तहिना तँ वैचारिक दूरी बढ़ियो रहल अछि। जेकर फलाफल परिवार तक पहुँच गेल अछि..!

विचारक दुनियाँमे जीवन लाल कक्काक मन वौआ रहल छैन मुदा समाजक बीच कोनो गर नइ देखि रहल छैथ जे एक शिक्षित जनक सेवा गाममे की होइ। ..मन अपना दिस नचलैन। नचिते देखलैन, अपन सभ किछु तँ समाजेक बीच ने रहल, जिनगी भरि उपैत केलौं, अपनो आ परिवारोक जहाँ धरि बनि पएल केलौं, गामक तँ किछु लेबो नहियेँ केलिऐ। मुदा जइ समाजसँ तीस-पैंतीस साल पूर्ब, निकैल बाहर गेलौं, तहिया आ औझुका समाजक बीचक जे परिवेश बनि गेल अछि, तइमे प्रवेश करब, बाल-बोधक खेल थोड़े छी।

जीवन लाल कक्काक मन करखनो ठाढ़ होनि तँ करखनो झूकि जानि तँ करखनो खसि पड़ैन।

पतिकेँ विचार-मग्न देखि पड़ोसीक तीन अँगना अनुराधा टहैल ऐली। रंग-बिरंगक हवा-पानि तँ समाजमे चलिते रहैए। तइ बीचमे एकटा एहेन समाचार भेट गेलैन जे अनुराधाक मने उजगुजा गेलैन। दौड़ल आँगन आबि धियान-मग्न पतिकेँ देखि लपैट कऽ बजली»

“भकुआएले रहब कि गाम-घरक हवो-पानि बुझब?”

‘हवा-पानि’ सुनि जीवन लाल काका अकबकेला। अकबकेला ई

जे ने किछु हवामे देखै छिऐ आ ने पानिमे, तखन एहेन भाषा केतएसँ अपने गढ़ि लेली! तँए नीक हएत जे अपन प्रश्न पुछि पत्नीए-सँ उत्तर पाबी। बजला»

“अहाँ तँ देखिते छी जे हम केतौ नइ गेलौं अछि, तखन हवा-पानि केना बुझब।”

अपन मास्टरी सुतरैत देखि अनुराधा गंभीर शिक्षक जकाँ बजली»

“की कहब, अनर्थ होइए! गाम कलंकित बनैए।”

रंगमंचपर जहिना भावुक कलाकार भावना व्यक्त करैए तहिना अनुराधा अपन मनक अफसोच व्यक्त करए लगली। मुदा दर्शकसँ बेसी कलाकार जहिना अपने भावनामे वौआ अपन प्रदर्शन शुरू करए लगैए, तहिना अनुराधा समाजक कलंकक रूप देखए लगली। मुदा समाधान ओते असान अछि जे लगले बुझि जेती। किन्तु अखन शिक्षकक रूपमे ने पतिक आगू छैथ, किछु-ने-किछु तँ निर्णय करए पड़तैन। तथापि प्रश्न तँ बेकतीक वा पारिवारिक नहि, सामाजिक छी, जे समाजकेँ करब छइ। मुदा जइ समाजमे ने कोनो सार्वजनिक भूमि अछि जैठाम बैसार हएत आ ने दसगरदा कोनो काज अछि, एकर माने ई नइ जे ओहन काज नइ अछि जे लोक नइ करै छैथ, दुर्गापूजा दसगरदा सेहो होइए आ परिवारे-परिवारे सेहो होइते अछि।

..दसगरदा भूमिक माने भेल दसक जिनगीक संग चलब। मुदा छोट-सँ-छोट प्रश्न किए ने हौउ आकि पैघ-सँ-पैघ हौउ, गामो-समाज रंग-रंगक अछि, जइमे समाजक कलंकक मुद्दाक रंग-रंगक समाधान सेहो ऐछे। मुदा केहेन समाजमे केहेन मुद्दाक समाधान अछि, ओ निर्भर करैत ओइ ठामक समाजक विचारधारापर।

..परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे शराबी शराब पीब अपन माए-बहिनकेँ माए-बहिन बुझैए मुदा दोसराक माए-बहिनकेँ वेश्या बुझैए।

एहेन प्रश्नक विचार कोन रूपेँ होय..?

अपन चिन्तनधाराकेँ रोकैत जीवन लाल काका बजला»

“सोझे अलंकार सुनौने जाइ छी आ हम माने बुझबे ने करै छी, तँए कनी सोझरा कऽ बाजू जे की बात छिऐ।”

अखन धरि जे अनुराधाक मन विचारमे औनाइत गुर-घावक खिल जकाँ टहकै छेलैन से मुहसँ फुटैक चाप पाबि फुरलैन। अफसोस करैत बजली»

“अपने पड़ोसी मुनेसरा अछि ने, ओकर बेटी हाटपर सँ अबै छेलै, बाटमे गामेक एकटा छौड़ा कोनो करम बाँकी नइ रखलकै। से अहीं कहू जे एहेन होइ।”

अपन भार हटबैत अनुराधा पतिपर फेकलैन, मुदा परिवारसँ आगूक समाजक घटना छी। ओना अपन-अपन परिवारमे तँ सभकेँ किछु-ने-किछु विचार करैक अधिकार तँ छैन्हे। मनमे अबैत-अबैत जीवन लाल काकाकेँ ओहिना भेलैन जहिना कोनो सितारवादनक स्वरक मिलानी करै काल बगलक कोनो लोहार नहाइपर ठाँहि-दे घन मारैए। ..मनमे उठलैन अपन पैंतीस सालक शिक्षण जिनगीमे जइ नैतिक समाजक पाठ बच्चाकेँ पढ़ौलिऐ ओ समाजसँ केते हटल अछि? इज्जत स्वरूप जइ वृत्तिकेँ नैतिक रूपमे विचारक दुनियाँमे मानि रहल छी ओ समाजमे केते अनुकूल अछि आ केते प्रतिकूल ई तँ समाजक दायित्व बनिते अछि किने। मुदा एक सामाजिक प्राणी होइक नाते अपनो किछु-ने-किछु दायित्व तँ बनिते अछि...।

फुसलबैत पत्नीकेँ फुस-फुसा कऽ कानक जड़िमे जीवन लाल काका किदैन कहए लगलखिन जे कानमे पड़िते अनुराधाराक मुँह करवनो चिकुरि जानि तँ करवनो सिकुड़ि जाइन।

फुसलबैत-फुसलबैत जीवन लाल काका फुसला कऽ कहलखिन»

“पैंतीस सालसँ जे गाम छोड़ि कऽ चलि गेल छेलौं से पुन: पैंतीस सालक पछाइत एलौं हेन, तैबीच धारक पानियोँ केते बहि गेल हएत आ पोखैरो-इनार साले-साले भरलो हएत आ सुखाएलो हएत, तँए असथिरसँ पहिने समाजमे बैसब तखन ने पएर पसारब।”

जीवनलाल काका जइ मने बाजल होथि मुदा अनुराधाकेँ नीक लगलैन। नीक लगिते मुँह विहुसलैन।

विहुसैत पत्नीक मुँह देखि जीवन लाल काका बजला»

“हँ! सएह कहलौं।”



शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016

अड़िकट्टा चोर

बजार जाइत रही कि टोलक सटले पछबरिया बाधमे लडूलाल आ मंगलकेँ ललका-ललकी करैत देखलिऐ। ललका-ललकीसँ बुझि पड़ल जे दुनू गोरे कहीं मारि-पीट ने कऽ लिअए। मनमे भेल जे रस्ता धेने जा रहल छी सोझहामे दुनू गोरे गारि-गरौऐल कऽ रहल अछि, समाज होइक नाते अपनो किछु दायित्व बनैए। जँ कोनो छोट-छीन बात हेतइ तँ किए ने दुनू गोरेसँ बुझि शान्तिसँ बुझा झगड़ा छोड़ा दिऐ। ..फेर भेल जे गाममे सदिकाल तँ किछु-ने-किछु बाते लोक झगड़ा करिते रहैए, सएह किछु हेतइ। मुदा फेर लगले भेल जे जँ चुपे-चाप चलि जाएब तखन दुनू गोरे मने-मन कहबे करत जे फल्लाँ देखि कऽ अनठा देलक। ..साइकिल रस्तेपर ठाढ़ कऽ उतैर दुनू गोरे-लग पहुँचलौं।

हमरा देखिते मंगलक मनमे जेना हूबा बढ़ल। जोरसँ ललैक कऽ बाजल»

“अड़िकट्टा चोर कहीं-के!”

मंगलक बात सुनि एते तँ बुझिए गेलिऐ जे खेतमे लडूलालक हर बहैए, हाथमे कोदारि छइहे, आड़ि बनबैत-बनबैत कहीं आड़िए केतौ काटि नेने होइ। ओना, गामक सभ जनैत जे लडूलाल तेहेन अड़िकट्टा अछि जे सभ खेत ओकर सबूतक हिसाबे नम्हरे छइ।

दुनू गोरेक बीच बचाव करैत बजलौं» “अनेरे अहाँ सभ काज छोड़ि कोन बातमे लागल छी..!”

कोनो नमहर बात-विचार हौउ कि काज, खधियबैत छोटो बनौल जाइए, आ छोटोकेँ धकियबैत नम्हरो तँ बनौले जा सकैए। यएह सोचि बाजल छेलौं। ओना नजैर दौड़ा कऽ देखि नेने रहिऐ जे हाथ भरि चौड़गर खेतक आड़ि दुनू गोरेक बीचक अछि। जेकरा लडूलाल कोदारिक नमहर छअ भरि काटि खेतमे माटि फेक रहल छेलइ। जँ ओइ हिसाबे सौंसे आड़ि काटल जाए तँ लडूलालक आड़ि खेत बनि जाएत आ मंगलक जे बीत भरि अछि, ओतबे आड़ि रहत। खेतोक आड़ि तँ आड़ि छी। केतौ लोक खत्ता खुनि हत्ता बना खेत अड़ियबै छैथ तँ केतौ पजेबाक छहरदेबाली जोड़ि तँ केतौ हाथ भरिक तँ केतौ बीत भरि आड़ि बनबै छैथ! एकर माने ईहो नइ जे हत्ते, छहरदेवालीए आकि माटियेक आड़ि देलासँ खेत अड़ियौल जाइए। चर-चाँचरमे एकटा खरहियो गाड़ि लोक खेत अड़िऐबते छैथ।

हमरा बातक कोनो असर दुनू गोरेमे सँ किनको नइ भेल। ओहिना ललका-ललकी होइते रहल। बीचमे चुप-चाप ठाढ़ भऽ गेलौं। कोनो पनचैतीमे जँ पंचक मुँह बन्न भऽ गेल तँ वादी-प्रतिवादीक जोश बढ़िते छइ। ओना मुँह बन्न करैक कारण भेल जे जहिना लडूलालकेँ अपन दियादीक पाँच समांगक ताउ अछि तहिना मंगलोकेँ दसटा समाजक लोकक सहयोग छइहे। तँए दुनू गोरेकेँ अपन-अपन मनक गरमी छइ। मुदा समांगक ताउ हुअए आकि समाजक, ओ तँ केतौ कोनो कारणेपर भिड़ैए। तँए मूल भेल ओ समस्या। ..ऐठाम समस्या अछि जे बीत भरि जमीन मंगलोक अछि आ लडूलालोक, जइसँ दुनू गोरेक खेतक परदो अछि, बरसातमे पानियोँ अँटकैए आ चलबा-जोकर रस्तो अछि। मनुक्ख कि कोनो चरिचकिया गाड़ी छी जे बिना सड़के नइ चलत। मनुक्ख तँ मनुक्ख छी मात्र दू पएरबला। तहू पैरमे नमतीए बेसी अछि। ..आँखिक सोझमे देखि रहल छी जे जइ हिसाबसँ लडूलाल आड़ि काटि खेत बना रहल अछि तइ हिसाबे मंगलेक सोलहन्नी आड़ि बँचल रहत आ

लड़ूलालक खेत बनि जाएत।

दुनू गोरेक ललका-ललकीसँ बुझि पड़ए जे मारा-मारी, पटका-पटकी हेबे करत। अपने मनमे हुअ लगल जे अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ि गेलौं। जँ दुनू गोरे मारा-मारी करए लगत तखन बीचमे पड़ि छोड़ौल हएत। 'कुत्ता केकरो किदैन देखए कोय।' जेकर चीज नष्ट भऽ रहल अछि, जँ अपने नइ बँचौत तँ बँचतै केना। मुदा जेकरा धकिया-धकिया खाइक आदत लगि गेल छइ, ओकरो मन केना बरजल जाएत। मुदा तैयो अपन जान बँचबैत बजलौं»

"हमहूँ बजारक काजे धड़फड़ाएल छी, अखन अहूँ सभ औगता कऽ एहेन काज नइ कऽ लिअ जे होत-सँ-होताँग भऽ जाए।"

बुझि पड़ल जे जेना दुनू गोरेक मनपर विचारक किछु दाब पड़ल, मुदा जहिना वक्ता बजैले कोनो बातक तैयारी मनमे रोपने रहै छैथ आ मंचपर चाहे बेसी विचारक जेड़मे विचरलाहा हेरा जानि वा मन हटने विचारो हटि जानि वा मनक धकमकीमे ससैर कऽ निच्चाँ खसि पड़ैन जइसँ मंचपर मुँह तँ तत्काल बन्न भऽ जाइ छैन मुदा मनक लुस-फुसी तँ लुसफुसाइते रहै छैन जे मंचसँ उतैर काने-कान दोसरकेँ कहए लगै छथिन तहिना दुनू गोरेक बीच बुझि पड़ल। ..सह देखि सहैट कऽ आगू बढ़ि बजलौं»

"जहिना लडूलाल हमरा लेखे छैथ तहिना मंगल अहूँ छी, तँए हम चाहब जे एक समाजमे एकठाम घर अछि, मनुक्ख मनुक्खे लग रहत, दुनू गोरे शान्तिसँ रहू। भेल तँ एतेटा दुनियाँमे एक बीत आड़ि; तइले अनेरे सामाजिकतो आ पड़ोसीपनो समाप्त कऽ लेब तखन रहै जाएब केतए।"

ओना ई सोचि बजलौं जे जाधैर सामाजिक आ पड़ोसीपनक सम्बन्ध नइ बनल रहत ताधैर अड़िया चोरि आ पड़ोसियाक छिनरपन पकड़ाएब असान अछि। जँ घरे लग एहेन लोकक बास रहत तहन जे

गति हेबा चाही सएह ने हएत..! तइ बिच्चेमे मंगल बाजल» “भाय साहैब, सझिया आड़ि काटि लडूलाल खेत बना रहला अछि आ..?”

मंगलक बात सुनि मनमे ठहकल जे बड़ियाकेँ वाण नइ लगै छइ, गाममे कोन एहेन खेत लडूलालक छैन जे किछु-ने-किछु धकिया, सवैया-ड्योढ़ा नमहर नइ छैन। मुदा मनमे ईहो हुअए जे अपने दुनू गोरेकेँ शान्तिसँ रहैले कहै छिऐन आ जँ दोसर-तेसर बात बाजि आरो धधका दिऐ सेहो नीक नइ। ..फेर हुअए जे धधकाएबो तँ जरूरीए अछि, मंगलक आड़ि काटि लडूलाल खेतमे मिलौने जाइए, तेतबे बातसँ थोड़े अड़िकट्टा चोरि बन्न भऽ जाएत। काल्हि फेर दोसर ठाम झंझट हएत। ई तँ यज्ञमे छोड़ल घोड़ा जकाँ अछि, तँए समाजमे केतौ-ने-केतौ ओकरा रोकि जाबे पाछू मुहेँ नइ धकेलब ताबे अड़िकटिया बन्न केना हएत। जड़िमे खेतक आड़ि अछि, जखन ओ समाजक मुद्दा बनत तखन विचारमे अड़ि-कटिया शुरू हएत, जखन ओहूसँ आगू बढ़त तँ बेवहारमे हएत! तखन?..लगले मनमे उठल एक अतीतक भेल दोसर बीर्तमान अछि, आ भविस तँ भेल जे एहेन चोइर मेटा जाए। तँए नीक हएत जे एकटा समय निर्धारित कऽ घटनाकेँ बान्हि दिऐ जइसँ बीचक समय सभकेँ सोचै-विचारैक अवसर भेटने जँ विचारमे लोच अबैन तखन तँ सुगमतासँ समाधान कएल जा सकैए। बजलौं» “हमहूँ समैपर बैंक नइ जाएब तँ बैंकक काज ने हएत, जइसँ जुआनक खाली भऽ जाएब। जीतन भायकेँ तीन साए रुपैयाक काज पुराएब अछि।”

ओना मंगलक मनक मनसूबा सेहो कम नइ बुझि पड़ए, दोसर दिस लडूलालक तँ खेलहे मन छैन, तँए दुनू गोरेमे सुमा-सुमीक लक्षण देखैमे अबिते रहए। आगिक केहनो लहाश किए ने हौउ, हवा ने सह देत, मुदा पानिकेँ तँ ओकरा मिझबैक ओकाइत छइहे...।

लडूलाल बाजल» “अखन जेना आड़ि बनबै छी तेना जँ बना नै लेब तँ एकटा काजो ते पछुआएले रहत आ जँ अखन भऽ जाइए ते हर

बहिते अछि एक रंग सिरौरो पड़ि जाएत आ चौकीमे गोला फुटि चौकियाइयो जाएत।”

लडूलालक बातसँ बुझि पड़ल जे आड़ि काटैक विचार अखनो मनमे छैन्हे। बीचमे शान्ति बनबैत-बनबैत अपनो ओहने अड़िकट्टा विचारक संग भऽ जाइ, सेहो केहेन हएत..!

मंगल दिस नजैर उठा बजलौं»

“की मंगल?”

मंगल जेना हमरे विचारक प्रतिक्षा करैत रहल हुअए तहिना आकि की, बाजल»

“जखन तीनू गोरेक बीच विचार भऽ गेल जे शान्त बना रहू, जँ से नहि तँ कियो दुनियाँ-ले लड़ैए आ हम अपन खेतक आड़ियो नइ बँचा पाबी तखन की गामे गोबरबै-ले जनम नेने छी।”

अपना स्पष्ट बुझि पड़ल जे दुनू गोरेक विचार दू सिरापर छै, तखन बीचमे डाँइर देब असान तँ नहियेँ अछि। मुदा जँ साढ़े तीन हाथक मनुक्खकेँ दू हाथ ऊपर आ डेढ़ हाथ निच्चाँमे नइ डोराडोरि पहिराएब तखन गरदैनमे आकि पैरक घुट्ठीए-मे थोड़े डाँड़क डोराडोरि पहिरौल जाएत।

..मन ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे जन-जनक बोलक समूह भाषा जे जन-जनक कण्ठसँ निकैल जन-भाषाक रूपमे ठाढ़ भेल ओ केना मने-मन मनतर जपैत धन-भाषा बनि गेल! ..जाबे मन-भाषा नइ बनत ताबे विचार-भाषा केना बनि सकैए, आ जाबे विचार-भाषामे समरूपता नइ औत ताबे समाज समरस बनि समरथ केना बनत, आ जाबे समरथ नइ बनत ताबे समृद्ध समाज मनक रौतुका नीनभेर सुतलाहाक सपनाक सिबा आरो भऽ की सकैए? ..मनमे गर उठल, गर ई उठल जे जीतन भायकेँ परिवारमे चाउर सठि गेल छैन, तँए काल्हि दुपहरका सिदहाक जरूरत

छैन, जेकरासँ लेता तेकरे कहि देबै जे भाय रुपैआ आनए बैंक विदा भेलौं रस्तामे मंगल आ लडूलाल अड़िकट झगड़ा करै छला, तहूमे मंगल लडूलालकेँ मुहेँपर अड़िकट्टा चोर कहि देने छेलैन। मुँहपर चोट लगने जहिना गहुमन साँपक फुफकार होइए तहिना लडूलालक रहैन। मुदा मंगलो तँ सोझमे अपन अहित देखिते रहए। दुनियाँ जनैए जे केना दू खेतक आड़ि दुनू खेतक मध्य सीमाक बीचसँ आगू बढ़ैए, तैठाम जँ एक-अड़िया अपन सोलहन्नी आड़ि काटि खेत बना लेता तँ तत्काल एते तँ भइये जाइए जे आड़ि भरि खेत ससैर आगू बढ़ि गेल। अहिना ने छबे-छबे खेत आ करे-करे पेटो बढ़ैए। तँए, जँ ओकरा सीमामे बान्हि नहि राखल जाएत तँ ओ बन्हाएल केना रहत। समाजमे विचारक अनुकूल जाबे बेवस्थित ढंगसँ आ वैचारिक आड़िसँ अड़िया बेवहारिक रूपमे नइ आनल जाएत ताबे बेवस्थित समाजक महल केना ठाढ़ हएत? ..साँप छुछुनैरक पइर मनमे उठि गेल। साँप जहिना छुछुनैर मुहसँ पकैड़ लइए आ तखन जे गति ओकर होइ छै, सहए हुअ लगल। कोनो घटनाकेँ या तँ समयमे बान्हि बीचक समय उपयोगमे लऽ आबी, या विचारक रस्तासँ विचारि बिचड़न करी, जँ से नइ भऽ अपन हक-हिस्सा-ले समाजमे टकराव हुअए, तैठामसँ अपनाकेँ कोनो बहन्ने कटि निकैल जाइ ओहो तँ समाजमे बाधके भेल। तँए मन मानैले तैयारे ने हुअए जे दुनू गोरेकेँ झगड़ैत छोड़ि चलि जाइ। मुदा महाभारत जकाँ सुइयाक-नोक भरि जमीनक अड़ारि अछि। तैबीच जीबछ सेहो हर ठाढ़ कऽ पेना नेनहि पहुँच गेल। पहुँचबो केना ने करैत, खेतक आड़िपर अराड़िक झगड़ा हएत आ हरबाह कहतै हम किछु देखबे ने केलौं, एहेन बिसवास तँ ओहने मनुक्खमे सम्भव अछि जे झड़-मनुक्ख अछि। ..मंगल दिस आँखि उठा बजलौं»

“भाय मंगल, जहिना हमरा लेखे तूँ छह तहिना लडूलाल भाय सेहो छैथ मुदा दुनू समाज भेलह। समाजमे हमरो किछु दायित्व अछि तँए

ऐठामसँ झगड़ा टारि जाएबो उचित नइ बुझै छी। तँए चाहब जे दुनू गोरे अपन रस्ता अपने ताकि शान्तिसँ निबटारा कऽ लएह।”

ओना लडूलालक मन सेहो खसल। खसैक कारण भेल रौदमे सक्कत आड़ि काटब, मुदा मनमे एते तँ उठिते रहै जे एक बीत खेत बढ़ने केते लाभ होइ छइ, तैठाम एक बीत जानि कऽ गमाएब अपने धनहानि ने करब। ..लडूलाल बाजल» “जखन अधहा आड़ि बनिए गेल तखन बँचलोहो जे सोझ भऽ जाएत तँ नीके हएत किने?”

ओना, मने-मन लडूलालक विचार सुनि हँसी लगए मुदा हँसियोक तँ अपन-अपन जगहक अनुकूल मोल छइ। ऐठाम तँ से किछु ने अछि, एतबे अछि जे समाजक बीच नीक विचारक रस्ता बनउ। ऐठाम जँ हँसीकेँ उड़ा देब तँ ओ सड़ैन करैत नमहर घाओ बनि विस्फोटक बनि जाएत! ..जहिना विषम परिस्थितिमे रस्ता हेरा जाइ छै तहिना होइत रहए। की करब, की नइ करब से मनमे एबे ने करए। एबो केना करैत जीबछ सहजे भिनसरसँ दुपहर तकक हर जोतैक बोइन लैये नेने अछि, बुधियो हरबाहे छइ, जँ कहीं ओही बोनि तरे लडूलालक पक्ष लऽ तैयार भऽ जाए, तहूमे हरबाही पेना हाथेमे छइ, तैपर सँ रौदमे हर जोतै छल मनो गरमाएल हेतइ। जखने लडूलालकेँ चारिटा हाथ-पैरक शक्ति औतै तखने ओहो हाथ चलाइए देत। मंगल असगर दूटा हाथ-पैरक रहि जाएत, मारि खेबे करत! ..मन तरपए लगल। तड़पैत मनमे उठल- आइ धरि अहिना ने होइत आएल अछि जे जे कियो समाजक शुभेक्षु भेला अछि, ओ शुभ रहितो अशुभ जकाँ मारि खाइत एला अछि। मुदा हम तँ तेहाला छी, शान्तिसँ समाजक उठान चाहै छी। समाजक उठानमे खुट्टाक जरूरत होइते छै; तइले तँ ठाढ़ हुअ पड़त। मुदा जहिना तेहाला समाजक निर्माणकर्ता होइ छैथ, तहिना तँ दू गोरेक झगड़ामे मारियो तँ दुनू दिसक खेबे करै छैथ। मन चमकल। चमकल ई जे किए ने जीबछेसँ पुछि लिऐ, ओ तँ सभ दिन दुनू खेतकेँ देखतो आएल अछि आ हरो जोतैत आएल

अछि, संगे ईहो परीक्षा तँ भइये जाएत जे खेत जोतैबला खेतक मर्म केते बुझि रहल अछि। ..जीबछकेँ कहलिऐ»

“जीबछ भाय, अहाँकेँ तँ सभ किछ देखल अछि, अहाँक की विचार?”

ओना जीबछ आ मंगलक बीच भीतरिया मिलान। भितरिया मिलानक कारण ई जे गामक अधिकांश लोक संकल्पित भेल छैथ जे जाबे गामसँ रोग-वियाधि नइ हटाएब ताबे गामक उठान नइ भऽ सकैए। ..जीबछ बाजल»

“हरबाहि करै छी, एकर माने ई नइ जे समाजक नीक-बेजाएकेँ कोठीक कान्हपर रखि दिऐ, समाजमे छी, जँ समाजक नीक-बेजाइक विचार समाज नइ करत, तँ समाज केहेन बनत।”

जीबछक बात सुनि जहिना हूबा भेल तहिना मंगलक मनसूबा सेहो सक्कत भेल, मुदा लडूलाल जेना हूबघटू भऽ गेला। हूबधटूक कारण भेल, ऐठाम जँ विचारमे विराम नइ देब तँ..।

तैबीच एकटा घसकटनी बाधसँ घासक बोझ माथपर नेनहि मंगल आ लडूलालक रक्का-टोकी सुनि नेने छेली। ओ गामपर जा स्त्रीगणक बीच चालि देलैन जे मंगलोकेँ आ लडूलालोकेँ आड़िपर झगड़ा होइए। ‘झगड़ा’क नाओं सुनि धियो-पूतो आ मरदो-मरदी एक्के-दुइए पहुँचए लगल...।

..लडूलाल बाजल»

“रहैक अछि समाजेमे। मनुक्ख छी तँए बिनु समाजे जीब नइ सकै छी। समाज जे कहता मानि लेब।”

बजलौं»

“अखन जे सोझमे छैथ सएह ने अखन समाजक भार वहन करता, तँए नीक हएत जे दुनू गोरे अपनेमे पहिने एक-बटू भऽ एकबट भऽ जाउ।

समाजेक अंग ने अहूँ दुनू गोरे भेलिऐ।”

लडूलाल बाजल»

“मंगलोकेँ पुछि लियौ।”

मंगल बाजल»

“जाबे खेतक आड़िपर नइ आएल छेलौं, परोछमे जे आड़ि कटि गेल, ओ तँ आब घुमि कऽ नहियेँ औत। टुटल हड्डी जकाँ जोड़ेबे करत, जे पहिलुका रूप नहियेँ पकड़त। मुदा जँ लडूलाल समाजक बीच आबए चाहै छैथ तँ हमहूँ ने समाजे भेलिऐ।”

मंगलक विचार सुनि मन फुला गेल। ओना बैंकक काज छुटिए गेल मुदा एते रच्छ रहल जे झगड़ौए जगहपर जीतनो भाय आ घौलूओ साहुसँ भेँट भेल। दुनू गोरेकेँ मुखात्रे करौने अपनो काजकेँ भेल सन बुझलौं।



शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016